सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
अप्रैल–जून, 2019

ईको पर्यटन विशेषांक

टाईगर : हमारे देश का सौंदर्य

टॉपस्लिप टाईगर रिजर्व से

सभी पाठकों को अतुल्य भारत की ओर से

अतिथि देवो भव:

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

अप्रैल–जून, 2019

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

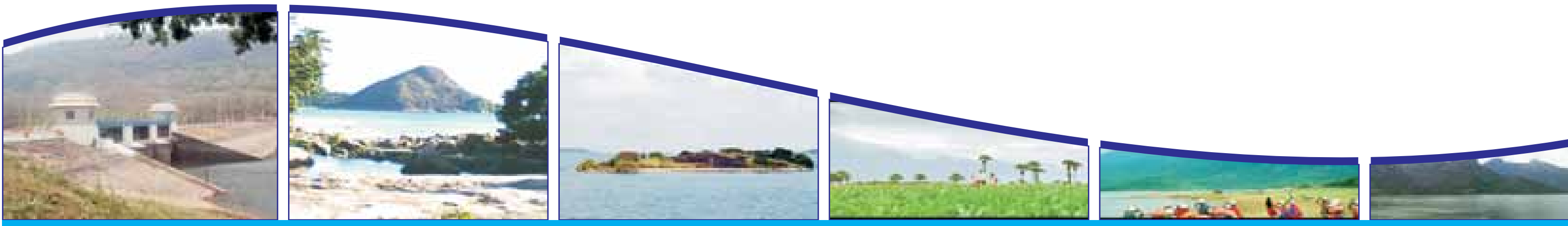

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

संरक्षक	:	**श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता	:	**श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
संपादक	:	**श्रीमती सन्तोष सिल्पोकर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
प्रबंध–संपादक	:	**श्री मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय**
अन्य सहयोगी	:	**श्री राज कुमार**

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं।
सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक,
अतुल्य भारत
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– editor.atulyabharat@gmail.com
दूरभाष 011–23015594, 23793858

डॉलफिन प्रिन्टो–ग्राफिक्स
झण्डेवालान एक्सटेंशन
नई दिल्ली से मुद्रित
011–23593541–42

पर्यटन से संबंधित सूचनाओं के प्रसार हेतु निःशुल्क वितरण

वर्ष 4 अंक 16 अप्रैल–जून, 2019

इस अंक में...

5 संपादक की कलम से...

तालों में ताल भोपाल 07

20 केशोपुर छम्बः गुरदासपुर

28 सरयू नदी की यात्रा एवं पर्यटन स्थल

मनाली से लेह तक 33

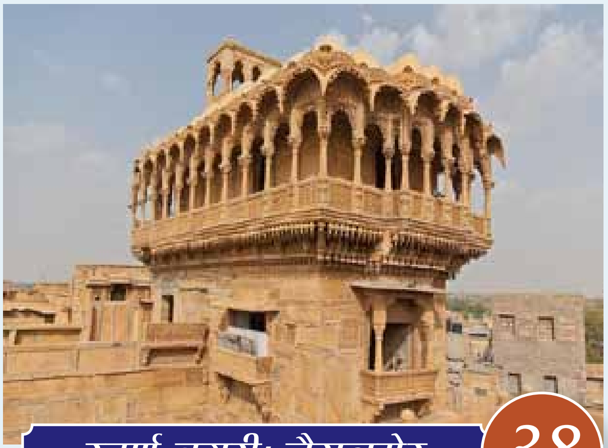

स्वर्ण नगरीः जैसलमेर 38

दुख : अन्तोन चेखव 51

कविताएं 56

सतत विकास के लिए पर्यटन उद्योग का महत्व 55

देवभूमि : पोल्लाच्चि 65

विदूषी गंगू बाई हंगल 82

गिरीश कर्नाड 88

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार 92

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक की कलम से...

'अतुल्य भारत' का 16वां अंक ईको– पर्यटन विशेषांक के रूप में आपके सामने हैं । ईको–पर्यटन को मोटे तौर पर पर्यटन का एक ऐसा रूप माना जाता है, जो पारिस्थितिक रूप से स्थायी है। हाल के वर्षों में यह देखने में आया है कि राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्यों जैसे इको पर्यटन स्थलों की ओर पर्यटकों का कुछ अधिक रुझान बढ़ रहा है। आज कल ज्यादातर लोग रेलगाड़ी या हवाई सफर कर सीधे ही किसी गंतव्य तक पहुंचते हैं। मगर बहुत कम लोग सड़क मार्ग से रास्ते के नजारों का आनंद लेते हुए अपने वाहनों से लम्बी दूरी की यात्रा करते हैं। ऐसे ही एक यात्री हैं डॉ. अमित कुमार सिंह जिन्होंने कार से मनाली से लेह तक की यात्रा की और अपने लेख "मनाली से लेह : एक अविस्मरणीय यात्रा" में अपने अनुभवों को आपके सामने प्रस्तुत किया है

मध्य प्रदेश की राजधानी के बारे में कहा जाता रहा है,"तालों में ताल भोपाल : बाकी सब तलैया"। प्रकृति के इस रूप के कारण देश में भोपाल की एक अलग पहचान है। कृष्ण वीर सिंह सिकरवार ने अपने लेख के माध्यम से भोपाल शहर की प्राकृतिक सुदंरता, संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत के पर्यटन के स्थलों के बारे में जानकारी दी है।

भारत में ताजमहल देखने आने वाले अधिकतर पर्यटक गुरू की नगरी, अमृतसर देखने जरूर आते हैं। गुरदासपुर के केशोपुर छम्ब क्षेत्र का पक्षी अभ्यारण्य के रूप में विकास कर के सरकार ने ईको– पर्यटन के संवर्धन की और अच्छी पहल की है। केशोपुर छम्ब के बारे में श्री विनोद कुमार और श्री अश्विनी कुमार ने अपने आलेख "प्रकृति की गोद मे : केशोपुर छम्ब" में जानकारी दी हैं ।

उत्तर प्रदेश में अयोध्या के निकट बहने वाली भारत की प्राचीन नदियों में से एक सरयू नदी है। सरयू के साथ साथ ईको– पर्यटन के अनेक स्थान हैं जिनके बारे में डॉ. विश्वरंजन ने जानकारी जुटाई है और अपने आलेख "सरयू नदी की यात्रा एवं पर्यटन स्थल" के माध्यम से उसे प्रस्तुत किया है ।

बात हो ईको–पर्यटन की और राजस्थान का नाम न आए, यह तो असम्भव है। राजस्थान की स्वर्ण नगरी जैसलमेर के पर्यटन स्थलों तथा मरूस्थल सफारी के बारे में पढ़ें श्री अमीर चन्द गोयल का लेख "स्वणनगरी : जेसलमेर"।

कैप्टन प्राण रंजन प्रसाद ने अपने आलेख ''सतत् विकास के लिए पर्यटन उद्योग का महत्व'' में पर्यटन की कुछ समस्याओं की ओर विस्तार से ध्यान आकर्षित किया है। तमिलनाडु अपनी परंपरा, समृद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है। हरे भरे प्राकृतिक नजारों के साथ एक समृद्ध वास्तुकला को समेटे असंख्य प्राचीन मंदिर इस प्रदेश को पर्यटन का एक दिलचस्प स्थान बनाते हैं। कोयम्बतूर जिले में पोल्लाच्चि अपने खूबसूरत नजारों के कारण फिल्म उद्योग के लिए ऐसा लोकप्रिय फिल्म शूटिंग स्थल है। जहां बहुत से पर्यटक केवल शूटिंग स्थलों को देखने के लिए ही जाते हैं। इस स्थान पर हिन्दी फिल्म 'बिल्लू' की भी शूटिंग की गई थी। श्री के. दिनाकरण ने अपने लेख 'देव भूमि : पोल्लाच्चि' के माध्यम से पोल्लाच्चि के आस पास के अद्वितीय ईको–पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी दी है।

विदुषी गंगु बाई हंगल, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में एक बड़ा नाम है । जिनके बारे में श्री मोहन सिंह ने ''आज याद इन्हें भी कर लें'' के तहत बताया है। जीवन में कभी ऐसा भी होता है कि कोई व्यक्ति अपनी बात कहना चाहता है लेकिन दूसरों के पास उसकी बात सुनने का समय नहीं होता है। इसी बात पर श्री सुशान्त सुप्रिय ने रूस के सुप्रसिद्ध लेखक चेखोव की एक मार्मिक कहानी ''दुख'' प्रस्तुत की है

इस अंक में 'अतुल्य भारत' पर श्री जॉनी फॉस्टर के गीत के साथ, सुधि पाठकों की जानकारी के लिए पर्यावरण पर, पेड़ों के प्रति स्नेह दर्शाती, पंजाब के जाने माने कवि (स्व.) श्री शिव कुमार बटालवी की एक पुरानी कविता ''रुक्ख'' भी प्रस्तुत की गई है। इनके साथ ही श्री सुशान्त लीना और डॉ. विश्वरंजन की कविताएं भी शामिल की गई हैं । इनके अलावा, इसमें पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और समाचार भी प्रस्तुत किए गए हैं ।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और ''अतुल्य भारत'' पत्रिका निश्चित रूप से अपना योगदान दे रही है। इसके माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा को दर्शाने का अवसर दिया जा रहा है। हम सभी सुधि पाठकों के सहयोग तथा गणमान्य व्यक्तियों के प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं जिनके प्रोत्साहन और विचारों से हमें हर बार एक नई उर्जा मिलती है।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहित करने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं, जिनकी ऊर्जा हम सबके लिए प्रेरणादायी है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

अंत में, मैं सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं । मुझे आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा ।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

ईको पर्यटन

भोपाल

तालों में ताल भोपाल : बाकी सब तलैया

—कृष्ण वीर सिंह सिकरवार

मध्य प्रदेश की राजधानी के बारे में एक कहावत है "तालों में ताल भोपाल का ताल बाकी सब तलैया", अर्थात कोई तालाब है तो बस भोपाल का तालाब। भोपाल शहर मध्य काल से ही पर्यटन, संस्कृति, प्राकृतिक सुदंरता और सांस्कृतिक विरासत के लिये भी अपनी पहचान बनाए हुए है।

भोपाल इतिहास के पन्नों में.....

भोपाल का अतीत काफी आकर्षक है और इस शहर को परमार वंश के राजा भोज द्वारा सन् 1000—1055 के बीच स्थापित किया गया था। आधुनिक शहर की नींव दोस्त मुहम्माद खान ने 18वीं सदी के उत्तरार्ध में रखी गई थी।

भोपाल के बारे में...

11 वीं शताब्दी में बसे इस शहर को पहले भोजपाल के नाम से जाना जाता था,जो कालांतर में भोपाल हो गया। कुछ लोग प्राचीन समय में इसका नाम भूपाल बताते हैं, अर्थात भू—पाल भू = भूमि, पाल=दूध। एक दूसरा मत यह भी है कि इस शहर का नाम एक अन्य राजा भूपाल या भोजपाल के नाम पर पड़ा। समय गुज़रने के साथ यह शहर उजड़ गया। 18वीं सदी में यह स्थानीय गोण्ड राज्य का एक बड़ा गांव मात्र था। वर्तमान भोपाल शहर की स्थापना 1708—1740 के बीच दोस्त मोहम्मद ने की थी।

इतिहासकारों के अनुसारए गिन्नौरगढ़ के गौंड राजा निजाम शाह को जहर देकर मार दिया गया था तब उनकी विधवा पत्नी कमलापति अपने बेटे को लेकर काफी समय तो गिन्नौरगढ़ में ही छुपी रही, लेकिन जब उसे वहां जान का खतरा महसूस हुआ तो वह यहां—वहां भटकते हुए दोस्त मोहम्मद से मदद मांगने पहुंची। औरंगजेब की मृत्यु के बाद जब दिल्ली में अशान्ति तथा अनिश्चितता का माहौल बन गया था और दोस्त मोहम्मद भाग कर यहां आ गया था। कमलापति ने उसे भाई कहकर संबोधित किया। रानी कमलापति के सुहृदय व्यवहार से दोस्त काफी प्रभावित हुआ। उसने गोंड रानी कमलापती को राज्य वापस दिलाने में सहायता की, जिसके बदले में रानी ने दोस्त मोहम्मद की जान बचाने का वचन दिया और सुरक्षित ठिकाने के रूप में कोलांस नदी पर एक महल बनाकर दिया था। यह महल छोटे तालाब और बड़े तालाब के बीच में आज भी मौजूद है। माना जाता है कि कमलापति जब तक जीवित रहीं दोस्त मोहम्मद को राखी बांधने जरूर आती थी। माना जाता है कि उस समय एक हिन्दू रानी से राखी बंधवाने वाला वह पहला शासक था।

मुगल साम्रज्य के विघटन का फ़ायदा उठाते हुए खान ने बेरासिया तहसील हड़प ली। रानी की मौत के बाद खान ने छोटे से गोण्ड राज्य पर कब्ज़ा कर लिया।

1720—26 के दौरान दोस्त मुहम्मद खान ने भोपाल गांव की किलाबन्दी कर इसे एक शहर का रूप दिया। साथ ही उन्होंने नवाब की पदवी लेकर

*संकाय सदस्य, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल (म0प्र0)

भोपाल राज्य की स्थापना की। सन् 1723 में हैदराबाद के निज़ाम मीर क़मर–उद्दीन (निज़ाम–उल–मुल्क) ने भोपाल पर हमला कर दोस्त मुहम्मद खान को निज़ाम के आधिपत्य में कर लिया। कुछ समय बाद ही (1737 में) भोपाल की लड़ाई में, मराठों ने उन्हें को बुरी तरह से हराया और वह भी यहां से चौथ (कुल लगान का चौथा हिस्सा) वसूलने लगे। खान के उत्तराधिकारियों ने 1818 में ब्रिटिश हुकुमत के साथ सन्धि कर ली और भोपाल राज्य ब्रिटिश राज की एक रियासत बन गया। इसके बाद इस शहर पर नवाबों का शासन रहा। हमीदुल्लाह खान भोपाल के अंतिम नवाब थे।

1947 में जब भारत को आज़ादी मिली, तब भोपाल राज्य की पहली वारिस आबिदा सुल्तान पाकिस्तान चली गईं। उनकी छोटी बहन बेगम साजिदा सुल्तान को उत्तराधिकारी घोषित किया गया और उन्होंने 1 जून,1949 को भोपाल रियासत का औपचारिक रूप से भारत संघ में विलय कर दिया था और उस समय से भोपाल देश के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

भोपाल को नवाबों का शहर भी कहा जाता है और आज भी भोपाल की वास्तुकला, संगीत, कला, संस्कृति भोजन और पाककला में मुगल और अफगानी प्रभाव देखा जा सकता है। भोपाल की जुड़वां झीलों के बारे में किवदंती है कि यहां की रानी कमल के आकार की नाव में इन झीलों में सैर किया करती थी। यह झीलें आज भी शहर का मुख्य आकर्षण हैं।

भोपाल का बड़ा तालाब

इस ताल को 11वीं सदी में राजा भोज ने बनवाया था। भोपाल की इस विशालकाय जल संरचना को अंग्रेजों ने 'अपर लेक' का नाम दिया था। लेकिन यहां के आम लोग इसे ''बड़ा तालाब'' कहते हैं। इसे एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील माना जाता है। शहर के पश्चिमी हिस्से में स्थित यह तालाब स्थानीय, देश और विदेशों के पर्यटकों को आकर्षित करने के साथ ही भोपाल के निवासियों के लिए जलापूर्ति का मुख्य स्रोत है। भोपाल की लगभग 60% आबादी को इस झील से लगभग तीस मिलियन गैलन पानी की प्रतिदिन आपूर्ति की जाती है। इस बड़े तालाब के साथ ही एक छोटा तालाब भी मौजूद है और यह दोनों जलक्षेत्र मिलकर ''भोज वेटलैण्ड'' कहलाता हैं।

बड़े तालाब के पूर्वी छोर पर भोपाल शहर बसा हुआ है, जबकि इसके दक्षिण में ''वन विहार नेशनल पार्क'' है। इस तालाब से लगने वाला अधिकतर हिस्सा

भोपाल पुरातन और नवीनता का एक सुंदर मिश्रण रहा है। पुराने शहर के बाजार, मस्जिदें और महल आज भी उस काल के शासकों के भव्य अतीत की याद दिलाते हैं। सुंदर बाग–बगीचे, लंबी चौड़ी सड़कों के साथ ही आधुनिक इमारतों के कारण आधुनिक भोपाल अब धीरे धीरे एक महानगर का रूप ले रहा है। भोपाल को देश के सबसे स्वच्छ और हरे – भरे नगरों में से एक होने का गौरव प्राप्त है। भोपाल को झीलों की नगरी भी कहा जाता है क्योंकि यहां कई छोटे–बडे ताल है वैसे तो भोपाल और इसके आसपास में पर्यटकों को आकर्षित करते अनेक दर्शनीय स्थल है, परंतु यहां स्थानाभाव के कारण कुछ प्रमुख स्थलों से ही पाठकों को अवगत कराया जा रहा है। अगले अंक में भोपाल के आसपास के शहरों के महत्वपूर्ण स्थानों के बारे में पढ़ेंगे।

ग्रामीण क्षेत्र है, लेकिन अब समय के साथ कुछ शहरी इलाके भी इसके आसपास बस चुके हैं। कोलांस नदी जो कि पहले हलाली नदी की एक सहायक नदी थी, पर बांधा बनने से कोलास नदी और बड़े तालाब का अतिरिक्त पानी अब कलियासोत नदी में चला जाता है। तालाब का कुल क्षेत्रफल 31 कि.मी. है, पर अतिक्रमण एवं सूखे के कारण यह क्षेत्र 8–9 कि.मी. में ही सिमट कर रह गया है।

बड़े तालाब में विभिन्न पर्यटन गतिविधियां संचालित होती है, जिसमें बोट क्लब तथा वाटर स्पोर्ट जैसी सुविधाएं हैं। यहां बोट क्लब पर भारत का पहला राष्ट्रीय सेलिंग क्लब भी स्थापित किया गया है। इस क्लब के सदस्य बनकर पर्यटक कायाकिंग, कैनोइंग, राफ़्टिंग, वाटर स्कीइंग और पैरासेलिंग आदि का आनंद ले सकते हैं। विभिन्न आकारों की नावों से पर्यटकों को बड़ी झील में भ्रमण करने की सुविधा प्रदान की गई है।

इस झील के दक्षिणी हिस्से में स्थापित वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भी पर्यटकों के आकर्षण का एक और केन्द्र है। चौड़ी सड़क के एक तरफ़ प्राकृतिक वातावरण में पलते जंगली पशु–पक्षी और सड़क के दूसरी तरफ़ प्राकृतिक सुन्दरता मन मोह लेती है। इन दोनों तालाबों में जैव–विविधता के कई रंग देखने को मिलते हैं। वनस्पति और विभिन्न जलजन्तुओं के जीवन और वृद्धि के लिये यह जल संरचना एक आदर्श स्थल मानी जाती है। प्रकृति आधारित वातावरण और जल के कारण यहां एक उन्नत जैव–विविधता का विकास हो चुका है। प्रतिवर्ष यहां पक्षियों की लगभग 2000 प्रजातियां देखी जा सकती हैं, जिनमें मुख्य रूप से सफेद सारस, काले गले वाले सारस, हंस आदि अब धीरे धीरे पुनः दिखाई देने लगे हैं।

बड़े तालाब का एक विहंगम दृश्य/ताजाब में चलती नावें

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व..

भोपाल शहर के निवासी सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से इन दोनों झीलों से दिल से जुड़े हैं। इन्हीं झीलों से उन्हें रोज़मर्रा की जरूरतों का पानी तो मिलता ही है, इसके अलावा इस तालाब में सिंघाड़े की खेती भी की जाती है। स्थानीय प्रशासन की रोक और मना करने के बावजूद आसपास के गांवों में रहने वाले लोग इसमें कपड़े धोते हैं, विभिन्न त्यौहारों पर देवी–देवताओं की मूर्तियां यहां विसर्जित की जाती हैं। बड़े तालाब के बीच में तकिया द्वीप है जिसमें शाह अली शाह रहमतुल्लाह का मकबरा भी बना हुआ है, जो कि अभी भी धार्मिक और पुरातात्विक महत्व रखता है।

हाल ही में विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों ने प्रदूषण से बचाने के लिये इन दोनों झीलों को गहरा कराने और इनकी सफ़ाई का काम हाथ में लिया है, जिसे सरकार का भी पूरा समर्थन और आर्थिक मदद मिली है, आखिर यही तालाब तो भोपाल की पहचान और उसकी जीवनरेखा हैं।

यह अन्तर्राष्ट्रीय रामसर सम्मेलन के घोषणापत्र में संरक्षण की संकल्पना हेतु शामिल है।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान : बड़े तालाब से लगी पहाड़ी पर यह 'नेशनल पार्क' बनाया गया है। शहर के बीचों–बीच बना यह देश का पहला 'नेशनल पार्क' है। इसमें चीता, भालू, तेंदुआ, चीतल, बारहसिंगा, नीलगाय तथा सर्पो की कई प्रजातियां देखने को

मिलती है। वन विहार सफारी पार्क पक्षियों के शौकीनों का स्वर्ग है। यहां अनेक प्रकार के पक्षी देखे जा सकते हैं। जानवरों की उचित रूप से देखभाल की जाती है। खास बात यह है कि उन्हें पिंजरों में बंद करके नहीं रखा गया है। पार्क का कुल क्षेत्रफल लगभग 4.45 कि.मी. है। इसे वर्ष 1979 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था। वन विहार समृद्ध जैव विविधता का घर है। पक्षियों की यहां लगभग 200 प्रजातियां हैं, तितली की 60 प्रजातियाँ; जानवरों में काला भालू, सफेद बाघ, शेर, सांभर, चीतल, नीलगाय, काला हिरन, चौसिंगा, लंगूर, रीसस मकाक, जंगली सूअर, साही, घड़ियाल, मगरमच्छ आदि कई प्रजातियां पार्क में मौजूद हैं।

यह 'नेशनल पार्क' एक ऐसा क्षेत्र है, जो वन्यजीवों और जैव विविधता की बेहतरी के लिए सख्ती से आरक्षित किया गया है और जहां विकास, वानिकी, अवैध शिकार, पशुओं को चराने जैसी गतिविधियों की अनुमति नहीं है। उनकी सीमाएं अच्छी तरह से चिह्नित हैं।

इंदिरा गांधी विधान भवन : यह मध्यप्रदेश की विधानसभा है। यह बल्लभ भवन के नाम से भी जाना जाता है। अरेरा हिल पर स्थित वल्लभ भवन मध्य प्रदेश का राज्य सचिवालय है। यह ऐसे स्थान पर स्थित है, जहां से शहर के विभिन्न बिंदुओं को देखा जा सकता है और यहां से शहर के शानदार नजारे दिखते हैं। अपनी स्थापत्यकला एवं हरी–भरी पहाड़ी पर स्थित होने के कारण यह पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

बिड़ला मंदिर: नई विधानसभा के पास पहाड़ियों के निकट बनी झील के दक्षिण में स्थित, लक्ष्मीनारायण मंदिर, बिड़ला मंदिर के नाम से लोकप्रिय है। भोपाल के अरेरा पहाड़ी पर छः दशक पूर्व स्थापित बिड़ला मंदिर वर्षों से धार्मिक आस्था का केन्द्र रहा है। मंदिर में स्थापित श्रीविष्णु एवं लक्ष्मीजी की मनोहारी मूर्तियां बरबस ही श्रद्धालु पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। मंदिर के अंदर एक ओर शिव तथा दूसरी

ओर मां जगदम्बा की प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं। मंदिर परिसर में हनुमान जी एवं शिवलिंग भी स्थापित हैं। यहां शिव, विष्णु और अन्य अवतारों की पत्थर की मूर्तियां देखी जा सकती हैं। मंदिर के अंदर विभिन्न पौराणिक दृश्यों के साथ ही गीता और रामायण के उपदेशों की संगमरमर पर की गई नक्काशी दर्शनीय है।

मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने बना विशाल शंख भी दर्शनीय है। आठ एकड़ पहाड़ी क्षेत्र में फैला यह मंदिर की देश तथा प्रदेश के विभिन्न शहरों में प्रसिद्ध है।

बताया जाता है कि तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. कैलाश नाथ काटजू ने बिड़ला परिवार को शहर में उद्योग स्थापित करने के लिए जमीन देते समय यह शर्त रखी थी कि वह इस दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में एक भव्य तथा विशाल मंदिर का निर्माण करवाएं। इस मंदिर का शिलान्यास वर्ष 1960 में मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. काटजू ने और उद्घाटन वर्ष 1964 में तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र के हाथों संपन्न हुआ था।

आज भी यह मंदिर आस्था का मुख्य केन्द्र है। यहां श्रद्धालु पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। प्रतिदिन धार्मिक आयोजन किए जाते हैं। जन्माष्टमी पर यहां श्रीकृष्ण जन्म का मुख्य आयोजन होता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं।

भारत भवन :

भारत भवन को 1982 में बहुकला केंद्र के रूप में स्थापित किया गया था। यहां पुरानी एवं नई दोनों प्रकार की कलाओं को प्रदर्शित किया गया है। भारत भवन में एक आदिवासी संग्रहालय भी है जहां मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों की आदिवासी जातियों के बारे में अच्छी जानकारी दी गई है। यहां कई प्रकार की पेंटिंग्स और मूर्तियां भी लगाई गई हैं। यह भवन

भारत भवन के बाहर लगा सूचना पट

भारत की सबसे अनूठी राष्ट्रीय स्थापनाओं में एक है। भारत भवन में रचनात्मक और साहित्यिक गतिविधियों के प्रदर्शन–कार्यक्रम होते रहते हैं।

यहां तक कि यदि किसी व्यक्ति की कला–प्रदर्शनी आदि में रूचि नहीं है या फिर उस बारे में कोई समझ नहीं है फिर भी वह यहां के उत्कृष्ट और अद्वितीय डिजाइन देखकर एक बार तो कह ही देता है ''वाह–वाह''।

इस इमारत को बड़े ही खूबसूरत लैंडस्कैप से डिजायन किया गया है जिससे यह देखने में काफी बड़ा स्थल लगता है। भारत भवन में प्रतिवर्ष एक बड़ी संख्या में पर्यटक आते है।

इस्कॉन मंदिर : यह मंदिर अभी निर्माण की अवस्था में है। पर्यटकों को आशा है कि यह मंदिर जल्द से जल्द तैयार होकर सैलानियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकेगा।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय:

यह संग्रहालय वन विहार राष्ट्रीय उद्यान से सटा हुआ है। यह अनोखा संग्रहालय श्यामला हिल्स पर लगभग 200 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। इस

भारत के मध्य भाग में, विंध्य पर्वत श्रृंखला के पूर्व में स्थित, भोपाल एक पहाड़ी इलाक़ा है इसलिए इसका भूभाग ऊंचा–नीचा है और इसके दायरे मे कई छोटी पहाड़ियां हैं। उदाहरण के लिए श्यामला हिल, ईदगाह हिल, अरेरा हिल, कटारा हिल इत्यादि। यहां का तापमान अधिकतर गर्म रहता है। यहां गर्मियों का मौसम कुछ अधिक ही गर्म तथा ठंड के मौसम में सामान्य ठण्डक रहती हैं। जून से सितंबर–अक्तूबर तक बारिश का मौसम रहता है और सामान्य वर्षा दर्ज की जाती है।

संग्रहालय में समय और स्थान में मानव की कहानी को दर्शाया गया है। यहां पर मध्यप्रदेश और देश के विभिन्न हिस्सों की जन–जातियों के रहन–सहन, औजार, संस्कृति एवं उनके कृत्रिम आवास की अद्भूत छटा देखने को मिलती है।

यह संग्रहालय जिस स्थान पर बना है, उसे प्रागैतिहासिक काल से संबंधित माना जाता है। पर्यटक यहां की दुकानों से पत्थरों की छोटी–बड़ी मूर्तियां खरीद सकते हैं। सोमवार और राष्ट्रीय अवकाश के अलावा यह संग्रहालय प्रतिदिन 10.00 से सायंकाल 5.00 बजे तक खुला रहता है।

भदभदा बांध : भोपाल शहर से कुछ दूरी पर स्थित सैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। भदभदा बांध का निर्माण सन 1965 में हुआ था। यह भोपाल में स्थित बड़े तालाब के दक्षिण–पूर्वी छोर पर स्थित है। इस बांध में 11 विशालकाय दरवाजे हैं, जिनसे बड़े तालाब में पानी बढ़ने के बाद छोड़ा जाता है। भदभदा बांध आमतौर पर बरसात के मौसम में ही ओवरफ्लो होता है। यहां पर्यटकों के घूमने फिरने की सुविधाएं स्थापित की गई हैं।

विश्व की एक बड़ी त्रासदी भी इस यह शहर में हुई थी। 1984 में अमरीकी कंपनी यूनियन कार्बाइड से मिथाइल आइसोसाइनेट गैस के रिसाव से लगभग बीस हजार लोग मारे गए थे। उसके बाद यह शहर अचानक दुनिया की सुर्खियों में आ गया था। इस वजह से भोपाल शहर एक लम्बे समय तक कई आंदोलनों का केंद्र बना रहा था।

गोलघर

शहर के शाहजहांनाबाद में स्थित यह गोलाकार भवन पहले गुलशन–ए–आलम के नाम से भी जाना जाता था। इसका निर्माण शाहजहां बेगम ने अपने शासनकाल में सन 1868 से 1901 के बीच कराया था। इस भवन में दो दर्जन दरवाजे हैं इसके गोल भाग में सीढ़ियां हैं जो ऊपर की ओर जाती है, ऊपरी कक्ष में गुंबद है तथा स्तंभ बेलनाकार है, गुंबद की साज सज्जा हेतु विभिन्न रंगों का उपयोग किया गया है तथा बहुत ही खूबसूरत चित्रकारी की गई है। ऊपरी ओर का गोलाकार बरामदा टीन शीट से बना है जिसे लकड़ी के खंभों पर टिकाया गया है। मूल रूप से इसमें पारसी शैली का एक बगीचा था जिसे जन्नत बाग कहा जाता था।

इसमें शाहजहां बेगम का कार्यालय था जिसे बाद में चिड़ियाघर के रूप में उपयोग किया गया तथा इसमें विभिन्न तरह के पक्षियों को रखा जाता था। यह भी बताया जाता है कि शाहजहां बेगम के समय में यहां सोने–चांदी के धागे रखे जाते थे, जिनसे चिड़िया अपने लिए घोंसले बनाती थी। रोज शाम को नवाब के शाही बैंड द्वारा मनोरंजन के लिए संगीत बजाया जाता था। बाद में गोलघर का उपयोग नवाब वंशजों ने अपने कार्यालय के रूप में किया। नवाबों का समय खत्म होने के बाद इसे रेलवे पुलिस का कार्यालय बना दिया गया। गोलघर के बरामदे में नवाब के समय के ऐतिहासिक दस्तावेजों को फोटो के रूप में लगाया गया है जो कि इतिहास के छात्रों तथा जनसामान्य के हेतु बहुत उपयोगी है।

गोलघर

मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग की भोपाल दर्शन गाड़ी

मोती मस्जिद : इस मस्जिद को कुदसिया बेगम की बेटी बेगम सिकंदर जहां ने 1860 ई. में बनवाया था। बेगम सिकंदर जहां का घरेलू नाम मोती बीबी था और उन्हीं के नाम पर इसका नाम मोती मस्जिद रखा गया। मोती बीबी एक सुशिक्षित तथा उस समय के हिसाब से आधुनिक महिला थी। मस्जिद के निर्माण में सफ़ेद संगमरमर और लाल पत्थर का उपयोग किया गया है और यह स्थापत्यकला का बेहद खूबसूरत नमूना है।

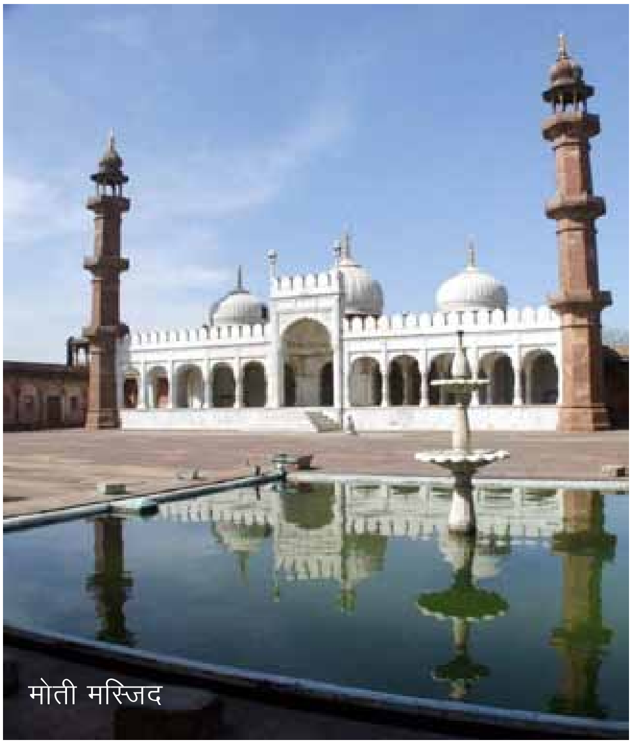
मोती मस्जिद

यह मस्जिद दिल्ली की जामा मस्जिद की तर्ज पर ही बनाई गई है। लेकिन आकार में यह उससे छोटी है। मस्जिद, मुख्य रूप से सफ़ेद रंग की है क्योंकि इसका निर्माण पूरी तरह से संगमरमर से किया गया है। मस्जिद की गहरे लाल रंग की दो मीनारें हैं जो ऊपर नुकीली हैं और सोने के समान चमकीली है। इसके गहरे लाल टॉवर और गोल्डन भालेनुमा संरचना मनमोहक है।

सुल्तानिया रोड पर स्थित मोती मस्जिद भोपाल के इतिहास और वास्तुकला के साथ ही भारत की मुस्लिम महिलाओं के इतिहास में मील का पत्थर मानी जाती है। इस मस्जिद के पूर्वी छोर पर स्थित लॉन को मोतिया पार्क के नाम से जाना जाता है। आकार में छोटी होने बेहद सुंदर, मोती मस्जिद को देखने हर साल हजारों पर्यटक आते हैं।

ताज-उल-मस्जिद

यह स्थान मस्जिद भारत की विशाल मस्जिदों में से एक है। इस मस्जिद का निर्माण कार्य भोपाल की 8वीं शासक शाहजहां बेगम के शासन काल में प्रारंभ हुआ था, लेकिन धन की कमी के कारण उनके जीवन में नहीं बन पाई। वर्ष 1971 में भारत सरकार के प्रयासों से यह मस्जिद पूरी तरह से बनकर तैयार हो सकी। गुलाबी रंग की इस विशाल मस्जिद की दो सफेद गुंबदनुमा मीनारें है।

भोपाल में कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक इमारतों को भी देखा जा सकता है इनमें से कुछ गौहर महल, शौकत महल, पुराना किला और सदर मंजिल है।

शौकत महल शहर के बीचोंबीच चौक एरिया के प्रवेश द्वार पर स्थित है।

गौहर महल

भोपाल शहर को यहां की बेगमों ने एक से बढ़कर एक कई सौगातें दी हैं। उन्हीं में से एक वीआईपी रोड स्थित गौहर महल भी है। झील के किनारे बना यह महल शौकत महल के पीछे स्थित है। वास्तुकला का खूबसूरत नमूना यह महल कुदसिया बेगम के काल का है। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि लगभग 4.65 एकड़ क्षेत्र में फैले इस महल में पहले एक खुफिया सुरंग भी थी, जो यहां से 45 कि.मी. दूर जाकर रायसेन के किले में मिलती थी।

ताज–उल–मस्जिद

इकबाल मैदान

यह स्थान जिसे आज भोपाल में इकबाल मैदान के नाम से जाना जाता है कभी शौकत महल, मोती महल और गौहर महल का आंगन हुआ करता था। यहां नवाब खानदान की महिलाएं सैर करने आती थीं।

राजकीय पुरातत्व संग्रहालय

भोपाल को वैसे तो झीलों का शहर कहा जाता है परन्तु यह शहर सांस्कृतिक रूप से भी अति समृद्ध शहर है। भोपाल की यात्रा के दौरान बाणगंगा रोड पर स्थित संग्रहालय देखने अवश्य जाएं। राज्य पुरातत्व संग्रहालय में मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक युग से संबंधित बहुत सारी जानकारीपूर्ण और उल्लेखनीय कलाकृतियों के साथ राज्य की समृद्ध परंपराओं का लघुरूप देखा जा सकता है। पुरातत्व संग्रहालय का भोपाल के स्मारकों और संग्रहालयों में अपना एक अलग स्थान है। यहां विभिन्न परम्पराओं की पेंटिंग्स भी प्रदर्शित की गई हैं।

यह संग्रहालय वर्ष 1964 में स्थापित किया गया था, जो शहर के अन्य सभी संग्रहालयों और दीर्घाओं में सबसे महत्वपूर्ण है। संग्रहालय में शानदार आदिवासी हस्तशिल्प, संगीत वाद्ययंत्र, 12 वीं शताब्दी से संबंधित कांस्य वस्तुएं और बहुत कुछ शामिल हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव,लक्ष्मी और बुद्ध की शानदार मूर्तियां हैं। खजुराहो के जोड़े की बारीक मूर्तिकला के चित्र उल्लेखनीय हैं।

कैसे जाएं :

वायु मार्ग :
भोपाल का राजा भोज हवाई अड्डा शहर से 12 कि.मी. दूर है।
रेल मार्ग :
रेलवे नेटवर्क से भोपाल देश के सभी बड़े शहरों से जुडा हुआ है। यह भारतीय रेल के दिल्ली–चैन्नई मुख्य मार्ग पर पडता है। इसके अलावा, शताब्दी एक्सप्रेस भोपाल को दिल्ली से सीधा जोडती है।

भोपाल के बाहरी/आसपास के क्षेत्रों में भी कई पर्यटन स्थल मौजूद है।

कैड़वा बांध– यहां पर भी लोग घूमने–फिरने के लिये अपने परिवार सहित जाना पसंद करते है। छुट्टियों के दिन इस स्थल पर काफी भीड़ रहती है। भोपाल शहर के लोगों और खासकर बच्चों के घूमने–फिरने एवं मनोरंजन का एक आकर्षक केन्द्र है। भोपाल के बाहरी इलाके में लोकप्रिय पिकनिक स्थल है जो शहर का सबसे सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है।

मनुबहन की टेकरी भी यहां का एक और पिकनिक स्थल है जो एक पहाड़ी चट्टान पर स्थित होने के कारण शहर का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। यह स्थान जैनियों के धार्मिक स्थान भी है।

शहर से सात कि.मी. दूर शाहपुरा झील भी भोपाल के बाहरी इलाके में स्थित है, यह झील स्थानीय लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है यहां लोग शाम और सप्ताहांत के दौरान सैर करने और परिवार के साथ समय बिताने आते है। यहां स्थित गुफा मंदिर, भगवान शिव को समर्पित है।

भोपाल में भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) का एक कारखाना है। हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र ने अपना दूसरा 'मास्टर कंट्रोल फ़ैसिलटी' स्थापित की है। भोपाल में भारतीय वन प्रबंधन संस्थान भी है जो भारत में वन प्रबंधन का एकमात्र संस्थान है। साथ ही भोपाल उन छह नगरों मे से एक है जिनमे 2003 में भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान खोलने का फ़ैसला लिया गया था तथा वर्ष 2015 से यह कार्य कर रहा है।

ईको पर्यटन :

पंजाब

कैशोपुर छम्ब : गुरदासपुर

–विनोद कुमार[1] एवं अश्वनी काचरू[2]

भारत विश्व का एकमात्र देश है जहाँ विविधता में एकता के दर्शन होते है यहां पर लोग ''जीयो ओर जीने दो'' की संकल्पना में विश्वास करते हैं। तभी तो यहां पर विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तुओं का आगमन एवं बसेरा होता है। इसलिए पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी को बचाने में पशु एवं पक्षियों का बहुत योगदान माना जाता है क्योंकि वह प्रकृति की गोद में रहकर इसका संरक्षण करतें है। ईको पर्यटन गंतव्यों के विकास के साथ–साथ हम मानव और जीव दोनों के विकास में योगदान दे सकते हैं। मानव रोजगार प्राप्त कर अपना जीवन स्तर सुधार सकते हैं वही जीवजन्तु आश्रय पाकर प्रकृति एवं वातावरण को स्वच्छ एवं सुन्दर बना सकते हैं। पंजाब में पारिस्थिकी पर्यटन नीति 2009' का गठन होने के उपरान्त, केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व, में, गुरदासपुर जहां 2010–11 में प्रवासी पक्षी संख्या 4500 थी वही 2015–16 मे बढ़कर 25300 के आंकड़ें को पार कर गई। इस प्रकार विश्व की विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के पक्षियों का आना एक शुभ संकेत है। जो यहां की उपलब्धियों तथा स्थानीय लोगों के संरक्षण का एक सफल प्रयोग है। ईको पर्यटन को बढ़ाकर तो इसका विकास करे यह एक दिन हमारे देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार होगा। हम अपने देश के घरेलु पर्यटन को चीन की तरह बढाकर आय का स्रोत बना सकतें है तथा पर्यटन देश की आय एवं रोजगार का प्रमुख आधार बन सकता हैं।

परिचयः

पर्यावरण एवं मानव का सम्बन्ध सदियों पुराना है क्योंकि पर्यावरण की गोद में पल कर ही मानव बडा हुआ है। आज के आधुनिक युग की कल्पना पर्यावरण के कारण ही साकार हो सकी है और पर्यावरण ने ही मानव को सुअवसर प्रदान किए है। पर्यावरण से हमारा तात्पर्य वह परिवेश है जहां हम रहते है इसके अर्न्तगत वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे एवं जीव–जन्तु आते हैं प्रकृति भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को विशेष स्थान प्राप्त है, ठीक उसी तरह जैसे कि वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे एवं जीव–जन्तुओं को देवी देवताओं के रूप मे स्थान प्राप्त है।

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी – पर्यावरण से हमारा तात्पर्य उस वातावरण से है जो कि सम्पूर्ण जगत या ब्रहमाण्ड या जीव जगत से जो हमे चारों से धीरें आवरण से है, जो हमें प्रभावित एवं परिचालित करता है और स्वयं भी प्रभावित होता है। पर्यावरण अंग्रेजी के शब्द Environment का हिन्दी अनुवाद है जो कि दो शब्दो Environ और Ment से मिलकर बना है जिसका अर्थ है all around अर्थात जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। वही पारिस्थितिकी पर्यावरण अध्ययन का विज्ञान मात्र है। प्रकृति के दो प्रमुख घटक जीव एवं पर्यावरण अलग होते हुए भी एक दूसरे पर आधारित है तथा अनेक जटिल क्रिया– प्रतिक्रियाओं को पूर्ण करते हैं।

---

[1]पुस्तकालयाध्यक्ष, होटल प्रबन्ध संस्थान, गुरदासपुर
[2]वरिष्ठ प्रवक्ता, होटल प्रबन्ध संस्थान, गुरदासपुर

Ecology शब्द दो ग्रीक शब्दों Oikos एवं logos से मिलकर बना है पहले शब्द का अर्थ है घर या रहने का स्थान दूसरे शब्द का अभिप्राय अध्ययन करना है दूसरे शब्दों में कह सकतें है कि जहां जीवन बसता उसकी परिस्थितियां अथवा पर्यावरण का न केवल वर्णन बल्कि उसके प्रभाव का भी समुचित विवेचन एवं अध्ययन करना ही परिस्थितिक का उद्देश्य है। पारिस्थितिकी की प्रकृति एवं क्षेत्र के आधार पर विभिन्न विद्वानों ने अपने –अपने विचारों से इसको परिभाषित किया है। ओडम ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है, 'पारिस्थितिक जीव अथवा जीवों के समूह का पर्यावरण के साथ सम्बन्धों का अध्ययन है, यह जीवों और पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्धों का विज्ञान है।'

माकहॉउस एवं स्मॉल ने भी इसे जीवों और पर्यावरण के आपसी सम्बन्धों का विज्ञान बताया है।

पर्यावरण अनेक तत्वों का मुख्यतः प्राकृतिक एवं भौतिक जगत के तत्वों का समूह है जो सदैव एक दूसरे के साथ मिलकर क्रियाशील रहते हैं जल, वायु, मृदा, वनस्पति के अलावा सारा जीव जगत इसका अभिन्न अंग है। मानव स्वयं पर्यावरण का एक सबसे सक्रिय जीव है जो पर्यावरण के अनुरूप चलता है तो दूसरी ओर पर्यावरण को अपने अनुरूप बनाने के लिए नए नए अविष्कार एवं अनुसंधान करता रहता है ताकि पर्यावरण उसके अनुरूप रहे लेकिन इसके परिणाम अल्पकालिन ही होते है। दीर्धकाल में मानव जाति को इसकी बडी कीमत चुकानी पडती है, जो आज मानव जाति के लिए एक समस्या बनी हुई है।

आज पर्यटकों को गोवा से ज्यादा पंजाब पसंद आ रहा है। यह खुलासा पर्यटन मंत्रालय की रिपार्ट 2012–13 में हुआ है। भारत का ताजमहल देखने आने वाले ज्यादातर पर्यटक गुरू की नगरी देखने जरूर आते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार पंजाब के विभिन्न शहरों को देखने प्रतिदिन लगभग सवा लाख लोग पहुंच रहे हैं।

यदि हम भारत के कुछ पिछलें वर्षो के आंकड़ों पर नजर डालें तो भारत में आने वाले पर्यटकों की संख्या जनवरी से मार्च 2016 की अवधि के दौरान 25.08 लाख थी जो कि 2015 की इसी अवधि की तुलना में 10 प्रतिशत अधिक है जनवरी से मार्च 2015 के दौरान देश में 22.81 लाख विदेश पर्यटक आए थे।

शोध के उद्देश्य:

1. ईको पर्यटन गंतव्य के क्षेत्र में केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व एवं गुरदासपुर जिलें की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. ईको पर्यटन के अनुसार केशोपुर छम्ब के प्रमुख क्षेत्रों तथा जीव जन्तुओं का विवरण एवं उनका उल्लेख करना।
3. ईको पर्यटन के क्षेत्र में केशोपुर छम्ब का महत्व एवं अनुशीलन।

जनवरी से मार्च तक आए पर्यटकों एवं अर्जित विदेशी मुद्रा आय के आंकड़े निम्नप्रकार हैं :

क्रम संख्या	मार्च माह में प्रतिवर्ष	विदेशी पर्यटक (लाख में)	विदेशी मुद्रा आय (करोड़ रू0 में)
1.	2014 मार्च	6.90 लाख	10.479
2.	2015 मार्च	7.29 लाख	11.133
3.	2016 मार्च	8.17 लाख	13.115
स्त्रोतः आप्रवासन ब्यूरो, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार			

शोध विधि-तन्त्र :

प्रस्तुत शोध पेपर संकल्पनात्मक शोध के आधार पर तैयार किया गया है। जिसमें द्वितीय शोध स्रोत्रों का उपयोग किया गया है। यह पुस्तकालयों में उपलब्ध साहित्य एवं विश्वकोष आदि में उपलब्ध सूचनाओं के स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। कुछ सूचनाओं को सम–सामायिक पत्र–पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचार–पत्रों जैसें कि 'ट्रिब्यून', 'इडियन एक्सप्रेस', 'अमर उजाला' तथा 'दैनिक भास्कर' के साप्ताहिक अंको से लेकर शोध का आधार बनाया है।

शोध की सीमाएं – शोध कार्य का मुख्य आधार ईको पर्यटन को बनाया गया है जो कि गुरदासपुर जिले के ईको पर्यटन गंतव्य के क्षेत्र में केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व तक सीमित है।

शोध की परिकल्पनाएं:-

1. ईको पर्यटन के क्षेत्र में केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व का पंजाब के पर्यटन में क्या योगदान है।
2. सरकार की क्या योजनाएं है जो इस क्षेत्र को पर्यटन के पटल पर रेखांकित करती हैं।
3. परिस्थितिकी तंत्र (ईकोलॉजी) का पर्यावरण एवं जीव–जन्तुओं पर क्या प्रभाव पड़ता है।
4. ईको पर्यटन के क्षेत्र में केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व विकास तथा स्थानीय लोगों पर इसका प्रभाव।

साहित्य की समीक्षा: साहित्य समीक्षा किसी भी विषय पर होने वाले शोध कार्यो का अवलोकन कर नवीन कार्यों की समीक्षा कर उन पर नए नियमों एवं उपनियमों तथा उनके विषय के अनुसार उस पर अभी तक हुए कार्यों पर समीक्षात्मक अध्ययन हैं।

किसी भी शोध कार्य एवं विभिन्न विषयों के शोध निष्कर्षों पर अध्ययन कर अपने वर्तमान में होने वाले शोध कार्य के परिणाम पर पहुंचा जाता हैं।

आशीष नाग (2013) : ईको पर्यटन किसी भी प्रदेश की अर्थव्यवस्था का आधार हो सकती है क्योंकि यह किसी भी पर्यटन स्थल पर आकर पर्यटक उस पर्यटन स्थल की सुन्दरता को देखने में अपना समय व्यतीत करते है तथा सुन्दर वतावरण का भी अनुभव करते हैं। लेकिन उसी समय, हमें उस स्थल पर उत्पन्न होने वाले कुछ खतरों को ध्यान में रखने की जरूरत होती है। इनमें सबसे महत्तवपूर्ण पर्यावरण और पारिस्थितिकी ही है और वहां की सामाजिक एवं संस्कृति के अनुरूप कपडों का पहनावा सबसे बड़ा खतरा है। इन खतरों मे इतना है कि ईको पर्यटन की पूरी अवधारणा को एक बेहतर तरीके से लागू किया जा सकता है जो इस क्षेत्र के लिए अच्छा योगदान कर सकते है। इसके अलावा कुछ पहलें ऐसी होती हैं जिन पर वहां के स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक अवसरों के सृजन को बढ़ावा देने और पर्यावरण की रक्षा के लिए पर्यटकों और स्थानीय लोगों की ओर से की जानी जरूरी होती हैं।

गुरदासपुर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:– गुरदासपुर के पूर्ण इतिहास को जानने के लिए हिस्ट्री सोसाईटी के प्रधान व प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. राजकुमार शर्मा से दैनिक जागरण की बातचीत में उभर कर आई। प्रो. शर्मा के अनुसार गुरदासपुर को गुरिया जी ने बसाया था। एक गाथा के मुताबिक गुरिया जी का जन्म 16 वी शताब्दी के अंत में महाराष्ट्र के घने जंगल में हुआ था। गुरिया जी अपने परिवार एवं श्रद्धालुओं से भगवान राम की नगरी अयोध्या से आए थे और गुरदासपुर के उत्तर की ओर स्थित

ऐतिहासिक गांव पनियाड़ में आ बसे थे। उनके पिता का नाम गोपी जी महाराज था। वह आगे बताते हैं कि गुरिया जी कौशल गोत्र के सांवल ब्राहमण, बहुत पढ़े लिखें व संत स्वभाव के थे। गुरिया जी के दो लड़के थे –नवल राय एवं पाला जी। महंत नवल राय के लड़के साहिब दीप चंद अपने समय के प्रसिद्ध व्यक्ति हुए है। 1865 के बंदोबस्त में इस बात का वर्णन मिलता है कि महंत गुरिया जी ने सांगी गोत्र के जाटों से वर्तमान गुरदासपुर की भूमि खरीदी थी और इसका नाम अपने नाम पर गुरदासपुर रख दिया।

गुरिया जी के वंशज जो उनके गद्दीनशीन बने और बड़ी सरकार कहलाए। दूसरे परिवार को छोटी सरकार कहा जाता है। बडी सरकार का निवास स्थान रंग महल था ओर छोटी सरकार का संबंध झूलन महल से है।

केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व–ईको पर्यटन गंतव्य की भौगोलिक पृष्ठभूमिः– केशोपुर सामुदायिक (कम्युनिटी) रिजर्व एक विस्तृत शुद्ध जल की प्राकृतिक आर्द्रभूमि यानि छम्ब (वेटलैण्ड) है जो जिले एवं तहसील गुरदासपुर, पंजाब में है जिसका केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व देश की ही नही अपितु एशिया की ताजा पानी की प्राकृतिक वेटलैण्ड है जिसे अब पर्यावरणीय पर्यटन स्थल बनाने की तैयारी चल रही है। यह पहल एशियाई विकास बैंक (Asian Development Bank) के सहयोग से की जा रही है। पंजाब हैरीटेज एंड टूरिज्म प्रोमोशन बोर्ड ने एशियाई विकास बैंक की केशोपुर रिजर्व पर प्राथमिक रिपोर्ट के आधार पर यह निर्णय लिया गया है। बोर्ड के अधिकारियो के अनुसार बोर्ड की पहली प्राथमिकता रिजर्व की प्राकृतिक संपदा, खासतौर पर यहां के प्रवासी पक्षियों एवं स्थानीय पक्षियों को संरक्षण प्रदान करने की है। ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि यहां पर प्रतिवर्ष एक बड़ी तादाद में प्रवासी पक्षियों का बसेरा होता है।

850 एकड़ में फैला केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व ताजा पानी का यह क्षेत्र लगभग 224 प्रवासी पक्षियों व जलीय जीवों के प्राकृतिक आवास का केंन्द्र है। यहां मानवीय गतिविधियां बेहद कम है जबकि बाकी गांवो के बाशिंदे इसका मछलीपालन और सिंधाडे की खेती के लिए उपयोग करते हैं।

केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व में पाई जाने वाले पक्षियों की प्रजातियांः

देश के पहले कम्युनिटी रिजर्व सैन्टर केशोपुर छंब में ग्रेलैगज् गूज पक्षियों का नजारा

गुरदासपुर जिले के वन्यजीव अधिकारी राजेश महाजन ने बताया कि छंब में इस बार पक्षियों की 63 प्रजातियां देखने को मिली है। सबसे ज्यादा पक्षियों की संख्या टेल प्रजाति की थी, नार्थन पिनटेल के 2000 के करीब एवं नार्थन शैलेक की संख्या लगभग 1800 थी जबकि रूडी शेटर व कामन क्रेन की संख्या भी बडी मात्रा में देखी गई कामन क्रेन पक्षी साईबेरिया से यहां आते है।

पक्षियों की गणना के लिए वर्ल्ड वाइल्ड लाईफ फंड की अंतर्राष्ट्रीय टीमों नें गणना का कार्य किया जिसमें इनकों पक्षियों की वैज्ञानिक गणना करने के लिए निम्नलिखित टीमों में बाटा गया है –

- एशियन वाटर फाएल सेंसस – दिल्ली के विशेषज्ञ
- एवियन हैवीटेट सोसाईटी, चंडीगढ़ के विशेषज्ञ
- पंजाब साइंस एंड टेक्नॉलाजी चंडीगढ़ के विशेषज्ञ
- पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला
- जागृति सोसाईटी हिमाचल प्रदेश के विषय विशेषज्ञ पक्षियों की गणना के लिए यहां पहुचें है।

जिला वन्यजीव अधिकारी, गुरदासपुर एवं अन्य समाचार पत्रों में दिए गए आकड़ों के आधार पर, पिछले छः वर्षो में केशोपुर छंब में आने वाले पक्षियों के आंकड़ों का विवरण इस प्रकार है :

क्रम संख्या	वर्ष	प्रवासी पक्षियों की संख्या
1.	2010–2011	4,500
2.	2011–2012	6,200
3.	2012–2013	8,500
4.	2013–2014	18,500
5.	2014–2015	20,400
6.	2015–2016	25,300

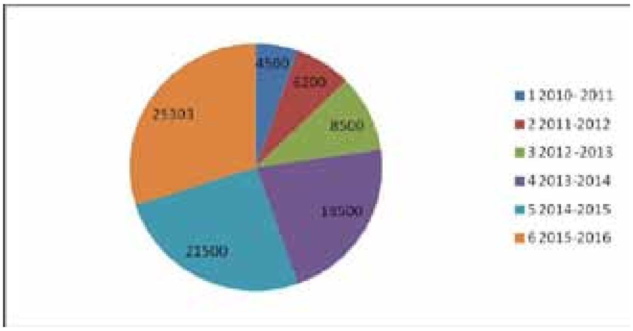

छः वर्षों में केशोपुर छंब में आने वाले पक्षियों के आंकडे

पारिस्थितिक पर्यटन की गतिविधियों के प्रचार एवं प्रयासः– पंजाब मे पारिस्थितिक पर्यटन को बढावा देने के लिए सरकार ने 'पंजाब पारिस्थितिकी पर्यटन नीति 2009' का गठन किया है जिसके उद्देश्य इस प्रकार से हैः

- *पारिस्थितिकी पर्यटन के संभावित स्थलों की पहचान करना एवं उनको बढावा देना।
- *पारिस्थितिकी पर्यटन की अवसंरचना का विकास।
- *विविधीकरण पर्यटन की गतिविधियों स्थलों पर रैंज उपलब्धता।
- *पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास की गतिविधियों हेतु मानकों और मानदंडो में प्रवर्तन।
- *स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सुरक्षा और उनकी आजीविका के लिए परिधिय और अन्य क्षेत्रों पर निर्भरता।
- *आम जनता, स्थानीय समुदायों और सरकारी कर्मचारियों के बीच जागरूकता।
- *पारिस्थितिकी पर्यटन के लक्ष्यों के निमित्त अवसंरचनात्मक सुविधाओं और सेवाओं के विकास के लिए निजी क्षेत्र की प्रतिबद्ध उधमता एवं भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए तंत्र का विकास।
- *समुदाय और स्थानीय समुदाय की आजीविका की वृद्धि की संवेदीकरण।

पारिस्थितिकी पर्यटन के अन्तिम मुख्य लक्ष्यः

क. राज्य के प्राकृति आधारित संसाधनों का संरक्षण;

ख. राज्य के एक प्रमुख केंद्र के रूप में पारिस्थितिकी पर्यटन को बढावा देना;

केशोपुर छम्ब, गुरदास में नार्थन पिनटेल पक्षी

ग. प्रतिकूल एवं सांस्कृतिक लोकाचार को प्रभावित किए बिना स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक लाभ हासिल करना।

विकास और ईको–पर्यटन गतिविधियों के लिए मानकों एवं मानदंडों के प्रवर्तन:–

यहां पर इंटरप्रिटेशन सैंटर भी बनाया जाएगा जो बर्ड सैंक्चरी के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने का पहला प्लेटफार्म होगा।

एशियाई विकास बैंक की तरफ से ईको पर्यटन के संवर्धन के लिए आर्थिक मदद दी जा रही है और इसके लिए करीब 40 करोड़ रुपए मंजूर किए गए हैं।

पारिस्थितिकी पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए स्थानीय प्रशासन गुरदासपुर जिला अधिकारी एक नये प्रोजेक्ट पर 8.10 करोड़ रुपए व्यय करेंगे। इस व्यय से इन मदों पर कुछ व्यय किए जाएंगे

- पेड़–पौधों के रोपण पर 10 लाख रुपए
- जंगली पौधों के रोपण पर 35 लाख रुपए
- भू–दृश्य और प्रकृतिक ट्रेल्स पर 30 लाख रुपए
- मेवात गांव में पर्यटक सूचना केन्द्र के लिए 71.58 लाख रुपए
- आठ कि.मी. लम्बे प्राकृतिक ट्रेल्स पर 22 लाख रुपए

(यह ट्रैकर्स के लिए एक वरदान साबित होगा)

वन्य जीव संरक्षण अधिनियम मे 1972 मे पहली बार 2002 में इन वन्यजीव को संरक्षित करने के लिए पहली बार अधिनियम में संशोधन किया गया।

भारत में समुदाय भंडार मौजूदा स्थिति फरवरी, 2016 के अनुसार इस पर से है

क्रम संख्या	राज्य	समुदाय भंडार का नाम	निर्माण का वर्ष	क्षेत्रफल वर्ग किलोमीटर	जिले का नाम
1.	पंजाब	कैशोपुर छंब	2007	3.40	गुरदासपुर
2.		लावान	2007	12.67	होशियारपुर
3.	केरल	काडलाउन्डी	2007	1.50	मलप्पुरम
4.	कर्नाटक	कोकारे बल्लूर	2007	3.12	मांडया
5.	मेघालय	काकचलू टकबरू उम्याचू	2014	0.196	पूर्वी जयन्तिया हिल्स

केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व चुनौतियां: केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व भारत का प्रथम रिजर्व सेंन्टर है जिसमें इसकी उपयोगिता एवं महत्व के अनुसार इसके रख–रखाव में अभी काफी खामियां है :

* केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व की उपयोगिता एवं देश एवं राज्य की अर्थ व्यवस्था में इसके योगदान में बढने वालें संसाधनों का अभाव।
* संरचनात्मक बुनियादी ढांचे का अभाव।
* गाइड को प्रशिक्षण एवं आधुनिक तकनीकों का अभाव।
* स्थानीय लोगों में जागरूकता एवं पक्षियों के प्रति लगाव का अभाव।

* परिवहन के आधुनिक साधनों का अभाव एवं समुचित व्यवस्था।
* पर्यटको के लिए सुविधा बूथ एवं सूचना केन्द्र का अभाव।
* पर्यटको की सुरक्षा की समुचित व्यवस्था।

केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व के अवसरः

* स्थानीय समुदायों के लोगों को पर्यटकों के माध्यम से आय के साधनो की प्राप्ति।
* स्थानीय समुदायों को रोजगार के सुअवसर।
* पर्यावरण एवं पारिस्थितिक में सन्तुलन बनाने के लिए मुख्य अवसर प्रदान करना।
* राज्य एवं जिले के मानचित्र पर केशोपुर रिजर्व का एक ऐतिहासिक महत्व।
* परिवहन एवं विकास से स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में विकास

उपरोक्त को देखते हुए यह भी देखना होगा कि :

* पर्यटक स्थल के बेहतर विकास के लिए स्थानीय परिवहन के साधनों का विकास किया जाना भी जरूरी है, जो फिलहाल पूरी तरह से उपलब्ध नहीं है।
* स्थानीय लोगों में जागरूकता के लिए वहां के लोगों को पर्यटन व पर्यटक स्थल के विषय में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।
* पर्यटकों के मनोरजंन तथा रहने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
* पर्यटक स्थल को आकर्षक बनाने के साथ ही उसका प्रचार व प्रसार करना।
* पर्यटक की सुरक्षा एवं सुविधा को सुसज्जित करना।

निष्कर्षः

कैशोपुर छंब राज्य का दूसरा बड़ा वेटलैण्ड है जिसमें देश –विदेशों से आने वाले पक्षियों का एक बेसरा तथा उनके रहने के लिए एक उपयुक्त स्थल है। पंजाब मे पारिस्थितिक पर्यटन को बढावा देने के लिए सरकार ने एक पंजाब पारिस्थिकी पर्यटन नीति 2009 का गठन किया। जिसमें पारिस्थितिकी पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए स्थानीय प्रशासन गुरदासपुर जिला अधिकारी एक नये प्रोजेक्ट पर 8.10 करोड़ रूपयें के खर्च करेगा। जहॉ पर वन्य जीव संरक्षण अधिनियम मे 1972 मे पहली बार 2002 में इन वन्यजीव को संरक्षित करने के लिए पहली बार अधिनियम में संशोधन किया गया। जहॉ पर विदेशी पक्षियों का आगमन वर्ष 2010–11 में 4500, 2012–13 में लगभग डबल 8500 तथा वर्ष 2015–16 में 25300 पक्षियों की रिकार्ड गणना की गई, जो एक साकारात्मक प्रयास का परिणाम है।

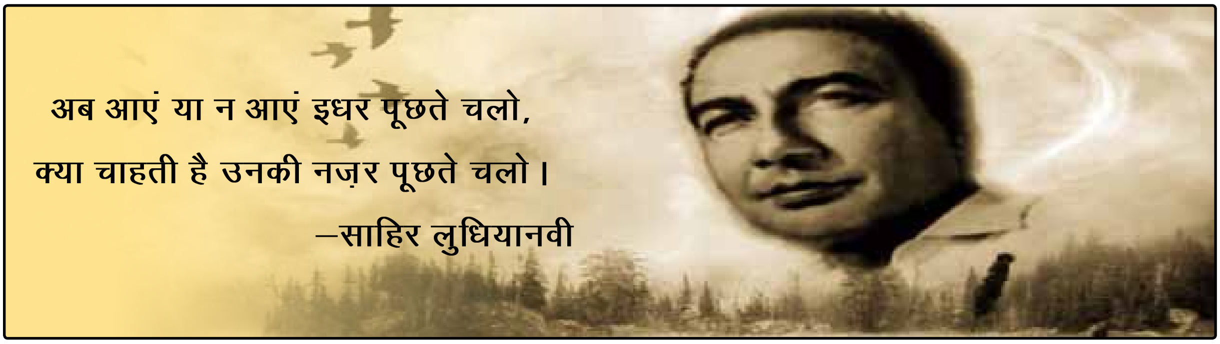

ईको–पर्यटन, उत्तर प्रदेश

सरयू नदी की यात्रा और पर्यटन स्थल

–डॉ. विश्वरंजन

'रामचरितमानस' में एक स्थान पर कहा गया है:

'अवधपुरी मम पुरी सुहावनि,

दक्षिण दिश बह सरयू पावनी'

सरयू नदी को अयोध्या की पहचान का प्रमुख चिन्ह रामचरित मानस की इस चौपाई में बताया गया है। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में सरयू नदी के तट पर राम की जन्म–भूमि स्थित है। हिन्दुओं के प्राचीन और सात तीर्थ स्थलों में से अयोध्या एक है। अथर्ववेद में अयोध्या को ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी स्वर्ग से तुलना की गई है।

उत्तर प्रदेश में अयोध्या के निकट बहने वाली भारत की प्राचीन नदियों में से सरयू नदी एक है। 'घग्घर' और 'सरजू' इस नदी के अन्य नाम हैं। यह हिमालय से निकलकर उत्तरी भारत के गंगा के मैदान में बहने वाली नदी है, जो छपरा के बीच में गंगा में मिल जाती है। अपने ऊपरी भाग में, जहाँ इसे 'काली नदी' के नाम से जाना जाता है, यह काफ़ी दूरी तक भारत के उत्तराखण्ड और नेपाल के बीच सीमा बनाती है।

भारत में नदी के संदर्भ में जनमानस की आस्था के प्रति मिलने वाली प्रतिक्रिया कोई साधारण नहीं है। अतुल्य भारत के संदर्भ में लोगों की चेतना में वैचारिक विविधता कुछ ऐसी है जैसे मानो गागर में सागर समाहित हो। इन सभी उदाहरण को विस्तृत और निशब्द भाव से समझना हो तो हमे एक बार सरयू नदी के उद्गम से लेकर संगम तक की यात्रा करनी चाहिए। सरयू नदी के जलमार्ग के आसपास कई अविस्मरणीय बातें छुपी है जिससे अधिकांश लोग अनभिज्ञ है। सरयू रामायण काल में कोसल जनपद की एक प्रमुख नदी थी । जिसका पौराणिक उल्लेख इस प्रकार है –

अयोध्या के प्रसिद्ध सरयू नदी के तट पर राम की पैड़ी और इसके आसपास टिमटिमाते हजारों दीए

*कन्सल्टेंट: पेय जल एवं स्वच्छता मंत्रलय, भारत सरकार, नई दिल्ली

'कोसलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदों महान्,

निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।

अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता

मनुना मानवैनद्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।'

पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' में सरयू का नामोल्लेख किया है। 'पदमपुराण' के उत्तरखंड में भी सरयू नदी का माहात्म्य वर्णित है।

अयोध्या नरेश दशरथ शिकार के लिए अयोध्या से कुछ दूर सरयू के तट पर घने जंगल में जाया करते थे। एक दिन महाराज दशरथ जब शिकार कर रहे थे, तब उस समय भूल से श्रवण कुमार का बध हो गया, जो सरयू नदी से अपने अंधे माता–पिता के लिए जल लेने के लिए आया था।

'तस्मिन्नति सुखकाले धनुष्मानिषुमान्रथी

व्यायामकृतसंकल्पः सरयूमन्वगां नदीम्,

निपाने महिषं रात्रौगजं बाभ्यागतंमृगम्,

अन्यद् वा श्वापदं किंचिज्जिधांसुरजितेन्द्रिया';

'अपश्यभिषुणा तीरे सरयूबास्ता पसं हतम्,

अवकीणंजटाभारं प्रविद्धिकलशोदकम्।'

ऋग्वेद में सरयू नदी का विस्तृत उल्लेख किया गया है जिसमें यह कहा गया है कि 'यदु' और 'तुर्वससु' ने इस नदी को पार किया था। महाराजा यदु एक चंद्रवंशी राजा थे। वे यदुकुल के प्रथम सदस्य माने जाते हैं। उनके वंशज यदुवंशी कहलाते हैं।

सरयू नदी अयोध्यावासियों की बड़ी प्रिय नदी थी। कालिदास के 'रघुवंश' में राम सरयू को जननी के समान ही पूज्य कहते हैं :

'सेयं मदीया जननीव तेन मान्येन राज्ञा सरयूवियुक्ता,

दूरे बसन्तं शिशिरानिलैर्मां तरंगहस्तैरूपगूहतीव।'

कालिदास ने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' में सरयू के तट पर अनेक प्रकार के यज्ञों के सम्पन्न होने का वर्णन किया है–

'जलानि या तीरनिखातयूपा बहत्ययोष्यामनुराजधानीम्'।

इस नदी के आस–पास अनेक पर्यटन स्थल है। यह पर्यटन स्थल विभिन्न घाटों, बोटिंग सेंटर, इको टूरिज्म और मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे के लिये जाना जाता है। विभिन्न पर्यटन कुछ इस प्रकार है–

बरसोला कलां भारत और नेपाल के सीमा पर स्थित गांव है। यहां पर सरयू नदी का विस्तार हुआ है। नदी की सुन्दरता और बीच की दो सीमा रेखा को देखा जा सकता है। राज्य राजमार्ग 21 से सड़क मार्ग द्वारा बारसोला कलां जा सकते हैं। निकटतम रेलवे स्टेशन तिकुनिया है और गांव तक ट्रेन या उ.प्र. रोडवेज की बसों द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है।

कतर्निया घाट वन्यजीव अभयारण्य भारत के उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में स्थित है। कतर्निया घाट वन भारत, नेपाल में दुधवा और किशनपुर के बाघों के लिए जाना जाता है। अभयारण्य के घने जंगल, हरे–भरे घास के मैदान, दलदल और आर्द्रभूमि हैं। यहां घड़ियाल, बाघ, गैंडा, गांगेय डॉल्फिन, हिरण, बंगाल फ्लोरिकन, श्वेत–समर्थित और लंबे–बिल वाले वशीकरण सहित कई लुप्तप्राय प्रजातियों का घर है।

कतर्निया घाट वन्यजीव अभयारण्य दुधवा टाइगर रिजर्व लखीमपुर खीरी के मुख्य क्षेत्र का एक हिस्सा है। इस अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल लगभग 400 वर्ग कि.मी. है। इसमें 150 वर्ग कि.मी. का एक बफर जोन है। अभयारण्य के वन क्षेत्र में खारे जंगलों के घास के मैदानों और घाघरा नदी के गिरवा और कौड़ियाला नदियों के ऊंची घास के मैदान यहां की विशेषता है।

पर्यटक यात्रा के दौरान नदी और जंगल सफारी सुविधाओं में नौका विहार का आनंद ले सकते हैं। सफारी आपको एक खुली 4x4 जिप्सी में अभयारण्य के बीच में से होकर ले जाती है। यहां देखने के

सर्प चील का दुर्लभ चित्र : साभार श्री आजाद सिंह

लिए बहुत कुछ हैः– घड़ियाल, मगरमच्छ, चित्तीदार हिरणों के झुंड, मोर, विभिन्न पक्षी, सर्प और चील इत्यादि। यात्रा करने का आदर्श समय नवंबर से जून तक माना जाता है।

गुप्तार घाट : फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश में स्थित एक धार्मिक स्थल है। गुप्तार घाट सरयू नदी के तट पर स्थित इस घाट को हिन्दुध र्मावलम्बी बहुत पवित्र मानते हैं। इस बारे में मान्यता है कि इस पवित्र घाट पर भगवान राम ने पृथ्वी छोड़ने के लिये यहीं पर जलसमाधि ली थी

गुप्तार घाट

और भगवान विष्णु ने यहीं से बैकुण्ठ में प्रवेश किया था। 19 वीं सदी में राजा दर्शन सिंह द्वारा इसका पुनर्निमाण करवाया गया था। घाट पर राम जानकी मंदिर, प्राचीन चरण पादुका मंदिर, नरसिंह मंदिर और हनुमान मंदिर हैं। लोग इनके दर्शन करने आते हैं।

पौराणिक महत्व के अतिरिक्त सरयू नदी के तट कई छोटे–छोटे मन्दिरों के साथ यहां के खूबसूरत दृश्य अचम्भित कर देते हैं। गुप्तार घाट पर बनी पत्थर की सीढ़ियां सरयू नदी की ओर जाती हैं। पौराणिक महत्व

के अलावा सरयू नदी के तट कई छोटे–छोटे मन्दिरों की कतारें आश्चर्यजनक लगती हैं।

गुलाब बाड़ी :

गुलाबबाड़ी उत्तर प्रदेश के फ़ैज़ाबाद में स्थित एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। "गुलाब का बाग़ीचा" के लिए यह चर्चित स्थल के कारण इसके नाम 'गुलाबबाड़ी' रखा गया । यह विशाल बाग़ीचा नवाब शुजाउद्दौला और उनके परिवार की क़ब्रों को घेरे पूरे क्षेत्र में फैला है। इस बाग़ीचे को सन 1775 ई. में स्थापित किया गया था और इसमें कई प्रजातियों के गुलाब के पौधों को बड़ी सतर्कता के साथ लगाया गया है, जो पूरे बाग़ीचे को एक पारलौकिक दृश्य प्रदान करते हैं। इसी परिसर में एक इमामबाड़ा या इमाम की क़ब्र भी स्थित है।

गुलाब बाड़ी शहरके सबसे सुंदर बगीचों में से एक है। एक बड़े भू–भाग में फैले इस स्थल की हरियाली लोगों को सम्मोहित करती है। अवध के तीसरे नवाब शुजा–उद–दौला और उनके परिजनों की यहां समाधि बानी हुई है। यहां विशालकाय गुंबद दीवारों से घिरा हुआ एक शानदार मकबरा है। अंदर जाने के लिए यहां दो विशालकाय प्रवेशद्वार हैं। 8वीं सदी में इस बगीचे में रंगीन गुलाब की विभिन्न किस्मों को लगाया गया था। जो पर्यटकों के लिए एक आकर्षण है।

वायु मार्ग : लखनऊ निकटतम हवाई अड्डा है, यहां से कतर्निया घाट की दूरी 215 कि.मी. है।

रेल मार्ग : अभयारण्य के आस पास में ककरहा, मूर्तिहा, निशंगाराह तथा बिछिया रेलवे स्टेशन हैं, जो गोंडा–बहराइच शाखा रेलवे लाइन (मीटर गेज) पर स्थित हैं। लखनऊ–गोरखपुर की मुख्य रेलवे लाइन पर स्थित गोंडा से होकर भी कतर्निया घाट जा सकते हैं।

सड़क के द्वारा

अभयारण्य लखनऊ से 205 कि.मी., बहराइच से 60 कि.मी., नानपारा मार्ग और नेपाल बोर्डर से लगभग सात कि.मी. दूर है।

ईमेल – vishwranjan@yahoo.com

एक अविस्मरणीय यात्रा

मनाली से लेह तक

– डा0 अमित कुमार सिंह

जाड़े की एक अलसाई सुबह। थोड़ी अलमस्त, थोड़ी सुकून की अंगड़ाई। चाय की गर्म चुस्की और दैनिक जागरण के रविवारिय परिशिष्ट 'झंकार' का अंतिम पेज। इसमें समूचे विश्व के सबसे सुन्दर पर्वतीय मार्गों के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित हुआ था। इस लेख में रोमांचकारी यात्रा की सूची में पांच पर्वतीय मार्गों का नाम शामिल था। रोमांचकारी यात्रा की सूची में पहला स्थान था। मनाली से लेह पर्वतीय यात्रा का।

चाय की चुस्की के साथ इसी वर्ष मनाली से लेह (लद्दाख) यात्रा का एक–एक पन्ना खुलना शुरू हो गया। उन्नीस जून इस भुलक्कड़ को तारीख भी तुरंत याद आ गई। फ्लेश बैक में मनाली की कहानी मस्तिष्क में तरो–ताज़ा होने लगी। 18 जून की शाम से ही हम लेह यात्रा को लेकर उत्साहित एवं रोमांचित थे।

मनाली में सुबह के चार बजे जब हम ट्रैवलर से लेह– लद्दाख की यात्रा पर चले, तब तेज़ बारिश हो रही थी। चार बजे तैयार रहने की चुनौती। शायद इसलिए हमारी रात्रि–नींद डिस्टर्ब रही। ऐसे में यात्रा के आरम्भ से ही हम निंद्रा देवी के आगोश में कब चले गए, हमें कुछ पता ही नहीं चला। मेरे साथ दो अन्य मित्र प्रीतम और सर्वोत्तम भी थे।

रोहतांग दर्रे से हमारी गाडी करीब एक घंटे तक गुजरी। मैं इस नज़ारे को लगातार देखता रहा। मेरे एक अन्य मित्र सर्वोत्तम जी बोल उठे–वाह रे परमात्मा। पौ फटने से पहले का अंधियारा, चांदनी रात में बर्फ पर पड़ती चांदनी। इस वक्त की अनुभूति को शब्दों में समेटना मुश्किल है। सच ही कहा गया है–परमात्मा का दर्शन करना है तो उसे प्रकृति में ढूंढो। मैं हिमालय के दीदार का दीवाना हूँ।

राह का एक मनोरम दृश्य

उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और कश्मीर की अधिकांश पहाड़ियों का मैं लुत्फ़ उठा चूका हूँ, चाहे अमरनाथ–यात्रा का आनद हो या हिमाचल में चिट्कुल–सांग्ला घाटी की सादगी, गंगोत्री की पवित्रता हो या फिर गुलमर्ग–सोनमर्ग की रुमानियत, मैंने पहाड़ों की सुन्दरता का भरपूर आनंद लिया है ।

रोहतांग में चाँद और बादल लुका–छिपी खेल रहे थे। कभी–कभी आकाश बादलों से आच्छादित होने पर काला, कभी बादल से छन कर आती थोड़ी चांदनी और कभी चांदनी का बादल के आलिंगन से बाहर आकर अठखेलियाँ करना, इस प्रेम क्रीड़ा में

*एसोसिएट प्रोफेसर, आर.एस.एम.कॉलेज,धामपुर,बिजनौर, (उ0प्र0)

जब चाँद की रोशनी बर्फ से ढके पहाड़ों पर पड़ रही थी, तो उसके परिणामस्वरुप बर्फ से ढके पहाड़ों की सुन्दरता भी बार–बार अपना अक्स बदल रही थी।

चाँद को प्रतीक बनाकर न जाने कितने गीत, कविताएं और कल्पनाएं रची गयी हैं, लेकिन बादल, चाँद और बर्फ से ढके पहाड़ों का दृश्य देखकर जो अनुभव हुआ, उसका प्रतिबिम्ब किसी गीत में देखने को नहीं मिला है। प्रकृति की इस अनोखी क्रीड़ा में स्वयं ही एक रचना का मन में उठने लगी :–

चाँद/तेरी चांदनी/और/बादलों से/तेरी अठखेलियाँ/तू/बर्फीली पहाड़ियों की/शांति को/भला क्यूं, रही तू उकसा/कामातुर चाँद/ यह तेरी प्रीत है/या प्रलोभन/या फिर/कोई/ रूहानी फलसफा !!

वाकई, यह अद्‌भूत नजारा था। यूं तो मैं पहले भी कई बार रोहतांग घूम चुका था, लेकिन दिन के उजाले में। इस समय रोहतांग से गुजरते हुए करीब–करीब ब्रह्ममुहूर्त का समय था। सुबह की नीरव शांति और बर्फीले रास्तों पर चांदनी की अठखेलियां देखते रहे और यह सिलसिला करीब एक घंटे तक चलता रहा। इन दर्रो के पश्चात् जब हम इस स्वर्ग जैसे अनुभव से आगे बढे, तो हमें कोकसर में चंद्रा नदी देखने को मिली। दर्रों के बाद एकाएक नदी। प्रकृति का यह परिवर्तन अत्यंत सुखद, रोमांचकारी और विस्मयकारी था।

प्रकृति का यही स्वभाव है। ऐसा लगता है कि प्रकृति स्वयं को कहीं दुहराती नहीं है। प्रकृति यांत्रिक भी नहीं है। उसका कोई ढांचा–सांचा नहीं है। हम प्रकृति जैसे नहीं है। इसलिए हम यांत्रिक हैं और थोड़े बोझिल भी। प्रकृति की गोद में हुए यात्रा में अनवरत एक आंतरिक तल्लीनता के साथ–साथ अतरंग–संवाद का आनन्द भी हमारे साथ–साथ चल रहा था।

डिम्पू के बाद हम ट्रांडडप के घने जंगल से होकर गुज़रे। पहाड़, नदी और जंगल का एक साथ दीदार कुछ अद्‌भूत और अविस्मरणीय भी था । इसी राह में हमें दो विपरीत दिशाओं से आती नदियों का दर्शन हुए, पहली, चतरा और दूसरी भागा । इस समूची घाटी में ग़ज़ब की विविधता है।

यह विविधता अविस्मरणीय आनन्द देती है। यही कारण है कि इस पर्वतीय यात्रा को संसार की सबसे रोमांचकारी पर्वतीय यात्रा घोषित किया गया है।

पवित्र नदियों का संगम हम लोगों ने इलाहाबाद में देखा है। संगम पवित्र, दर्शनीय और दिव्य घटना है। किन्तु हमारे समाज ने संगम को गरिमा नहीं दी है। न स्त्री का पुरुष से, न एक जाति का दूसरे से और न ही एक धर्म का दूसरे धर्म से। यद्यपि इस संगम का अनुकूल माहौल बनाया जा सकता है। जबकि प्रेम भी एक संगम है। पर हम भी अहंकार के कारण कहां संगम का लुत्फ़ उठा पाते हैं !!

जिप्सा नामक स्थान भी राह में मिला। यह अत्यंत असमतल था। पेट की पसलियों ने इसका एहसास कराया।

इसके बाद हम लोग एक बार फिर बारलाचा दर्रे से गुज़रे। बर्फीली पहाड़ियों और बर्फ के रास्तों से गुज़रना दिल में कुछ अलग ही गुदगुदी कर रहा था। सूरज सिर पर था। इसकी चमक बर्फ पर पड़ रही थी। इसका दीदार रोहतांग के अनुभव से एकदम अलहदा था। सूरज की रोशनी में बर्फ की चमक अत्यन्त चमकीली थी। यहीं आगे चलकर सूरजताल था। यह एक झील है। पानी शान्त और निश्चिन्त सा, यह चालीस फीसदी जमी हुई थी। पानी थोडा हरा और थोडा नीला प्रतीत हो रहा था। ऐसे अनपेक्षित सौन्दर्य की आभा देखकर आँखें आश्चर्य से अभिभूत थीं।

सूरजताल झील

सूरजताल से आगे सूरचू था। यह स्थान समुद्र तल से 13,800 फुट ऊचाई पर स्थित है। यहां कैम्पिंग की व्यवस्था भी थी। कुछ लोग यहां रुके हुए थे। तेज़, ठंडी हवा बह रही थी, परन्तु साथ ही धूल और अंधड़ भी था।

सूरचू में कैंम्पिंग व्यवस्था

सूरचू ही वह जगह है जहाँ पर जम्मू–कश्मीर और हिमाचल प्रदेश की सीमाएं मिलती हैं। सरहदों को देखना भी रोमांचक अनुभव होता है। इन्हें देखकर यह प्रतीत होता है कि केवल नाम बदलने से एक अदना सा भूगोल समूचे इतिहास, राजनीति, समाज एवं अर्थतंत्र को प्रभावित और प्रेरित करने लगता है।

प्रकृति में कोई विभाजन नहीं है। मनुष्य ही सरहदें बनाता है। फिर, राज्य और देश को अहंकार से जोड़ता है। 'अज्ञेय' ने कहा है कि ''राष्ट्रवाद एक संगठित अहंकार'' है। राष्ट्रवाद नाहक ही लोगों को सुरक्षा और अधिपत्य के नाम पर जगहों को कब्ज़ाने के लिए लड़ाता–भिड़ाता है। निश्चित ही प्रकृति चुपचाप इन बेवकूफियों को देखती होगी। मन ही मन हंसती भी होगी।

पांग में लेखक

सूरचू के बाद हम लोग पांग में रुके। इसकी ऊँचाई 15,280 फीट है। यहां अत्यधिक ठण्ड थी और तापमान शून्य से दो डिग्री सेल्सियस नीचे था।

यहां मुझे फ्रांस के एक दम्पति मिले। उनकी आयु 58 वर्ष की थी और वह साईकिल से लेह के दुर्गम रास्तों में साईकिलिंग का लुत्फ़ उठा रहे थे। उन लोगों से बात करके यही एहसास हुआ कि हम भारतीय तो चालीस की उम्र से ही बूढ़े होने लगते हैं। जिन्दगी में कोई नयापन नहीं, कोई सृजनात्मकता नहीं, जोखिम का भी कोई भाव नहीं। हम तो बस बीमारी की चिंता, बुढ़ापे और फिर मृत्यु पर चिंतन करने लगते हैं।

इसके बाद दृश्य बदलता है।

पांग की पहाड़ियों के बाद लाटो में अचानक हरियाली के दर्शन हुए। यह भी अजूबा था। सूखे और पीले पहाड़ों की दूर–दूर तक फैली श्रृंखला। इस हरियाली का दीदार आश्चर्य जैसा था।

लाटो के बाद अचानक अलग–अलग रंगों की पहाड़ियों के दर्शन होने लगे। गुलाबी, हरी, पीली, भूरी और थोड़ी–थोड़ी काली भी। इन अलग–अलग रंगों के पहाड़ों की मौजूदगी मुझे अन्दर से पुलकित कर रही थी। विविध रंगों के पहाड़ों को देखने का यह मेरा पहला अनुभव था।

भूरे–पीले पहाड़ों की आभा

इन रंग–बिरंगे पहाड़ों का अनुभव भी रोचक था।

हिमाचल के अधिकांश पहाड़ हरे हैं। गंगोत्री–यमुनोत्री की राह में पड़ने वाले अक्सर पहाड़ मटमैले। मसूरी के कैम्पटी फॉल के इर्द–गिर्द पहाड़ थोड़े से सूखे हैं। कश्मीर के पहाड़ सुन्दर हैं। थोड़े हरे, थोड़े भूरे और थोड़े छितरे हुए।

लाटो से लेह के दौरान पहाड़ों की विविधता ही इसकी विशेषता है। हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि रंगों के आधार पर पहाड़ों के भी इतने रंग हो सकते हैं।

ऐसा लगता है कि सचमुच प्रकृति की बगिया में ये पहाड़ अलग–अलग फूलों जैसी अपनी छटा बिखेर रहे हैं। यह नज़ारा लाजवाब था। समूचे विश्व में अनोखा।

लाटो से लेह तक पहुंचते–पहुंचते प्रकृति का नज़ारा बदलने लगता है। मनाली से लाटो तक करीब–करीब निर्जन इलाका दिखाई देता है। अकेले पहाड़, अठखेलियाँ करती नदियां और छोटे –छोटे शान्त तालाब, झील और पृष्ठभूमि में अलमस्त बर्फ की शिलाएं। बीच–बीच में हमें कहीं–कहीं थोड़ी आबादी दिखाई देती है। मुस्तैद खड़े सीमा सुरक्षा बल (बी.एस.एफ़.) के संजीदा जवान। परन्तु लेह से थोड़े पहले बौद्ध स्तूप, सेना की स्थायी छावनी, शहर और सड़कों पर दौड़ते कुछ वाहन दिखाई देने लगते हैं।

निर्जनता और एकांत का सुख ही स्वर्ग जैसा आनंद है। शहर में घुसते ही हमारे ट्रैवलर गाडी में हिंदी फिल्म 'कभी–कभी' का एक गीत बज उठता है।

"तेरे चेहरे से नज़र नहीं हटती, नज़ारे हम क्या देखें"।

इसी गीत का अन्तरा है :–'रंगों की बरखा है, खुशबू का साथ है, किसको पता है कि अब, दिन है कि रात है...

सचमुच मनाली से लेह तक का सफ़र कुछ ऐसा ही सुखद, सुन्दर और स्वप्निल था।

ईमेल :– amitkumarsingh99@gmail.com

(सभी चित्र लेखक ने अपने कैमरे से लिए है।)

पूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की कविता का एक अंश

एक बार एक पत्रकार ने उनसे पूछा, 'आपने न जाने कितने लोगों को नेता बना दिया लेकिन आपसे–ऐसी कौन सी चूक हो गई कि उनमें से कोई भी आपके साथ खड़ा होने को तैयार नहीं है ।' श्री सिंह ने कहा मेरी एक कविता की चार लाइनें सुन लीजिए आपको इसका उत्तर मिल जाएगा।

'मैं और वक्त,

काफिले के आगे आगे चले,

एक चौराहे पर मैं,

एक ओर मुड़ा,

बाकी वक्त के साथ चले गए।'

– श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह

मरूस्थल पर्यटन

स्वर्ण नगरी : जैसलमेर

–अमीर चन्द गोयल*

जैसलमेर को स्वर्ण नगरी भी कहा जाता है। मैं जब जैसलमेर के रेलवे स्टेशन से बाहर निकला तो मेरा ध्यान सामने लगे बोर्ड पर गया। वहां लिखा था, "स्वर्ण नगरी में आपका स्वागत है" मैं इसका मतलब नहीं समझ पाया। मेरे विचार में स्वर्ण नगरी से अभिप्राय धनी प्रदेश था। क्योंकि जैसलमेर मारवाड़ क्षेत्र में आता है और भारतवर्ष में मारवाड़ी समाज को व्यापारी और धनी लोगों में गिना जाता है।

जैसलमेर अर्थात जैसल सिंह नाम के राजा द्वारा मेरू अथवा पर्वत पर बसाया गया शहर। पुराने जमाने से राजा का किला ही शहर होता था। किले को पूरी तरह सुरक्षित बनाया जाता था। युद्ध के समय शत्रु पर उचित वार करने के लिए किले को ऊँचाई पर बनाया जाता था। ताकि शत्रु पर आसानी से विजय प्राप्त की जा सके।

होटल में पहुंच कर वहां मैंने एक व्यक्ति से स्वर्ण नगरी का मतलब पूछा, तो उसने बताया कि यहां का पत्थर सोने की तरह चमकता है, अतः इसे स्वर्ण नगरी कहा जाता है। वास्तव में मैंने देखा कि होटल में लगे पत्थर सोने की तरह चमक रहे थे। जिन पत्थरों पर धूप पड़ रही थी, वे अधिक चमक रहे थे, जिन पर धूप नहीं पड़ रही थी, वे कम चमक रहे थे। ऐसा लग रहा था मानों कोई नवेली दुल्हन बैठी हुई है। जिस प्रकार विवाह के समय दुल्हन के जिन आभूषणों पर बिजली की रोशनी अधिक पड़ती है वे अधिक चमकते हैं और जिन पर रोशनी नहीं पड़ती है वह कम चमकते हैं।

पुराने समय में राजा का किला ही नगर होता था। यहां का किला भी एक पूरा नगर ही है। आज के समय में पुराने किले पुराने राजाओं के परिवार के व्यक्तियों के पास हैं। यह किला 1500 फीट लंबा और 750 फीट चौड़ा है और 250 फीट ऊँचे पर्वत पर बना हुआ है। किले का तहखाना 15 फीट लंबा है। किले के दुर्ग में लगभग 30 फीट की एक श्रृखंला बनायी है। शहर से किले के कुल चार प्रवेश द्वार है, जिनपर पर तोपे भी लगी हुई है।

जैसलमेर दुर्ग मुगल स्थापत्य से अलग है। यहां मुगलकालीन किलों की तड़क भड़क, बाग–बगीचे, नहरें–फव्वारें आदि का पूर्णतः अभाव है, चित्तौड़ के दुर्ग की भांति यहां महल, मंदिर, प्रशासकों व जन–साधारण हेतु मकान बने हुए हैं, जो आज भी जन–साधारण के निवास स्थल है। पर जैसलमेर का किला तो पूरी एक कालोनी है। पर्यटक एक किनारे पर रखी गई एक तोप देख सकते हैं।

बहुत पहले से ही किलों को ऊंचाई पर बनाया जाता था, जिससे कि युद्ध के समय दुश्मन को अधिक से अधिक नुकसान पहुंचाया जा सके। आज इस स्थान से सारा नगर नजर आता है। वहीं पर एक मन्दिर भी बना हुआ है दूसरे किनारे पर किले की निगरानी करने के लिए एक सैनिक चौकी बनी हुई है। इस किले में कहीं तो झोंपड़ीनुमा मकान हैं, तो कहीं दो–तीन कमरों के मकान हैं। कई बड़े मकान भी है। यहां समाज के सभी वर्गों के लोग रहते है। इनमें अमीर भी हैं, गरीब भी हैं। सभी लोग प्यार से रहते है। पर्यटकों के मार्ग पर कुछ दुकानें भी बनी हुई है, जो कि पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

---

*सेवा निवृत, सहायक प्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक, नई दिल्ली

पटवाओं की हवेली :

जैसलमेर में पटवा परिवार में एक सेठ था। उसके सात पुत्र थे। सेठ समझदार था। उसने सातों पुत्रों के लिए सात हवेलियाँ बनवाई। सातों पुत्र उसमें रहते थे। बाद में एक पुत्र ने अपनी हवेली दूसरे सेठ को सन् 1940 में एक लाख पचहत्तर हजार रुपये में बेच दी। उस सेठ ने उस हवेली को संग्रहालय बना दिया। उस हवेली को देखने पर्यटक जाते हैं। उसका किराया एक सौ रुपये है।

हवेली बहुत बड़ी है। एक किनारे से उसमें प्रवेश कराया जाता है और दूसरे किनारे से बाहर निकलते है। हवेली में पुराने राजाओं के हथियार, पहनने के कपड़े, खाना बनाने के बर्तन आदि सब रखे गए हैं। नीचे दालान में पर्यटकों की आकर्षित करने के लिए स्थानीय किस्म के कपड़ों की दुकान भी बनी हुई है। जैसलमेर के सभी मकानों पर, सभी होटलों के बाहर वहाँ का स्थानीय पत्थर लगाया गया है, जो कि सोने की तरह चमकता है। यह चमक कभी कम नहीं होती।

जैसलमेर रेगिस्तान में बसा एक शहर है, जहां पानी की कमी है पर शहर के बाहर एक झील है, जिसमें सारा वर्ष पानी जमा रहता है। शहर को पीने लिए पानी वहीं से दिया जाता है। झील के बीच में एक किनारे मन्दिर बने हुए हैं। परन्तु यह मन्दिर झील के एक किनारे पर ही बने हुए हैं। बाकी तीन किनारों पर किसी प्रकार की आबादी नहीं है। वृक्ष तथा पौधों की हरियाली भी कम ही नजर आती है।

जैसलमेर के किले में दुनिया की सबसे बड़ी किलेबंदी की गई है। इसका निर्माण 1156 ई. में राजपूत शासक रावल जैसल ने किया था, इसीलिये किले का नाम भी उन्ही के नाम पर रखा गया था। यह एक वर्ल्ड हेरिटेज साईट है।

जैसलमेर किला थार मरुस्थल के त्रिकुटा पर्वत पर खड़ा है और यहां काफी ऐतिहासिक लड़ाईयां भी हुई है। किले में भारी पीले रंग के बलुआ पत्थरो की दीवारे बनी है। दिन के समय सूरज की रोशनी में इस किले की दीवारें हल्के सुनहरे रंग की दिखती है। इसी कारण से यह किला सोनार किला या गोल्डन फोर्ट के नाम से भी जाना जाता है। जैसलमेर की ऐतिहासिक धरोहर के रूप में लोग उस किले को देखने आते है।

2013 में कोलंबिया, फ्नोम पेन्ह में हुई 37 वी वर्ल्ड हेरिटेज समिति में राजस्थान के पांच अन्य किलों के साथ जैसलमेर किले को भी यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साईट में शामिल किया है।

सीमा की सुरक्षा

जैसलमेर चूंकि सीमान्त प्रदेश है। अतः सुरक्षा की दृष्टि से आगे सीमा तक जाने की अनुमति नहीं है। पर सीमा सुरक्षा बल के कार्यालय से अनुमति मिलने पर सीमा से कुछ पहले तक जा सकते हैं।

सीमा की सुरक्षा के लिए ऊंची– ऊंची चौकियां बनाई गई हैं। जहां से चौबिसों घंटें, दिन–रात सीमा पर नजर रखी जाती है। रात के समय सर्च लाइट का इस्तेमाल भी किया जाता है। चौकी पर एक बोर्ड लगा है, जिसमें सीमा के उस पार दुश्मन की सेना की टुकड़ी के जवानों की संख्या, उनके कमाण्डर का नाम तथा सीमा से चौकी की दूरी लिखी होती थी। मेरे पूछने पर जवान ने बताया कि हमारे बारे में भी ऐसी सारी सूचना दुश्मन के पास भी होती है।

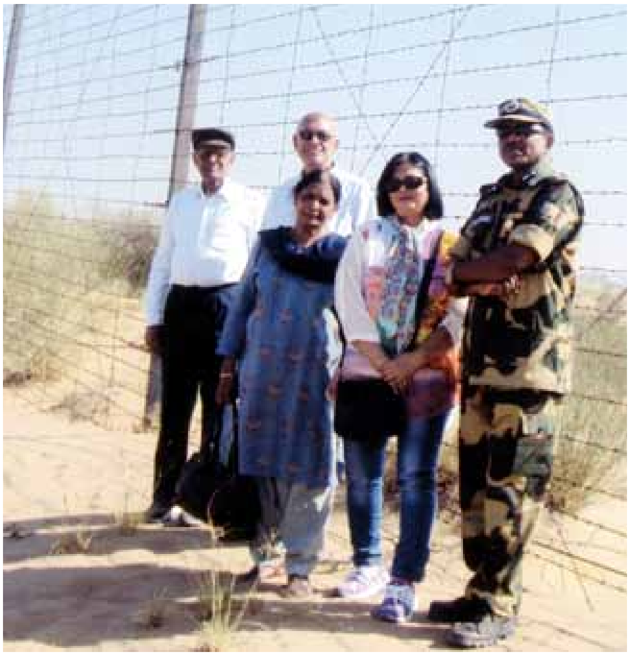

सीमा के पास लेखक (बाएं से दूसरे) तथा अन्य

नियमानुसार अर्ध सैनिक बलों को सीमा की रक्षा करनी होती है। रक्षा करने का समय भी अघोषित युद्ध जैसा ही है। युद्ध की स्थिति में सेना को पीछे भी हटाया जा सकता है, लेकिन अर्ध सैनिक बलों के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं होता। उन्हें तो बस सीमा की रक्षा करते हुए युद्ध करना या मरना होता है। इसलिए इसे अघोषित युद्ध कहा जाता है। इस कार्य में यदि सेना का हस्तक्षेप हो जाता है तो वही अघोषित युद्ध घोषित युद्ध का रूप ले लेता है। युद्ध को टालने के लिए ही अर्ध सैनिक बलों की स्थापना की जाती है।

जैसलमेर की सीमापर बनी चौकी पर लगे एक बोर्ड पर दिन भर होने वाली क्रियाओं का कार्यक्रम भी लिखा हुआ है। मैंने देखा कि उस पर फट्टा परेड भी लिखा हुआ है। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि

सीमा पर लगी तार के साथ–साथ एक लगभग 10 फुट चौड़ा रास्ता बना हुआ है। सुबह तथा शाम को एक चौड़ा फट्टा खींचकर जमीन पर फेरा जाता है, जिससे वहां की जमीन समतल हो जाती है। उस कार्रवाई को फट्टा परेड कहा जाता है।

बहुत अधिक रेत होने के कारण हर आने या जाने वाले के पैरों के निशान उस जमीन पर आ जाते हैं। इसलिए फट्टा परेड से पहले जमीन को देखा जाता है कि कहीं किसी प्रकार के निशान तो नहीं हैं। यदि निशान मिल जाते हैं, तो उन निशानों की पड़ताल की जाती है। वहां इस कार्य में दक्ष लोग हैं, जो बता देते हैं कि निशान किसी जानवर के हैं अथवा व्यक्ति के हैं। वह इतना तक बता सकते हैं कि यदि पदचिन्ह किसी व्यक्ति के हैं तो व्यक्ति किस आयु का होगा तथा वह किस समय यहां से गुजरा होगा और किस ओर गया होगा। इस जांच पड़ताल के बाद उचित कार्यवाही की जाती है। वहां गाएं भी नजर आ रही थीं। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि वे जानवर किसी प्रकार इस सीमा में आ जाते हैं और यहां घूमते रहते हैं। जवान उनके दूध का उपयोग कर लेते हैं।

जैसलमेर का Desert Safari :

दुबई के 'डिजर्ट सफारी' की तर्ज पर ही जैसलमेर से लगभग 42 कि.मी. दूर 'सम' नामक रेत का टिब्बा है, यहां राजस्थान डिजर्ट बनाया गया है। इस स्थान पर टैन्ट लगाए गए हैं। टैन्ट में रहने तथा खाने पीने की समुचित व्यवस्था है। यहां भी बाड़े बनाए गए हैं। बाड़े में एक कोने पर स्टेज बनाया गया है। स्टेज पर राजस्थानी नृत्य चलता रहता है। यहां ऊंट की सवारी भी की जा सकती है।

रेगिस्तान के दृश्यों का आनंद लेने के लिए यह सबसे अच्छा समय सूर्यास्त का है। पर्यटक रेत के टीलों में शिविर के अलावा, ऊंट और जीप की सफारी का आनंद ले सकते हैं। यहां फरवरी और मार्च के महीने में desert festival आयोजित किया

दुबई में Desert Safari

सन् 2013 में मैं दुबई गया था। दुबई में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए Desert Safari दिखाने ले जाते हैं। दुबई शहर के बाहर चारों तरफ रेत ही रेत नजर आती है। वहां अलगी रेगिस्तान नजर आता है। कहीं भी कोई झाड़ी या पौधा नज़र नहीं आता।

वहां रेत के टीलों पर पहले तो कारों की दौड़ दिखाई जाती है। इस कार की दौड़ को देखना बड़ा ही रोमांचक होता है। लगभग 15 मिनट की कार दौड़ दो बार कराई जाती है। लगभग सात–आठ कारें एक साथ होती है।

उसके बाद चौड़े से मैदान को चारों तरफ की बाड़ से घेर कर बैठने का स्थान बनाया गया है। उस स्थान के बीच में लगभग दो फुट ऊंचा स्टेज बनाया गया है। इस स्टेज के चारों तरफ लोगों के बैठने के लिए नीचे कालीन बिछाए गए हैं। आगे छोटी मेज तथा पीछे मसनद लगाए गए हैं। इस बाड़े में घुसने पर दाईं ओर भोजन का प्रबन्ध किया गया है। कोई दर्शक स्वयं भी वहां रखे गए भोजन में से अपनी पसंद का व्यंजन लेकर बैठने के स्थान पर बैठ कर उसका स्वाद ले सकता है। भोजन के समय स्टेज पर नृत्य का कार्यक्रम होता है। इस प्रकार मनोरंजन के साथ साथ भोज भी चलता रहता है।

जाता है उस समय यह जगह एक सांस्कृतिक केंद्र में बदल जाती है। कठपुतली शो, लोक नृत्य, ऊंट दौड़, और सांस्कृतिक कार्यक्रम मुख्य आकर्षण हैं।

स्टेज के सामने मेज लगी हुई हैं। पर्यटक मेजों पर बैठ कर नृत्य का आनन्द लेते हैं। टैन्ट के मालिकों के बैरे कुर्सियों पर बैठे लोगों को पकोड़े आदि खिलाते रहते हैं। पर्यटक जब चाहें खाना भी ले सकते हैं। मनोरंजन के कार्यक्रम के बाद पर्यटक वहीं टैन्ट में रात्रि विश्राम करते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम कालबेलियां नृत्य

एक शापित गांवः कुलधरा

कुलधरा जैसलमेर से लगभग 18 कि.मी. दूर है। पालीवाल समुदाय के इस इलाक़े में 84 गांव थे। उनमें कुलधरा भी एक था। मेहनती और रईस पालीवाल की कुलधरा शाखा ने सन 1290 के आसपास इस गांव में लगभग छह सौ परिवारों ने घर बनाए थे। कुलधरा गांव पूर्ण रूप से वैज्ञानिक तौर पर बना था। ईंट पत्थर से बने इस गांव की बनावट कुछ ऐसी थी कि यहां कभी गर्मी का अहसास नहीं होता था। कहते हैं कि इस को एक दिशा की ओर दरवाजे कुछ इस तरीके से बनाए गए थे कि हवाएं सीधे घर के भीतर होकर गुज़रती थीं। गर्मियों में 45 डिग्री के तापमान में तपते रेगिस्तान में भी कुलधरा के घरों में ठंडक होती थी। आज भी गर्मी में इन वीरान पडे मकानो में जाएं तो आपको ठण्डक का अहसास होता है। गांव के तमाम घर झरोखों के ज़रिए आपस में जुड़े थे इसलिए एक सिरे वाले घर से दूसरे सिरे तक अपनी बात आसानी से पहुंचाई जा सकती थी। घरों के भीतर पानी के कुंड, ताक और सीढियां कमाल के हैं।

कुलधरा के वीरान होने कि कहानी

जब यह गांव इतना विकसित था तो फिर क्या वजह रही कि वह रातों रात वीरान हो गया। इस की बरबादी का कारण गांव के दीवान सालम सिंह को बताया जाता है। कहा जाता है कि वह अय्याश था।

एक बार उसने गांव की एक लड़की को देखा और इस कदर पागल हो गया कि बस किसी तरह से उसे पा लेना चाहता था। अपनी हवस के लिए उसने गांव के लोगों पर दबाव डाला, लेकिन लड़की के घरवालों द्वारा इंकार करने पर, सत्ता के मद में चूर दीवान ने लड़की के घर संदेश भिजवाया कि अगर पूर्णमासी तक उसे लड़की नहीं दी गई तो वह गांव पर हमला करके उसे उठा ले जाएगा। गांव के लोगों के लिए यह मुश्किल खड़ी हो गई थी। उन्हें या तो गांव बचाना था या फिर अपनी बेटी। इस पर निर्णय करने के लिए सभी 84 गांव वाले एक मंदिर पर इकट्ठा हुए और पंचायत ने फैसला किया कि कुछ भी हो जाए अपनी बेटी उस दीवान को नहीं देंगे। फिर क्या था, गांव वालों ने गांव खाली करने का निर्णय कर लिया और रातों रात सभी 84 गांव आंखों से ओझल हो गए। जाते–जाते उन्होंने श्राप दिया कि आज के बाद इन घरों में कोई नहीं बस पाएगा। आज भी वहां की हालत वैसी ही है जैसी उस रात थी जब लोग इसे छोड़ कर गए थे।

आज भी उस कुलधारा गांव के खण्डहर मौजूद हैं। सरकार ने नमूने के तौर पर तथा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए एक मकान को ठीक किया हुआ है। पास में एक मन्दिर भी है। चूंकि यहां के निवासी व्यापारी थे, अतः घर में धन रखने का सुरक्षित स्थान आज भी नजर आता है। धन की सुरक्षा के साथ–साथ व्यापार के सामान की भी सुरक्षा का उचित प्रबन्ध था। मकान की दीवारें तथा फर्श गोबर से लीपे जाते थे। घर में मनोरंजन का स्थान भी नजर आया इसी प्रकार मन्दिर भी सुन्दर बना हुआ था। वैसे वहां वर्षा तो नहीं होती, फिर भी पानी निकलने का उचित प्रबंध किया हुआ है।

कुलधरा का प्रवेश द्वार

तनोठ माता

तनोठ का मंदिर भारत–पाक सीमा के निकट है। यह मंदिर लगभग 1200 साल पुराना है और तन्नोठ माता को आवड़ माता के नाम से भी जाना जाता है।

तनोट राय को हिंगलाज माता का ही एक रूप कहा है, हिंगलाज माता का मंदिर सिंध (पाकिस्तान) में स्थापित है। भाटी राजपूत नरेश तणुराव ने विक्रमी संवत 828 में तनोठ का मंदिर बनवाकर मूर्ति स्थापित की थी। भाटी राजपूत तथा जैसलमेर के आसपास के इलाकों के लोग आज भी श्रृद्धा से तन्नोठ माता को पूजते आ रहे है।

मंदिर के एक पुजारी इस मंदिर के इतिहास के बारे में बताते हैं कि बहुत समय पहले मामड़िया नाम का एक चारण था, जिसके कोई संतान नहीं थी। उसने संतान प्राप्ति के लिए लगभग सात बार हिंगलाज माता की पैदल यात्रा की। एक रात को उस चारण को स्वप्न में आकर माता ने पूछा कि तुम्हें बेटा चाहिए या बेटी, तो चारण ने कहा कि आप ही मेरे घर पर जन्म ले लो। हिंगलाज माता की कृपा से उस चारण के घर पर सात पुत्रियों ने जन्म लिया।

> **कहा जाता है कि भारत और पाकिस्तान के मध्य 1965 की लड़ाई में पाकिस्तान के सैनिकों ने मंदिर पर कई बम गिराए थे लेकिन माँ की कृपा से एक भी बम नहीं फट सका था। तभी से हमारी सेना और सीमा सुरक्षा बल के जवान तनोठ माता के प्रति काफी श्रद्धा भाव रखते हैं। 1965 में हुए भारत–पाक युद्ध के बाद से आज तक तन्नोठ माता की पूजा अर्चना का कार्य सीमा सुरक्षा बल के सैनिकों द्वारा किया जाता है।**

सबसे बड़ी पुत्री का नाम घड़ियाली था। सातों ही पुत्रियां बहुत सुन्दर थीं। गांव के आस पास के कुछ पठान उन लड़कियों पर मुग्ध हो गए और उस चारण के पास आकर उसकी पुत्रियों से उनके विवाह करने के लिए कहा। उन्होंने उसे धमकी भी दी कि यदि शीघ्र विवाह नहीं किया तो वह उसे मार कर उन लड़कियों को उठा कर ले जाएंगे। वह चरण उन पठानों से अपनी बेटियों का विवाह करना नहीं चाहता था। अतः वह उदास रहने लगा। अन्त में एक दिन पठानों ने उस चारण से कहा कि कल वे बारात लेकर आएंगे और लड़कियों को ले जाएंगे।

उन सभी बहनों ने अपने पिताजी को तसल्ली दी और कहा कि वे घबराएं नहीं। उन पठानों को आने दो। जब वे पठान आए तो उन्होंने देखा कि वहां तो एक ही लड़की बैठी है। बाकि छः कहां थी? उन्होंने सारे गांव में उन लड़कियों को ढूंढ़ा पर वे नहीं मिली। बस सबसे बड़ी घड़ियाली ही सामने थी। घड़ियाली भी बहुत सुन्दर थी। पर अब उससे एक ही पठान शादी कर सकता था। उस चक्कर में वह आपस में लड़ने लगे और एक दूसरे से लड़ते हुए सातों ही पठान मर गए।

वास्तव में वह सातों बहनें अपनी सबसे बड़ी बहन घड़ियाली में समा गई थीं। उनकी मृत्यु के बाद वे सातों बहनें अपने रूप में वापस आ गई। इस घटना के बाद लोग उन सातों बहनों को देवी का रूप मान कर उन्हें पूजने लगे। उस इलाके में सात अलग–अलग स्थानों पर उन सात बहनों के सात मन्दिर बनाए गए, लेकिन समय के साथ साथ वे मन्दिर ढह गए।

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि जैसलमेर निवासी राजपूत तनोठ रॉय को घड़ियाली की छोटी बहन तन्नोठी ने स्वप्न में बताया कि एक खास जगह पर खोदने से उसकी मूर्ति निकलेगी। राजपूत ने सपने

की बात गांव वालों को बताई। गांव वालों की सहायता से उस राजपूत ने उस स्थान पर खुदाई की और उस मूर्ति को निकाल लिया। उसी स्थान पर एक छोटा सा मन्दिर बना कर मूर्ति की स्थापना कर दी गई। लोग वहां पूजा पाठ करने लगे। बाद में भारत का बंटवारा होने पर यह स्थान भारत की सीमा में आ गया।

आज इस मन्दिर की देखरेख और सुरक्षा के मद्देनजर सीमा सुरक्षा बल के जवान करते हैं।

1965 के युद्ध में पाकिस्तान की सेना ने 16 नवम्बर, 1965 को आगे बढ़कर शाहगढ़ तक – अर्थात सीमा के अंदर तक – कब्जा कर लिया और तन्नोठ को चारों ओर से घेरने की कोशिश में सफल नहीं हो पा रहे थे। तन्नोठ माता के मन्दिर के आसपास सुरक्षा में तैनात सीमा सुरक्षा बल के एक जवान को सपने में तनोटा माता ने दर्शन दिए और कहा कि सभी जवानों को मेरे मन्दिर के आंगन में इकट्ठा होने के लिए कह दो। उस जवान ने तुरन्त ही सभी जवानों को मन्दिर के आंगन में इकट्ठा कर लिया। उसने उन जवानों को उस सीमा से बाहर जाने से मना कर दिया।

पाकिस्तानी सेना ने उस दिन लगभग 3000 बम बरसाए, लेकिन संयोग से मंदिर और उसके आसपास के गांवों के घरों को कोई खरोंच तक नहीं आई। हालांकि, वहां की आबादी को तो पहले ही वहां से हटा लिया गया था। लगभग 450 बम तो मंदिर में ही पड़े मगर उनमें से भी एक भी नहीं फटपाया था।

युद्ध में शामिल पाकिस्तानी सैनिक खुद इसके गवाह रहे हैं। युद्ध के बाद एक पायलट ने लिखा था कि जब जहाज से बम गिराते थे तो उन्हें नीचे तालाब के पास एक लड़की बैठी दिखती थी। वह कुछ इशारा करती थी।

माता के इन्हीं अदभुत चमत्कारों से यह मंदिर भारतीय सेना की श्रद्धा का केन्द्र बन गया है।

मैने वहां तैनात कमांडर से पूछा कि 1965 की लड़ाई के समय यहां कितने जवान थे। उसने बताया कि उस समय यहां आठ जवान थे। केवल आठ जवानों ने ही पाकिस्तानी सेना को इस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ने दिया। इतनी भीषण बमबारी के बाद

भी आठों जवान बच गए थे किसी को कोई खरोंच तक नहीं आई थी।

आज भी यह बम पर्यटकों और भक्तों को दिखाने के लिए बने मंदिर के संग्रहालय में रखे हैं।

इस घटना के बाद मंदिर की देखरेख का दायित्व सीमा सुरक्षा बल ने ले लिया है। यहां प्रति वर्ष मेला लगता है। इसको ध्यान में रखते हुए मंदिर में पानी तथा शौचालय आदि की व्यवस्था की गई है। पुराना मंदिर छोटा था। अतः इसके साथ ही बड़ा मंदिर बनाया गया है।

साथ ही मंदिर का प्रांगण भी बड़ा किया गया है। इसके साथ ही भक्तों के ठहरने के लिए 10 कमरे भी बनाए गए है। माता के दर्शन हेतु आने वाले भक्त अपनी मन्नत के लिए मंदिर के बाहर बने जंगले में धागा, कपड़ा या रुमाल बांध देते हैं। श्रृद्धालुओं का विश्वास है कि उस धागे या कपड़े को देख कर माता उनकी रक्षा करती रहेगी और उनकी मनोकामना पूरी होगी। जो भी पर्यटक जैसलमेर की यात्रा करने आते हैं और माता का आशीर्वाद लेने तनोठ अवश्य ही जाते हैं। सीमा सुरक्षा बल का एक जवान ही वहां पंडित जी का काम करता है।

तन्नोठ मंदिर केवल सड़क मार्ग से ही जा सकते हैं। जैसलमेर शहर से लगभग 130 कि.मी. दूर पूरा रास्ता विश्व प्रसिद्ध थार रेगिस्ता्न से गुजरता है। इसलिए गर्मी बहुत अधिक होती है। लेकिन आपको रास्ते में छोटे–मोटे हरियाले पेड़ पौधे और आस पास छोटे गांव भी दिखाई देंगे जिन्हें देखकर आंखों को सकून मिलता है। यदि मानसून के मौसम में जाएं तो कुछ राहत मिल सकती है।

टैंकों का कब्रिस्तान यानि लौंगेवाल

1947 में भारतवर्ष का बंटवारा हुआ और दो देश हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान बन गए। दोनों देशों के बीच धरती पर सीमाएं खिंच गई। जैसलमेर में भी जमीन पर रेखाएं खींच दी गई। जैसलमेर तो रेगिस्तान है। यहां भी रेत की आंधी उड़ती रहती है। रेत को मनुष्य द्वारा खींची गई रेखाओं का ज्ञान नहीं है। अतः कभी तो वह रेत भारतवर्ष की सीमा में तथा कभी पाकिस्तान की सीमा में एक टीले के रूप में प्रकट हो जाती है। प्रकृति ने ही मनुष्य को बनाया है पर वह स्वयं मनुष्य के समान संकीर्ण मानसिकता वाली नहीं है। मनुष्यों द्वारा बनाई गई सीमाओं को प्रकृति नहीं मानती। दोनों देशों की सीमा रेखा पर पिरामिड की शक्ल के चौकोर खम्बे लगा दिए गए। इन खम्बों की ऊंचाई लगभग छः फीट है। उन खम्बों पर संख्या लिख दी गई है ताकि बीच में से कोई खम्बा कम न हो जाए।

तन्नोठ माता की कृपा का जिक्र अधूरा ही रह जाएगा अगर इसमें लौंगेवाल का उल्लेसख न किया जाए। वह चार दिसम्बर, 1971 की रात थी जब जैसलमेर जिले की पश्चिमी सीमा पर थार रेगिस्तान में लौंगेवाल सीमा पर पंजाब रेजिमेंट की एक कम्पनी ने मां की कृपा से लौंगेवाल में पाकिस्तान की पूरी टैंक रजिमेंट को धूल चटा दी और लौंगेवाल में पाकिस्तानी

लौंगेवाल में लेखक और उनकी पत्नी

टैंकों का कब्रिस्तान बना दिया। लौंगेवाल सीमा तन्नोंठ माता से लगभग 50 किलो मीटर दूर है।

पाकिस्तानी सेना ने पूर्वी पाकिस्तान में हो रही जबरदस्त हार देख कर सोचा कि अगर पश्चिमी क्षेत्र में भारत के कुछ इलाकों पर कब्जा कर लिया जाए तो भारत पर दबाव बना सकते थे। इस कड़ी में उन्होंने जैसलमेर पर कब्जा करने की योजना बनाई क्योंकि उस समय भारत का सारा ध्यान पूर्वी सीमा पर लगा हुआ था। पश्चिम में सेना कम थी। लौंगेवाल की चौकी पर कुल 120 जवान थे। 'लौंगेवाल में नाश्ता, रामगढ़ में लंच और जोधपुर में डिनर' के सपने का आदेश पाकर पाकिस्तानी सैनिक आधी रात में भारतीय सीमा की ओर बढ़े। उस समय वहां मेजर कुलबीर सिंह चांदपुरी कमांडर थे। जब उन्हें पता चला कि पाकिस्तानी सेना ने जबरदस्त हमला कर दिया है तो उन्होंने ऊपर से सहायता मांगी। चूंकि रात का समय था, इसलिए उन्हें आदेश किए गए कि वहीं डटे रह कर दुश्मन को रोको और अगर हालात बेकाबू हो तो पीछे हटकर रामगढ़ आ जाओ। कम से कम छः घंटे से पहले सहायता मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। कुलबीर ने पीछे हटने के बजाय वहीं डट कर मुकाबला करने का फैसला किया और जिस तरह से उस चौकी पर नेतृत्व किया भी आज भी भारतीय सेना में एक मिसाल माना जाता है।

मेजर कुलबीर सिंह ने सारे हालात को देखते हुए युद्ध का सामना किया और 12 टैंक ध्वस्त कर दिए। सुबह उजाला होते ही भारतीय वायुसेना सहायता के लिए आ गई। उस समय हमारी वायुसेना के पास रात में देखने के उपकरण नहीं थे। वायुसेना के आते ही सब कुछ बदल गया। वायुसेना ने जमकर बमबारी की और पाकिस्तान के 22 टैंकों को नष्ट कर डाला। वायुसेना के इतिहास में शायद पहली

बार हुआ होगा कि जैसलमेर से हमारे लडाकू जहाजों को धूल के कारण कुछ नहीं दिख रहा था और वे सड़क को देखते हुए ही 'लौंगेवाल' आ पहुंचे। इस लड़ाई में भारतीय सेना के केवल दो जवान शहीद हुए जबकि पाकिस्तानी सेना के सैंकड़ों सैनिक मारे गए और उनके टैंक और गाड़िया भी नष्ट कर दी गई। कुछ घंटें पहले ही जोधपुर पर कब्जा करने वाली पाकिस्तानी सेना अब अपने इलाको को बचाने की फिक्र में लग गई।

विश्व में शायद ही ऐसा कोई स्थान होगा, जहां इतने कम समय में दुश्मन के टैंकों को नेस्तनाबुद कर दिया गया था। 12 टैंक थल सेना ने 22 टैंक वायुसेना ने कुल मिलाकर 34 टैंक तोड़े गए। इसीलिए लोंगोवाल को 'टैंकों का कब्रिस्तान' भी कहा जाता है। आज भी लौंगेवाल में पाकिस्तानी टैंकों और दूसरे वाहनों के टुकड़े इधर उधर बिखरे पड़े मिलते हैं।

लौंगेवाल में युद्ध की याद में एक विजय स्तम्भ स्मारक भी बनाया गया है और प्रति वर्ष 16 दिसम्बर को मेला लगाया जाता है।

राजस्थान के रेगिस्तान को लेकर पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी बहुत चिन्तित थी। कहा जाता है कि उन्होंने रेगिस्तान को फैलने से रोकने के लिए दो काम किये थे। वैज्ञानिकों की सलाह से हवाई जहाज से ऐसे पौधों के बीज उस स्थान पर डाले गए, जिनको पानी की बहुत ही कम जरूरत होती है। इसलिए, स्थान–स्थान पर कीकर के पेड़ तथा झाड़िनुमा पौधे नजर आते हैं। उसी प्रकार उन्होंने पंजाब में भाखड़ा नांगल से नहर निकाल कर इस इलाके में पानी की व्यवस्था भी कर दी। इस नहर का नाम इन्दिरा नहर है। दुबई में रेगिस्तान में कोई झाड़ी नजर नहीं आती, पर यहाँ छोटी–छोटी झाड़ियाँ नजर आती हैं।

इन्दिरा नहर के आने से यहां खेती भी की जाती है। एक विशेष प्रकार की फलीं यहीं मिलती है। इसी प्रकार यहां सफेद सीमेंट बनाने के कारखाने भी लगाए गए हैं।

रेगिस्तान का मतलब वर्षा का कम होना है। इसका मतलब यहां धूप खूब निकलती है। सरकार

ने इस सौर ऊर्जा का उपयोग बिजली उत्पन्न करने में किया है। इसी प्रकार वृक्षों की कमी के कारण आंधियाँ भी बहुत चलती है। उस हवा से पवन चक्की द्वारा बिजली का उत्पादन किया जाता है। इस प्रकार रेगिस्तान का उचित प्रयोग किया जाता है। इनसे रेगिस्तान का फैलाव भी रुका तथा लोगों को आय का स्रोत भी मिला।

आपको जब कभी भी अवसर मिले जैसलमेर जरूर देख कर आएं

विश्व में केवल छः चीजें ही वैध हैं।

1.धूप 2.आराम 3.व्यायाम 4.निश्चित मात्रा में भोजन 5.आत्मविश्वास और 6. अच्छे मित्र।

इन छः बातों का ध्यान रखें और जीवन का आनंद लें।

–रत्न टाटा

रूसी कहानी

दुख

– मूल लेखक : अन्तोन चेखव
*अनुवाद : सुशांत सुप्रिय

"मैं अपना दुखड़ा किसे सुनाऊँ ? "

शाम के धुँधलके का समय है। सड़क के खम्भों की रोशनी के चारों ओर बर्फ़ की एक गीली और मोटी परत धीरे–धीरे फैलती जा रही है। बर्फ़बारी के कारण कोचवान योना पोतापोव किसी सफ़ेद प्रेत–सा दिखने लगा है। आदमी की देह जितनी भी मुड़ कर एक हो सकती है, उतनी उसने कर रखी है। वह अपनी घोड़ागाड़ी पर चुपचाप बिना हिले–डुले बैठा हुआ है। बर्फ़ से ढँका हुआ उसका छोटा–सा घोड़ा भी अब पूरी तरह सफ़ेद दिख रहा है। वह भी बिना हिले–डुले खड़ा है। उसकी स्थिरता, दुबली–पतली काया और लकड़ी की तरह तनी सीधी टांगें ऐसा आभास दिला रही हैं जैसे वह कोई सस्ता–सा मरियल घोड़ा हो।

योना और उसका छोटा–सा घोड़ा, दोनों ही बहुत देर से अपनी जगह से नहीं हिले थे। वैसे तो वह खाने के समय से पहले ही अपने बाड़े से निकल आए थे, पर अभी तक उन्हें कोई सवारी नहीं मिली थी।

"ओ गाड़ी वाले, विबोर्ग चलोगे क्या ? " योना ने अचानक सुना, "विबोर्ग !"

हड़बड़ाहट में वह अपनी जगह से उछल पड़ा। अपनी आँखों पर जमा हो रही बर्फ़ के बीच से उसने धूसर रंग के कोट में एक अफ़सर को देखा, जिसके सिर पर उसकी टोपी चमक रही थी।

"विबोर्ग ! "अफ़सर ने एक बार फिर कहा, "अरे, सो रहे हो क्या? मुझे विबोर्ग जाना है।"

चलने की तैयारी में योना घोड़े की लगाम खींचने लगा तो घोड़े की गर्दन और पीठ पर पड़ी बर्फ़ की परतें नीचे गिर जाती पड़ी। अफ़सर के पीछे बैठने के पर कोचवान ने घोड़े को पुचकारते हुए उसे आगे बढ़ने का आदेश दिया। घोड़ा पहले अपनी गर्दन सीधी करता है, फिर लकड़ी की तरह सख़्त दिख रही अपनी टाँगों को मोड़ता है और अंत में अपनी अनिश्चयी शैली में आगे बढ़ना शुरू कर देता है। योना ज्यों ही घोड़ा–गाड़ी आगे बढ़ाई, अँधेरे में आ–जा रही भीड़ में से उसे सुनाई देता है, "अबे, क्या कर रहा है, जानवर कहीं का ! इसे कहाँ ले जा रहा है, मूर्ख ! दाएं मोड़ !"

"तुम्हें तो गाड़ी चलाना ही नहीं आता ! दाहिनी ओर रहो !" पीछे बैठा अफ़सर गुस्से से चीख़ने लगा।

फिर रुक कर, थोड़े संयत स्वर में वह कहता है, "कितने बदमाश हैं ...सब के सब !" और मज़ाक करने की कोशिश करते हुए वह आगे बोला, "लगता है, सब ने क़सम खा ली है कि या तो तुम्हें धकेलना है या फिर तुम्हारे घोड़े के नीचे आ कर ही दम लेना है ! "

कोचवान योना ने मुड़ कर अफ़सर की ओर देखा और उसके होठ ज़रा–सा हिले, शायद वह कुछ कहना चाहता था। अफ़सर ने उससे पूछने लगा।

"क्या कहना चाहते हो तुम ?"

योना ज़बर्दस्ती अपने चेहरे पर एक मुस्कराहट ले आया और कोशिश करके फटी सी आवाज़ में कहने लगा, "मेरा इकलौता बेटा बारिन इस हफ़्ते गुज़र गया

*सम्पतिः लोकसभा, भारत सरकार में अधिकारी

साहब !"

" अच्छा ! कैसे मर गया वह ? "

योना अपनी सवारी की ओर पूरी तरह मुड़ कर बोलता है, "क्या कहूँ, साहब! डॉक्टर तो कह रहे थे, सिर्फ़ तेज़ बुखार था। बेचारा तीन दिन तक अस्पताल में पड़ा तड़पता रहा और फिर हमें छोड़ कर चला गया ... भगवान की मर्ज़ी के आगे किसकी चलती है !"

" अरे, शैतान की औलाद, ठीक से मोड़ !" अँधेरे में कोई चिल्लाया, "अबे ओ बुड्ढ़े, तेरी अक़्ल क्या घास चरने गई है ? अपनी आँखों से काम क्यों नहीं लेता ? "

"ज़रा तेज चलाओ घोड़ा .. और तेज ..." अफ़सर चीख़ा, "नहीं तो हम कल तक भी नहीं पहुँच पाएंगे! ज़रा और तेज चलाओ....!" कोचवान एक बार फिर अपनी गर्दन ठीक करते हुए, सीधा हो कर बैठा और रुखाई से अपना चाबुक हिला कर घोड़े को डराने लगा। बीच–बीच में वह कई बार पीछे मुड़ कर अपनी सवारी की तरफ़ देखता रहा, लेकिन उस अफ़सर ने अब अपनी आँखें बंद कर लीं जिससे साफ़ लग रहा है कि वह इस समय कुछ भी सुनना नहीं चाहता था।

अफ़सर को विबोर्ग पहुंचा कर, योना ने एक शराबख़ाने के पास गाड़ी खड़ी दी और एक बार फिर उकडूँ हो कर सीट पर दुबक गया। दो घंटे बीत जाने पर भी कोई सवारी नहीं आई। तभी फुटपाथ पर पतले रबड़ के जूतों के घिसने की ' चूँ–चूँ , चीं–चीं ' आवाज़ के साथ तीन लड़के झगड़ते हुए वहां आ गए। उन किशोरों में से दो लंबे और दुबले–पतले, जबकि तीसरा थोड़ा कुबड़ा और नाटा सा था।

"ओ गाड़ीवाले! पुलिस ब्रिज चलोगे क्या ?" कुबड़ा लड़का एकदम कर्कश स्वर में बोला, "हम तुम्हें बीस कोपेक देंगे।"

* * *

योना ने घोड़े की लगाम खींचकर उसे आवाज़ लगाई, जो चलने का निर्देश होता है। हालाँकि इतनी दूरी के लिए बीस कोपेक ठीक भाड़ा नहीं है, पर एक रूबल हो या पांच कोपेक हों, उसे अब कोई एतराज़ नहीं .. उसके लिए अब सब एक ही है। तीनों किशोर सीट पर एक साथ बैठने के लिए आपस में काफ़ी गाली–गलौज और धक्कम–धक्का करते रहे। बहुत सारी बहस और बदमिज़ाजी के बाद अंत में वे इस नतीजे पर पहुंचे कि कुबड़े लड़के को खड़ा ही रहना चाहिए क्योंकि वही सबसे ठिगना है।

"ठीक है, अब तेज़ चलाओ!" कुबड़ा लड़का नाक से बोला और उसने आगे आकर, अपनी जगह ले ली, जिससे उसकी सांसें योना को अपनी गर्दन पर पड़ती सी महसूस होने लगीं।

"तुम्हारी ऐसी की तैसी ! क्या सारे रास्ते तुम इसी ढेंचू रफ़्तार से चलोगे ? क्यों न तुम्हारी गर्दन ... !"

"दर्द के मारे मेरा तो सिर फटा जा रहा है।" उनमें से एक लम्बा लड़का कहने लगा,"कल रात दोंकमासोव के यहां मैंने और वास्का ने कोंयाक की पूरी चार बोतलें चढ़ा लीं।"

"मुझे समझ में नहीं आता कि आख़िर तुम इतना

झूठ क्यों बोलते हो ? तुम एक दुष्ट व्यक्ति की तरह झूठे हो !" दूसरा लम्बा लड़का गुस्से में बोला।

"भगवान क़सम ! मैं सच कह रहा हूँ !"

" हाँ , हाँ , क्यों नहीं ! तुम्हारी बात में उतनी ही सच्चाई है जितनी इसमें कि सुई की नोक में से ऊँट निकल सकता है !"

उन लड़कों की बातें सुन कर योना को हंसी आने लगी, वह खीसें निपोर कर बोला, "हें, हें, हें ... आप सब कितने मज़ाक़िया हैं !"

"अरे, भाड़ में जाओ तुम !" कुबड़ा जैसे क्रुद्ध हो उठा था। "बुढ़ऊ, तुम हमें कब तक पहुँचाओगे ? चलाने का यह कौन–सा तरीका है ? कभी चाबुक का इस्तेमाल भी कर लिया करो ! ज़रा ज़ोर से चाबुक चलाओ, मियाँ ! तुम आदमी हो या आदमी की दुम !"

योना यूँ तो लोगों को देख रहा है, पर धीरे–धीरे अकेलेपन का एक तीव्र एहसास उसे ग्रसता चला जा रहा था। कुबड़ा फिर से गालियां बकने लगा, लम्बे लड़कों ने किसी लड़की नादेज़्दा पेत्रेवना के बारे में बात करनी शुरू कर दी।

योना ने उनकी ओर कई बार देखा था। वह किसी क्षणिक चुप्पी की प्रतीक्षा के बाद मुड़कर बुदबुदाया, "मेरा बेटा ... इस हफ़्ते गुज़र गया।"

"तो... हम सबको एक दिन मरना ही है।" कुबड़े ने ठंडी साँस ली और खाँसी के एक दौरे के बाद होठ पोंछे। "अरे, ज़रा जल्दी चलाओ ... खूब तेज ! दोस्तो, मैं इस धीमी रफ़्तार पर चलने को तैयार नहीं। आख़िर इस तरह यह हम सबको कल तक पहुँचाएगा ?"

"अरे, अपने इस घोड़े की गर्दन थोड़ी गुदगुदाओ ! "

"सुन लिया ... बुड्ढे ! ओ नर्क के कीड़े ! मैं तुम्हारी गर्दन की हड्डियाँ तोड़ दूँगा ! अगर तुम जैसों की खुशामद करते रहे तो हमें पैदल चलना पड़ जाएगा ! सुन रहे हो न बुढ़ऊ ! सुअर की औलाद ! तुम पर कुछ असर पड़ रहा है या नहीं ? "

योना इन शाब्दिक प्रहारों को सुन तो रहा था, पर उन्हें महसूस नहीं कर रहा था।

उसने, फिर 'हें , हें ' करके हंसने की कोशिश की, "आप साहब लोग हैं। जवान हैं ... भगवान आपका भला करे !"

"बुढ़ऊ, क्या तुम शादी–शुदा हो ?" उनमें से एक लंबा लड़के ने पूछा।

" मैं ? आप साहब लोग बड़े मज़ाक़िया हैं ! अब बस मेरी बीवी ही है ... वह अपनी आंखों से सब कुछ देख चुकी है। आप समझ गए न मेरी बात। मौत बहुत दूर नहीं है ... मेरा बेटा मर चुका है और मैं ज़िंदा हूँ ... कैसी अजीब बात है यह। मौत ग़लत दरवाज़े पर पहुंच गई ... मेरे पास आने की बजाए वह मेरे बेटे के पास चली गयी ... "

योना पीछे मुड़कर बताना चाहता था कि उसका बेटा कैसे मर गया? पर उसी समय कुबड़े ने एक लम्बी साँस खींच कर कहा, "शुक्र है खुदा का ! आख़िर मेरे साथियों को पहुँचा ही दिया !" और योना उन सबको अंधेरे फाटक के पार धीरे–धीरे ग़ायब होते देखता रहा। एक बार फिर वह खुद को बेहद अकेला महसूस कर रहा था। सन्नाटे से घिरा हुआ ... उसका दुख जो थोड़ी देर के लिए कम हो गया था, फिर लौट आया और इस बार वह और भी ताक़त से उसके हृदय को चीर दिया। बेहद बेचैन हो कर वह सड़क की भीड़ को देखने लगा, गोया ऐसा कोई आदमी तलाश कर रहा हो जो उसकी बात सुने। पर भीड़ उसकी मुसीबत की

ओर ध्यान दिए बिना आगे बढ़ जाती। उसका दुख असीम है। यदि उसका हृदय फट जाए और उसका दुख बाहर निकल आए तो वह मानो सारी पृथ्वी को भर देगा। लेकिन फिर भी उसे कोई नहीं देखता। योना को टाट लादे एक कुली दिखा और वह उससे बात करने के लिए उसकी ओर बढ़ा।

"वक्त क्या हुआ है, भाई ?" उसने कुली से पूछा।

"नौ से ज़्यादा बज चुके हैं। तुम यहां किसका इंतज़ार कर रहे हो? अब कोई फ़ायदा नहीं, लौट जाओ।" कहते हुए वह कुली आगे बढ़ गया।

योना ने कुछ देर तक इधर उधर देखा, फिर उकडू हालत में अपने ग़म में डूब गया। वह समझ जाता है कि मदद के लिए लोगों की ओर देखना बेकार है। वह इस स्थिति को और नहीं सह सका और 'अस्तबल' के बारे में सोच, घोड़े की लगाम खींची। उसका घोड़ा मानो सब कुछ समझ कर दुलकी चाल से चलने लगा।

***

लगभग डेढ़ घंटे बाद योना एक बहुत बड़े गंदे–से स्टोव के पास बैठा हुआ था। स्टोव के आस–पास ज़मीन और बेंचों पर बहुत से लोग खर्राटे ले रहे थे। दमघोंटू गर्मी की हवा से भरे एक बड़े कमरे में सोये हुए लोगों की ओर देखते हुए योना ने खुद को खुजलाया .. उसे अफ़सोस हुआ कि वह इतनी जल्दी क्यों चला आया। वह सोचने लगा कि आज तो मैं घोड़े के चारे के लिए भी नहीं कमा पाया।

एक युवा कोचवान एक कोने में थोड़ा उठकर बैठा और आधी नींद में कुछ बड़बड़ाया। फिर वह पानी की बालटी की तरफ़ देखने लगा तो योना ने उससे पूछा, "क्या तुम्हें पानी चाहिए?"

"यह भी कोई पूछने की बात है ? "

"अरे नहीं, दोस्त ! तुम्हारी सेहत बनी रहे ! लेकिन क्या तुम जानते हो कि मेरा बेटा अब इस दुनिया में नहीं रहा ... तुमने सुना क्या? इसी हफ़्ते ... अस्पताल में ... बड़ी लम्बी कहानी है।"

योना अपने कहे का असर देखना चाहता है, पर वह कुछ नहीं देख पाया क्योंकि उस युवक ने अपना चेहरा छिपा लिया है और दोबारा गहरी नींद में चला गया है। बूढ़ा एक लम्बी साँस ले कर अपना सिर खुजलाता रहा। उसके बेटे को मरे एक हफ़्ता हो गया लेकिन इस बारे में वह किसी से भी ठीक से बात नहीं कर पाया है। बहुत धीरे–धीरे और बड़े ध्यान से ही यह सब बताया जा सकता है कि कैसे उसका बेटा बीमार पड़ा, कैसे उसने दुख भोगा, मरने से पहले उसने क्या कहा और कैसे उसने दम तोड़ दिया। दफ़न के वक्त की एक–एक बात बतानी भी ज़रूरी है और यह भी कि उसने कैसे अस्पताल जा कर बेटे के कपड़े लिए ? उस समय उसकी बेटी अनीसिया गांव में ही थी। उसके बारे में भी बताना ज़रूरी है। उसके पास बताने के लिए इतना कुछ है कि सुनने वाला ज़रूर एक लम्बी सांस लेगा और उससे सहानुभूति जताएगा। औरतों से बात करना भी अच्छा है, हालांकि वे बेवकूफ़ होती हैं। उन्हें रुला देने के लिए तो भावुकता भरे दो शब्द ही काफ़ी होते हैं। योना सोचने लगा कि चलूं ... ज़रा अपने घोड़े को भी देख लूं....। सोने के लिए तो हमेशा वक्त रहेगा, उसकी क्या परवाह करनी !

वह अपना कोट पहन कर अस्तबल में अपने घोड़े के पास आया मगर साथ ही वह अनाज, सूखी घास और मौसम के बारे में सोचता रहा। अपने बेटे के बारे में अकेले सोचने की हिम्मत वह नहीं जुटा पा रहा था।

"क्या तुम डटकर खा रहे हो ?" योना अपने घोड़े से पूछने लगा... वह घोड़े की चमकती आँखें देखकर कहने लगा, "ठीक है, जमकर खाओ। हालांकि आज हम अपना अनाज खरीदने लायक भी नहीं कमा सके, पर कोई बात नहीं। हम सूखी घास खा सकते हैं। हां, यह सच है। मैं अब गाड़ी चलाने लायक नहीं रहा, बूढ़ा हो गया हूँ ... मेरा बेटा चला सकता था। कितना शानदार कोचवान था मेरा बेटा। काश, वह जीवित होता !"

एक पल के लिए योना चुप हो गया। फिर अपनी बात जारी रखते हुए बोला, "हां, मेरे प्यारे, पुराने दोस्त! यही सच है। कुज्या योनिच अब नहीं रहा। वह हमें जीने के लिए छोड़कर चला गया। सोचो तो ज़रा, तुम्हारा एक बछड़ा हो, तुम उसकी मां हो और अचानक वह बछड़ा तुम्हें अपने बाद जीने के लिए छोड़कर चल बसे। कितना दुख पहुँचेगा तुम्हें ?" पहुंचेगा, या नहीं.... है न ?"

तभी उसे अहसास हुआ कि उसका अपना छोटा–सा घोड़ा उसके हाथ पर सांस ले रहा है। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता कि उसने देखा घोड़ा उसके हाथ को चाट रहा था।

अपने दुख के बोझ से दबा हुआ योना आंखों में आंसू भरे उस छोटे–से घोड़े को अपनी सारी कहानी सुना रहा था और वह घोड़ा अपने मालिक के हाथ चाट रहा था जैसे उसकी दुखभरी कहानी सुन कर उसे तसल्ली दे रहा था।

ई.मेल : sushant1968@gmail.com

कविता

अतुल्य भारत. Incredible India

–जॉनी फ़ॉस्टर

आलमी सतह पे अपनी आन बान शान है,
विश्व के पटल पे अपनी ख्याति अपना मान है,
रंग रूप हैं अनेक संस्कृति समान है।

अनगिनत मनीषी योगी देश के सपूत हैं,
गीत में संगीत में ध्यान मग्न दूत हैं
सींचती रही है ये धरा ललित कलाओं को,
है सृजा पहाड़ों को अजंता की गुफ़ाओं को
मंत्र गूंजते कहीं पे और कहीं अज़ान है
रंग रूप हैं अनेक संस्कृति समान है।

संस्कृति के इन्द्रधनुष हर दिशा सजे हुए,
देवता स्वरूप गुरु यहीं तो हैं बसे हुए
कोई पत्थरों में छैनियों से रूह फूंकता,
कोई राग रागिनी की खुश्बुएं बिखेरता
चित्रकार हैं कहीं पे जोगी विद्यमान है
रंग रूप हैं अनेक संस्कृति समान है।

लोक–नृत्य हैं कहीं पे नाटकों की धूम है,
स्वांग देखते कहीं पे लोगों का हुजूम है
रीति.नीतियों का पाठ देते पद कबीर के,
फलसफ़ों में डूबे शेर ग़ालिब और नज़ीर के
है यही भारत मेरा, यही तो हिन्दुस्तान है
रंग रूप हैं अनेक संस्कृति समान है।

राग हैं हज़ार नृत्य सैकड़ों यहाँ मिलें,
एकता–अनेकता के फूल हर क़दम खिलें
वाद्य सौ तरह के सौ लिबास भी यहाँ दिखें,
प्रेम का संदेश देती है पवित्र पुस्तकें
गीता है, बाइबिल है, ग्रन्थ और कुरआन है
रंग रूप हैं अनेक संस्कृति समान है।

विश्व शान्ति का संदेश ये कलाएं दे रहीं,
भेदभाव को मिटा सद्भावना सिखा रहीं
लक्ष्य सबका एक है रास्ते जुदा जुदा,
कोई राम, वाहे गुरु, और कोई कहे खुदा
हर क़दम पे हर दिशा बदलती इक जुबान है
रंग रूप हैं अनेक संस्कृति समान है।

आओ सारे मिल के आज एक ये ही प्रण करें,
अपने पूर्वजों के पद्चिन्हों का अनुसरण करें

क्रांति अपनी संस्कृति की विश्व में उठा दें हम,
अपने फन की और हुनर की आंधियाँ चला दें हम

एकता के सूत्र में बंधे है सब दिखा दें हम,
हम हैं इस धरा के सूर्य सब को ये बता दें हम

हम को इन विरासतों पे मान.अभिमान है।

आलमी सतह पे अपनी आन बान शान है,

विश्व के पटल पे अपनी ख्याति अपना मान है,

रंग रूप हैं अनेक संस्कृति समान है।

कल्चरल ऐजूकेशन सेंटर, अमुवि, अलीगढ़
foster.johny@gmail.com

सांस्कृतिक क्षेत्र में कई पुरस्कारों से सम्मानित, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (दिल्ली) के पूर्व राष्ट्रीय निर्णायक व राष्ट्रीय सांस्कृतिक बोर्ड एक्सपर्ट मेम्बर, देश–विदेश में संगीत व मुशायरों में आमंत्रित। गीत ग़ज़ल पुस्तक प्रकाशित, जन्म स्थान मसूरी, जिला. देहरादून। अमुवि के सांस्कृतिक केन्द्र में 1988 से संगीत निदेशक।

पर्यावरण के प्रति एक कविता

रुक्ख

–शिव कुमार बटालवी (स्व.)

कुझ रुक्ख मैनूं पुत्त लगदे ने
कुझ रुक्ख लगदे मावां
कुझ रुक्ख नूंहां धियां लग्गदे
कुझ रुक्ख वांग भरावां
कुझ रुक्ख मेरे बाबे वाकण
पत्तर टावां टावां
कुझ रुक्ख मेरी दादी वरगे
चूरी पावन कावां
कुझ रुक्ख यारां वरगे लगदे
चुंमां ते गल लावां
इक मेरी महबूबा वाकण
मिट्ठा अते दुखावां
कुझ रुक्ख मेरा दिल करदा ए
मोढे चुक्क खिडावां
कुझ रुक्ख मेरा दिल करदा ए
चुंमां ते मर जावां
कुझ रुक्ख जद वी रल के झूमण
तेज़ वगन जद वावां
सावी बोली सभ रुक्खां दी
दिल करदा लिख जावां
मेरा वी इह दिल करदा ए
रुक्ख दी जूने आवां

जे तुसां मेरा गीत है सुणना
मैं रुक्खां विच गावां
रुक्ख तां मेरी मां वरगे ने
ज्युं रुक्खां दियां छावां ।

शिव कुमार बटालवी (23 जुलाई 1936 – 6 मई 1973) पंजाबी भाषा के कवि, लेखक और नाटककार थे। वह अपनी रोमांटिक शायरी के लिए तथा अपने बुलंद जुनून, राहों, जुदाई और प्रेमी की पीड़ा के लिए जाने जाते थे। 1966 में साहित्य अकादमी, भारत सरकार द्वारा दिए गए, साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त करने वाले सबसे कम उम्र के साहित्यकार थे, पूरण भगत की प्राचीन कथा, लूणा (1965), पर आधारित उनके महाकाव्य पद्य नाटक को आधुनिक पंजाबी सहित्य में एक उत्कृष्ट कृतियां माना जाता है।

सुशांत लीना की कविताएं

इंस्पेक्टर मातादीन के राज में

(हरिशंकर परसाई को समर्पित)

जिस दसवें व्यक्ति को फाँसी हुई
वह निर्दोष था
उसका नाम उस नौवें व्यक्ति से मिलता था
जिस पर मुक़दमा चला था
निर्दोष तो वह नौवां व्यक्ति भी था
जिसे आठवें की शिनाख़्त पर
पकड़ा गया था।
उसे सातवें ने फंसाया था,
जो खुद छठे की गवाही की वजह से
मुसीबत में आया था,
छठा भी क्या करता
उसके ऊपर उस पांचवें का दबाव था
जो खुद चौथे का मित्र था
चौथा भी निर्दोष था
तीसरा उसका रिश्तेदार था
जिसकी बात वह टाल नहीं पाया था
दूसरा तीसरे का बॉस था
लिहाज़ा वह भी उसे 'ना' नहीं कह सका था।
निर्दोष तो दूसरा भी था
वह उस हत्या का चश्मदीद गवाह था
किंतु उसे पहले ने धमकाया था
पहला व्यक्ति ही असल हत्यारा था
किंतु पहले के विरुद्ध
न कोई गवाह था, न सबूत
इसलिए वह कांड करने के बाद भी
मदमस्त साँड़–सा
खुला घूम रहा था
स्वतंत्र भारत में ...

कैसा समय है यह

कैसा समय है यह
जब हल कोई चला रहा है
अन्न और खेत किसी का है
ईंट–गारा कोई ढो रहा है
इमारत किसी की है
काम कोई कर रहा है
नाम किसी का है

कैसा समय है यह
जब भेड़ियों ने हथिया ली हैं
सारी मशालें
और हम निहत्थे खड़े हैं

कैसा समय है यह
जब भरी दुपहरी में अँधेरा है
जब भीतर भरा है
एक अकुलाया शोर
जब अयोध्या से बामियान तक
ईराक़ से अफ़ग़ानिस्तान तक
बौने लोग डाल रहे हैं
लम्बी परछाइयाँ......
कैसा समय है यह

——————————0——————————

ए–5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड,
इंदिरापुरम, गाज़ियाबाद

डॉ. विश्वरंजन की कविताएं

मेरी कलम

होगी जब जब चुभन तो कलम, मेरी आवाज लिखेगी ।
हर शब्दों में मेरी जज्बात लिखेगी।
अमृत की एहसास दिखेगी।
मेरी कलम हर वह बात लिखेगी।
रूह में हो सनसनाहट तो रुककर अपनी आवाज सुनो।
हर आवाज में करुणा की धार बहेगी।
निर्मलता की बात कहेगी।
जी, होगी जब चुभन तो मेरी कलम मेरी आवाज लिखेगी।
जब मिले कोई धारा, यह अविरलता की बात कहेगी।
तो मन में है, मेरे हर कण में है, उस क्षण में है।
जिसमें तरलता के अहो भाव दिखेगी।
साथ देना,हिम्मत देना तेज धार में, न छोड़ना मझधार में।
होगी जब फतह, यह दुनिया गुणगान करेगी।।

अमृत की बरसात

है मुझ में एहसास तुम्हारे पास होने का।
एहसास है ख्वाबों में बात होने का।
अमृत की हुई बरसात, उसकी लहरों में बह जाने का।
करो जो गुजारिश सांसों से,
मुझे बहती धार में अविरल करा दे ।
किससे कहूं जी हां किससे कहूं, वे सिरमौर है मेरे।
क्योंकि उनकी निर्मलता इबादत है मेरी।

कन्सल्टेंट
पेय जल एवं स्वच्छता मंत्रलय,
भारत सरकार, नई दिल्ली
मो–9852583535,
ईमेल – vishwranjan@yahoo.com

शुभकामनाएं

इस तिमाही में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी अप्रैल–जून, 2019

क्र.सं.	नाम	पद	माह
1.	श्री ए.एस. सक्सेना	सहायक निदेशक	अप्रैल, 2019
2.	श्रीमती मुन्नी देवी आनंद	अपर श्रेणी क्लर्क	मई, 2019

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

–अतुल्य भारत

पर्यटन उद्योग

सतत विकास के लिए पर्यटन उद्योग का महत्व

–प्राण रंजन प्रसाद

हमारे देश में हिमालय की मनोरम वादियों से लेकर लम्बी समुद्री तट रेखा, अनेकों मशहूर ऐतिहासिक स्मारकों के अलावा प्राकृतिक जल–प्रपात, अतुलनीय प्राकृतिक पर्यटक स्थल एवं संरक्षित वन्यजीव राष्ट्रीय उद्यान हैं। भारतवर्ष के लगभग हर कोने मे अनेक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल भी विद्यमान हैं।

यह भी दिलचस्प बात है कि हमारे देश की भौगोलिक परिवेश में तक़रीबन सभी राज्यों में ऐसे पर्यटन के स्थल मौजूद हैं। फिर भी, हम देखते हैं कि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों का आवागमन कुछ गिने–चुने स्थानों तक ही सीमित है। इनका मुख्य कारण सम्भवत: अन्य स्थानों के बारे में जानकारी न होना, आवागमन की सुविधा तथा ठहरने की व्यवस्था में कमी भी हो सकती है। हमारा कर्तव्य है कि ऐसे ऐतिहासिक स्थलों से लेकर आधुनिक मनोरंजन स्थलों पर आगंतुकों को आकर्षित करने हेतु सभी संभव प्रयास किये जाने चाहिए। *मैं समझता हू कि ''अतुल्य भारत'', पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जा रही गृह पत्रिका इस दिशा में कुछ काम कर रही है परन्तु ऐसे प्रयासों को और विस्तार देने की आवश्यकता है।*

> देश मे पर्यटन को बढावा देने के लिए हमारा लक्ष्य ऐसा होना चाहिए कि ''पर्यटक बिना किसी परेशानी के सामान्य खर्चे पर दर्शनीय एवं रोचक स्थलों की यात्रा का आनंद ले सकें''। उचित कीमत पर अनेक प्रकार के अच्छे–स्वादिष्ट भोजन, स्वच्छ पेयजल, अच्छी आवास व्यवस्था एवं लगातार बिजली की व्यवस्था भी पर्यटकों को आकर्षित करेगी।

सामान्यत:, पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एकीकृत प्रयास की ज़रूरत है, जिसमें सभी आयुवर्ग के स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटकों की आकांक्षाओं का समावेश हो। इनमें सुविधाजनक यात्रा, ठहरने की आरामदेह व्यवस्था तथा स्वादिस्ट मनभावन खानपान की उपलब्धता शामिल हैं। यह भी जरूरी है कि सभी पर्यटक स्थल आकर्षक एवं हर प्रकार से सुरक्षित हों। प्राकृतिक तथा मानवकृत हादसों के अलावा अभ्यारण्यों में जानवरों तथा अचानक प्रकट होने वाले सांप–बिच्छूओं, साहसिक पर्वतारोहण, जलक्रीडा इत्यादि में भी हर स्थान के हिसाब से समुचित बचाव की व्यवस्था होनी चाहिए।

पर्यटन विकास के लिए पर्यटक स्थलों पर आधारभूत सुविधाएं जुटाए जाने की जरूरत है। यह भी देखने में आता है कि ज्यादातर, विशेष रूप से धार्मिक स्थल, यहां तक कि चारधाम जैसे धार्मिक–पर्यटक स्थल भी, कमोबेश अतिक्रमण से घिरे पाए जाते हैं। इनसे पर्यटकों को असुविधा होती है। इन्हें अतिक्रमण मुक्त करना भी एक चुनौती से कम नहीं है। सरकार को पर्यटक स्थलों के विकास के लिए आधारभूत सुविधाएं मुहैया कराने के साथ ही मास्टर प्लान बनाना चाहिए।

यदि किसी स्थान विशेष मे प्रवेश हेतु टिकट खरीदने की ज़रूरत हो तो हमारा प्रयास होना चाहिए कि उसमे अधिक समय न लगे, क्योंकि अधिकतर पर्यटक निश्चित अवधि मे कई स्थलों में जाना चाहते हैं।

---

*सलाहकार, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम, भारत सरकार

हमारी भरसक कोशिश होनी चाहिए की किसी भी तरह की कमी से पर्यटकों को परेशान नहीं होना पड़े। वहां उपलब्ध सभी उपकरण बिलकुल ठीक हालत में होने चाहिए। जानकार पर्यटक गाइडों की सुविधा हो। विशेष क्रीड़ा स्थलों पर आवश्यक संख्या मे सक्षम विशेषज्ञ कोच का होना भी अति आवश्यक है, खासकर तैराक और गोताखोर। इससे न केवल किसी हादसे को टाला जा सकता है, बल्कि पर्यटकों का आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

अभी कुछ साल पहले शायद, नवम्बर, 2014 में, उत्तराखंड राज्य के स्थापना दिवस के अवसर पर भारतीय समाजशास्त्र परिषद, शोध समिति के सहयोग से 'पर्यटन विकास एवं पर्यावरण' पर कुमाऊं वि.वि. हर्मिटेज भवन में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इसके समापन के अवसर पर तत्कालीन राज्यपाल डा. अजीज कुरैशी, बतौर मुख्य अतिथि मौजूद थे। अपने अभिभाषण में उन्होंने कहा था कि प्रदेश की सरकारें मास्टर प्लान बनाकर पर्यटन विकास की दिशा में काम करतीं तो उत्तराखंड विश्व का सबसे खबसूरत प्रदेश हो सकता था। यहां की धरती स्विटजरलैंड से भी खूबसूरत है। चारधाम यात्रा के अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि हर रोज औसतन 20 हजार पर्यटक इस क्षेत्र में यात्रा करते हैं। वहां बिजली, पानी, दवा और टायलेट जैसी आधारभूत सुविधाओं की कमी अखरती है। उन्होंने आगे कहा कि पर्यावरण संरक्षण के साथ ही टिकाऊ और स्थायी पर्यटन विकास में यह संगोष्ठी बेहद उपयोगी होगी। इससे पूर्व अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि. से आए प्रो. नूर मोहम्मद ने कहा कि पर्यटन विकास के लिए संगोष्ठी में आए सुझावों के तहत सामुदायिक सहभागिता जरूरी है। प्रो. ज्योति जोशी और डा. अजय जोशी ने भी इस गोष्ठी में अपने अनुभव साझा किए।

डा. बीएस बिष्ट ने बताया कि संगोष्ठी में सतत पर्यटन विकास के लिए मानदंड निर्धारित करने, आवास, यातायात, संचार सुविधाएं विकसित मानव संसाधनों का पंजीकरण, आपदा प्रबंधन के उपाय सुनिश्चित करने और पर्यटन उद्योग से जुड़े लोगों के लिए आचार संहिता बनाना जरूरी है। कुमाऊं वि.वि. के तत्कालीन कुलपति प्रो. एचएस धामी ने मत प्रकट किया था कि पर्यटन को लेकर भावी पीढ़ी के विकास को भी ध्यान में रखना होगा। इसके लिए ट्रांसपोर्ट, जॉब इंप्रूवमेंट और भविष्य के संसाधनों पर फोकस करना होगा। इस मौके पर देशभर से आए समाजशास्त्री, पर्यावरण और पर्यटन विशेषज्ञ डा. एस.सी. पांडे, डॉ. जी.एस. सौन, डा. ललित उप्रेती, प्रो. डीएस बिष्ट, डा. बीना पांडे समेत तमाम विशेषज्ञ उपस्थित थे।

घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की ज़रूरत के अनुसार सुविधाएं होनी चाहिए। इमें सभी सम्बद्ध एजेंसियों को विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। टैक्सी वालों, होटल वाले तथा अन्य सम्बद्ध सेवा प्रदान करने वालों का व्यवहार भी पर्यटक तथा आगंतुकों के प्रति सराहनीय होना जरूरी है। अभी तक ऐसे लोग पर्यटकों को ठगने, उन्हें गलत सूचनाएं देकर पैसा कमाने की फिराक में होते हैं। यह भी देखा गया कि जब घरेलू पर्यटक भी उनसे असहज महसूस करता है, तब विदेशी पर्यटक क्या सोचते होंगे? इसके लिए स्थानीय प्रशासन द्वारा प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन की पहल सराहनीय रहेगी। इसमें शिष्टाचार के पहलू सिखाने हेतु कौशल विकास कार्यक्रम चलाया जा सकता है। आगंतुक पर्यटकों के विचार और परस्पर अनुभव उस स्थान पर और अधिक पर्यटकों को लाने में सहायक होते हैं, जिससे उस स्थान की महत्ता की सटीक जानकारी मिलती है।

देश में विदेशी पर्यटकों की संख्या 2016 के 6.8 प्रतिशत से बढ़कर जनवरी 2017 में 16.5 प्रतिशत हो गयी है। इसी प्रकार घरेलू पर्यटकों की संख्या में (2015 की तुलना में) 2017 में 15.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पर्यटकों की बढ़ती संख्या से स्पष्ट है कि एन.डी.ए. सरकार द्वारा लागू की गयी पर्यटन नीतियां सफल रही हैं।

विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि का कारण ऑनलाइन वीजा सुविधा उपलब्ध कराना है। यह सुविधा अब 180 देशों को उपलब्ध है। चिकित्सा और व्यावसायिक पर्यटकों के लिए ई–वीजा की सुविधा तथा ठहरने की अवधि को 30 दिनों से बढ़ाकर 60 दिन कर देने के कारण से भी विदेशी पर्यटकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है।

ताजमहल जैसे ऐतिहासिक इमारतों में ई–टिकट का आरम्भ, विशेष पर्यटन रेलगाडियों की सुविधा से तथा 24x7 पर्यटन हेल्पलाईन की सुविधा के कारण विदेश से भी पर्यटकों का आगमन बढ़ा है।

पर्यटन क्षेत्र में विदेशी मुद्रा कमाने की अपार क्षमता है। यह जीडीपी को बढ़ाने में भी योगदान दे सकता है। पर्यटन क्षेत्र 39.5 मिलियन लोगों को सेवा क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराता है। 2017–2018 के

बजट भाषण में वित्त मंत्री अरूण जेटली ने पांच विशेष पर्यटन जोन बनाने का प्रस्ताव दिया था जो राज्यों के सहयोग से विशेष उद्देश्य कंपनी (एसपीवी) के माध्यम से लागू किये जाएंगे। वित्त मंत्री ने पर्यटन द्वारा बड़ी संख्या में रोजगार उपलब्ध कराने की क्षमता को रेखांकित करते हुए कहा था कि यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था को गुणात्मक रुप से प्रभावित करता है।

प्रधानमंत्रीजी ने भी भारत की विविधता को विश्व तक पहुंचाया है। देश की आध्यात्मिक विरासत की क्षमता का उपयोग करने के लिए उन्होंने देश की सांस्कृतिक विविधता और आध्यात्मिक संबंध को विश्व के समक्ष प्रचारित करने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने पर्यटन क्षेत्र के सेवा क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अनुमति प्रदान की ताकि पूरे देश में पर्यटन के लिए मूलभूत संरचना का विकास हो सके।

केन्द्र सरकार यात्रा और पर्यटन को विशेष प्रोत्साहन प्रदान करती है। पर्यटकों को आर्कषित करने के लिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं। स्वच्छ भारत अभियान के तहत पर्यटन केन्द्रों को स्वच्छ बनाया गया है जैसे वाराणसी में गंगा नदी के तट का पुनर्रुद्धार किया गया है। प्रधानमंत्री ने ''स्वच्छ भारत, स्वच्छ स्मारक'' का नारा दिया है। इसके तहत विरासत केन्द्रों को स्वच्छ रखने की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

''आदर्श स्मारक'', भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की एक महत्वपूर्ण योजना है। इसके तहत ऐतिहासिक स्थलों में पर्यटन सुविधाओं को बढ़ावा दिया जाता है।

''स्वदेश दर्शन'' पर्यटन मंत्रालय की एक महत्वपूर्ण योजना है। इसके तहत थीम आधारित पर्यटन सर्किट का विकास किया जाता है। इसके तहत देश में 15 पर्यटन सर्किटों का चयन किया गया है।

''प्रसाद'' योजना के अंतर्गत, भारत में 25 महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों की पहचान की गई है।

सतत पर्यटन - विकास के लिए एक उपकरण

पर्यटन दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा उद्योग है। इसके तहत 1.235 मिलियन पर्यटक अंतर्राष्ट्रीय सीमाएं पार करते हैं। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत समावेशी आर्थिक विकास, स्थानीय समुदायों को अच्छे रोजगार, पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन की समस्या के प्रति ध्यान और अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान का सम्मान को शामिल किया गया है।

इस प्रकार, पर्यटन विकास लोगों तथा विश्व के लिए समृद्धि का बेहतर अवसर प्रदान करता है। सरकार एक नई राष्ट्रीय पर्यटन नीति (एनटीपी) तैयार करने की प्रक्रिया में है। एनटीपी की मुख्य विशेषताएं समावेशी तरीका अपनाना, रोजगार सृजन करना और सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित करते हुए पर्यटन का विकास करना है।

इसका उद्देश्य समृद्ध संस्कृति और विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाते हुए चिकित्सा एवं निरोगता पर्यटन को प्रोत्साहन दिया गया है। यह कौशल विकास और आधारभूत संरचना के विकास पर भी बल देता है। यह देश की विविधता का अनुभव प्राप्त करने के लिए घरेलू और विदेशी पर्यटकों को प्रोत्साहन प्रदान करता है।

पर्यटन मंत्रालय ने सुरक्षित पर्यटन के लिए दिशा निर्देश जारी किये हैं। इसके अंतर्गत मौलिक मानव अधिकार और महिलाओं एवं बच्चों की शोषण से मुक्ति सुनिश्चित की गयी है।

आधारभूत संरचना की कमी के कारण पर्यटन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में कुछ समस्याएं हैं। जैसे कई स्थानों पर, विशेषकर 'ईको–पर्यटन' क्षेत्रों में, अच्छी सड़कों की कमी और पर्यटकों के लिए स्वच्छ, आरामदायक आवास सुविधाओं का अभाव देखा जा सकता है। इसके निदान के लिए सरकार यात्री टर्मिनल को अपग्रेड कर रही है, पर्यटन स्थलों से सीधे सम्पर्क उपलब्ध करा रही है, स्वच्छ पेयजल भी उपलब्ध करा रही है और पर्यटकों को सुविधा देने के लिए पर्यटन क्षेत्रों में संचार नेटवर्क का निर्माण कर रही है।

भारत सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक रूप से समृद्ध है। इस संदर्भ में विश्व का कोई अन्य देश इसका मुकाबला नहीं कर सकता। विविध परंपराएं, जीवन पद्धतियां, रंगारंग मेले तथा हमारे पर्व त्यौहार घरेलू और विदेशी पर्यटकों को कई तरह के विकल्प प्रदान करते हैं।

भारत सरकार समावेशी विकास हेतु पर्यटन के उपयोग के प्रति न सिर्फ सचेत है बल्कि स्थानीय समुदायों के साथ पर्यटन के लाभों को बांटने के लिए भी कृत संकल्प है। हमारे वन, जनजाति जीवन, सुंदर समुद्र तट, वन अभयारण्य और राष्ट्रीय पार्क पर्यटकों को देश की विविधता अनुभव करने का अतुल्य अवसर प्रदान करते हैं।

हमें भारत की विरासत, दर्शन और अविश्वसनीय विविधतापूर्ण विशेषताओं को लोगों तक पहुंचाने की जरूरत है जो अनुभव प्राप्त करने योग्य हैं।''

भारत सरकार पर्यटन के विकास के लिए उचित वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है और सतत पर्यटन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतू एक रोडमैप प्रस्तुत कर रही है जो अंतर्राष्ट्रीय सतत पर्यटन वर्ष का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। पूरी दुनिया में पर्यटकों की बढती संख्या और जैव विविधता के लिए संवेदनशील स्थानों पर 2020 तक पर्यटकों की संख्या दोगुनी हो जाने की संभावना है और यही पर्यटन पर्यावरण के लिए गंभीर चुनौती बन सकता है।

यूएनईपी तथा कंजरवेशन इंटरनेशनल द्वारा जारी एक रिपोर्ट में यह चेतावनी दी गई है। रिपोर्ट में संभावना व्यक्त की गई है कि जैव विविधता के लिए संवदेनशील स्थानों पर 2020 तक पर्यटकों की संख्या दो गुनी हो सकती है। यह स्थान ऐसे क्षेत्र हैं जहां जीव तो अधिक हैं लेकिन उनको काफी खतरा है।

टूरिस्म और बायोडाइवरसिटी (मैपिंग टूरिस्म ग्लोबल फूटप्रिंट) शीर्षक वाली इस रिपोर्ट में कहा गया है कि से विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का 11 प्रतिशत हिस्सा पर्यटन क्षेत्र से आता है। इससे 20 करोड लोगों को रोजगार मिलता है तथा 70 करोड अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को प्रतिवर्ष एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है और यह संख्या 2020 तक दोगुनी होने की संभावना है। लेकिन आने वाले समय में यह प्रकृति के लिए यह गंभीर खतरा भी बन सकता है।

अध्ययन में सरकारों, व्यवसाइयों, मदद करने वालों तथा स्थानीय समुदाय को सतत विकास में मदद करने के लिए आवश्यक दिशानिर्देश दिए गए हैं।

इसमें को शक नहीं है कि पर्यटन किसी भी स्थान विशेष की आर्थिक सुदृढ़ता का विशेष स्रोत होता है।

'Experience of one will invite many more'

देवभूमि : पोल्लाच्चि

—के.दिनाकरण

'बिल्लू' 2009 में आई एक बॉलीवुड फ़िल्म थी। इसका निर्देशन प्रियदर्शन ने किया था। इसमें शाहरुख खान के साथ इरफ़ान खान, लारा दत्ता, ओम पुरी, राजपाल और और असरानी जैसे दिग्गज कलाकारों ने अभिनय किया था।

बिल्लू की कहानी कुछ ऐसे है कि सुपरस्टार साहिल खान (शाहरुख खान) की टीम उत्तर प्रदेश के एक गांव बुदबुदा में अपनी एक फिल्म की शूटिंग के लिए आती है। गांव के लोगों में फिल्म के हीरो साहिल खां को देखने की बड़ी उत्सुकता है। बिल्लू ने अपने परिवार को बताया कि वह साहिल को बचपन से जानता है। जब उनके बच्चे स्टार के साथ अपने पिता की दोस्ती के बारे में बात करते हैं, तो पूरे गांव में यह बात फैल जाती है।

बिल्लू, जो अपनी गरीबी के कारण सबकी आंख की किरकिरी था, रातों रात, सबका हीरो बन जाता है। बिल्लू अपनी और साहिल की दोस्ती के बारे में चुप रहता है तो सभी उसे झूठा कहते हैं। उसकी पत्नी और बच्चे भी उस पर पर संदेह करते हैं। अंत में एक स्कूल के कार्यक्रम में साहिल खां बिल्लू को याद करता है और अपने दोस्त 'बिल्लू' के घर आ जाता है। यह 2007 की मलयालम फिल्म कड़ा परयंबोल का आधिकारिक री–मेक थी।

फिल्म का अर्थ है दर्शकों का मनोरंजन, उसमें पहाड़, नदी और झरने भी दिखाने होते हैं। इनके अलावा नाच और गाने भी जरूरी हैं। तो आइए हम आपको आज ले चलते हैं उत्तरप्रदेश के एक नकली गांव बुदबुदा में। जी हां, यह फिल्म बात तो बुदबुदा गांव की करती है लेकिन असल में यह फिल्म बनाई गई थी, तमिलनाडु के कोम्बटूर जिले के पोल्लाच्चि शहर के पास स्थित एक बहुत ही सुन्दर गांव अलियारू में।

तमिलनाडु अपनी परंपरा, समृद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है। प्रकृति ने भी इसे खूब संवारा है, पहाड़ियां, नदियां, समुद्र तट ही नहीं, अपने में आश्चर्यजनक वास्तुकला समेटे असंख्य प्राचीन मंदिर इस क्षेत्र को दिलचस्प बनाते हैं। कोयम्बतूर जिले में पोल्लाच्चि अपने खूबसूरत नजारों के कारण तमिल फिल्म उद्योग का लोकप्रिय फिल्म शूटिंग स्थल है।

पोल्लाच्चि के बारे में ...

पोल्लाच्चि को तमिल में पोरुल अच्वी के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ है "धान का उपहार" और बाद में पोल्लाच्चि बन गया। चोलों के काल में इसे मुड़ी कोंडा चोल नल्लूर के नाम से जाना जाता था।

कोयंबतूर जिले के दक्षिण में लगभग 40 कि. मी. दूर पोल्लाच्चि एक शहर तथा तालुका मुख्यालय है। पोल्लाच्चि गुड़, सब्जियों और मवेशियों की एक

* लोकेशन मैनेजर , लोकेशंस एंड लॉजिस्टिक प्रा. लि., मुंबई

अलियारू बांध पर कपड़े धोते हुए बातें करती महिलाओं के साथ लारा दत्त।

लोकप्रिय मंडी है। यहां का पशु बाजार दक्षिणी भारत में सबसे बड़ा मवेशी बाजार माना जाता है। पोल्लाच्चि को तमिलनाडु की ''कोकोनट कैपिटल'' भी कहा जाता है क्योंकि यहां नारियल के निर्यात और कॉयर का अच्छा खासा व्यापार होता है। यहां स्थानीय रूप से कच्चे माल की अधिकता होने के कारण कॉयर उत्पादक इकाइयां भी हैं। कुछ स्थानों पर वेनिला की खेती भी की जाती है।

अलियारू नदी पोल्लाच्चि शहर से करीब 10 कि.मी. दूर बहती है।

लोकेशन मैनेजर के बारे में :

लोकेशन मैनेजर, फिल्म निर्माण दल का एक ऐसा सदस्य होता है जिसका मुख्य कार्य फिल्म शूटिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले नए स्थानों, खासकर आउटडोर स्थानों, को खोजकर निदेशक की सहायता करना होता है। आजकल किसी स्थान पर शूटिंग करने के लिए सरकारी अनुमति, पुलिस से अनुमति एवं व्यवस्था, क्षेत्र के दमकल केन्द्र से अनुमति लेना तथा उस लाकेशन तक टीम के आने–जाने की व्यवस्था और समन्वय करना भी लोकेशन मैनेजर का दायित्व है।

गांव में बिल्लू का घर

बिल्लू (इरफान खां) अपने बच्चों और पत्नी के साथ।

अलियारू बांध और जलाशय

पोल्लाच्चि शहर से लगभग सात कि.मी. दूर अलियारू गांव के पास अलियारू बांध की तलहटी में यह लेक स्थित है। मुख्यत: इस क्षेत्र में सिंचाई के लिए, 1959–1969 के दौरान अलियारू बांध का निर्माण किया गया था।

अलियारू बांध

परम्बिकुलम अलियारू परियोजना के एक हिस्से के रूप में बनाया गया जो अलियारू जलाशय में पानी को बरकरार रखता है। बांध की लंबाई लगभग दो कि.मी. है। जलाशय का उद्‌गम समुद्र तल से 930 फीट ऊपर है और नहर का स्तर समुद्र तल से 980 फीट ऊपर है। अधिकतम गहराई 135 फीट और औसत गहराई 55 फीट है।

1982 से 1992 तक ग्यारह वर्षों के लिए लिए केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने अलियारू जलाशय का अध्ययन किया था और यह निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक रूप से अलियारू में मछली की उत्पादन दर किसी भी अन्य भारतीय जलाशय से अधिक है। जलाशय में स्वदेशी मछली की 13 किस्मों की 40 प्रजातियां पाली जाती हैं।

अलियारू जलाशय का विहंगम दृश्य

यह योजना इंजीनियरिंग कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती है। जलविद्युत उत्पन्न करने के उद्देश्य से इस परियोजना को सितंबर 2002 में शुरू किया गया था। एक माइक्रो हाइडल प्रोजेक्ट होने के नाते, भारत सरकार गैर–पारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय द्वारा इस परियोजना को सब्सिडी भी दी जाती है।

अलियारू बांध एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। सघन हरियाली और सुंदर लैंड–स्कैपिंग के कारण यह दक्षिण के फिल्मकारों का एक पसंदीदा शूटिंग स्थान है। राज्य सरकार की ओर से पर्यटन के संवर्धन की दृष्टि से यहां पर्यटक उद्यान, एक्वेरियम–पार्क, जलक्रीड़ा क्षेत्र और मिनी थीम–पार्क बनाए गए हैं।

विश्व सामुदायिक सेवा केंद्र

प्रसिद्ध अलियारू जलाशय के पास पोल्लाच्चि गांव के बाहर की ओर स्थित है, चेतना मंदिर। 1958 में विठ्ठिरी महर्षि ने इसकी स्थापना की थी। विठ्ठरी महर्षि योग और कायाकल्प रिसर्च फाउंडेशन, अलियारू जलाशय के पास अरुतपेरुन्जोती नगर में प्रवेश द्वार पर ही स्थित है। यह एक पंजीकृत ट्रस्ट

दृश्य समझाते हुए निदेशक

है जो व्यक्तिगत शांति के माध्यम से विश्व शांति की दिशा में काम कर रहा है। विठ्ठिरी महर्षि ने 1972 से 1993 तक जापान, दक्षिण कोरिया, मलेशिया, सिंगापुर और अमेरिका में बड़े स्तर पर व्याख्यान और प्रशिक्षण दिए हैं।

महर्षि विठ्ठिरी चेतना मंदिर

1984 में, महर्षि विठ्ठिरी ने पोल्लाच्चि के पास अलियारू में कुंडलिनी योग और काया कल्प रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना की थी। फाउंडेशन द्वारा अलियारू में चेतना मंदिर का निर्माण किया गया था। महर्षि विठ्ठरी यहीं रहते हैं और लगभग 80 वर्ष की आयु में भी बड़ी तन्मयता और दृढ़ता से समाज सेवा करते हैं। इस ट्रस्ट की एक इकाई के रूप में, "आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक शिक्षा संस्थान (दर्शन)" के नाम से एक शिक्षण विंग भी काम कर रहा है।

परिसर में एक ध्यान केंद्र और 40 कमरे की रहने की सुविधा है जिसका शुल्क नाममात्र है। इस केंद्र में वही श्रद्धालु ठहरते हैं जो सरल योग और जीवन का सुशासन सीखना चाहते हैं। चेतना मंदिर में, एक सप्ताह की अवधि का SKY (सरलीकृत कुंडलिनी योग) प्रशिक्षण भी दिया जाता है। सरल कुंडलिनी योग महर्षि द्वारा प्रचलित एक प्रकार का सरल योग है। यहां योग से ही कई दुसाध्य रोगों की चिकित्सा की जाती है। शायद इसीलिए सभी धर्मों के लोग महर्षि विठ्ठरी के SKY कार्यक्रम की सराहना करते रहे हैं। केंद्र में एक मेडिटेशन हॉल भी है। अलियारू बांध के निकट यह बहुत ही शांत जगह है। मंदिर के चारों ओर फैली हरियाली निर्मलता का अनुभव कराती। जो लोग आराम से दो चार दिन बिताना चाहते हैं, उनका यहां स्वागत है।

सड़क मार्ग : पोल्लाच्चि दो राष्ट्रीय राजमार्गो से जुड़ा है। सेंट्रल बस स्टैंड बस का उपयोग राज्य सरकार द्वारा संचालित TNSTC और निजी ऑपरेटरों द्वारा किया जाता है। राज्य परिवहन निगम लंबी दूरी की बसें चलाता है।

रेल मार्गः पोल्लाच्चि जंक्शन तमिलनाडु और केरल की सीमा पर है।

वायु मार्ग : कोयम्बतूर अंतर्राष्ट्रीय विमानपत्तन निकटतम हवाई अड्डा है। यहां से पोल्लाच्चि की दूरी तकरीबन 56 कि.मी. है और यहां से सरकारी बसें और टैक्सियां मिलती हैं।

रुचि के स्थान

अन्नामलई वन्यजीव अभयारण्य

पोल्लाच्चि ATR अन्नामलई टाइगर रिजर्व का 1848 से एक लंबा प्रबंधन इतिहास है। तत्कालीन मद्रास प्रेजिडेंसी के लिए यह एक मॉडल वन प्रभाग था। 1879 तक, अन्नामलई के उप–सहायक संरक्षक के प्रभार में था। बाद में इस टाइगर रिज़र्व को अन्नामलई के तमिलनाडु भाग से अलग कर दिया गया। रिजर्व के तमिलनाडु भाग को अन्नामलई टाइगर रिज़र्व (ATR) कहा जाता है। अन्नामलई टाइगर रिजर्व भारत की पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला में आता है। इसे देश के आठ "सबसे गर्म स्थानों" में से एक माना जाता है। अन्नामलई टाइगर रिजर्व का मुख्यालय पोल्लाच्चि में है। प्रशासनिक रूप से, यह तमिलनाडु वन विभाग के अंतर्गत है।

अन्नामलई टाइगर रिजर्व में विविध जीव–जंतु और वनस्पति हैं। टाइगर रिजर्व में आर्द्र सदाबहार वन, नम पर्णपाती, शुष्क पर्णपाती, सूखे कांटे और शोला वन हैं। मोंटेन घास भूमि, सवाना और दलदली भूमि जैसे अन्य अनूठे स्थान भी मौजूद हैं। मानव निर्मित सागौन के बागानों, यूक्लिप्ट्स, मवेशियों, पाइंस और परम्बिकुलम अलियारू परियोजना बांध आदि के निर्माण से निर्मित गहरे ताजे जल पारिस्थैतिक तंत्र की विविधता को दर्शाते हैं।

टाइगर रिजर्व में पाए जाने वाले पौधों में उपलब्ध, लुप्तप्राय और जोखिम वाली वनस्पतियों की प्रजातियों की बहुत समृद्ध श्रृंखला है। इसमें बांस, कैन, नरकट की विविधता भी अद्वितीय है।स्थानिक पेड़ों सहित फर्न की समृद्ध विविधता देखी जा सकती है।

टाइगर रिजर्व में कई लुप्तप्राय जंगली जानवरों सहित अन्य प्रजातियों की बड़ी संख्या है। 25 से अधिक बाघों की उपस्थिति इसके पारिस्थितिकीय तंत्र को रेखांकित करती है।

अन्नामलई को 'मानवविज्ञान रिजर्व' के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यह छः जनजातियों – मल्लासर, मलई मल्लासर, कादर, एरावलर, पुलयार और मुदुवर – की जन्मस्थली माना जाता है।

पर्यटकों के प्रकृति के बीच अद्भुत प्रवास कराने के लिए यहां रिज़र्व में लगभग 50 सुसज्जित कमरे बनाए गए हैं। इसके लिए ऑनलाइन भुगतान विकल्प के माध्यम से ऑनलाइन बुकिंग की जाती है।

टाइगर वन के ऊपर

कुछ घंटों का आनंद लेकुछ घंटों का आनंद लेने के लिए, टाइगर फ़ॉरेस्ट, सबसे अच्छा पर्यटन स्थल है

अन्नामलई टाइगर रिज़र्व प्रकृति और रोमांच के लिए एक आदर्श सप्ताहांत है।यह बाघ अभयारण्य सभी प्रकार के विदेशी स्थानिक वन्यजीवों का घर है। अंदर घूमने के लिए आपको तीन घंटे से अधिक का समय लगता है।

समयः सुबह 7:00 बजे – शाम 4:30 बजे

निश्चित रूप से एक भगवान का उपहार है जो तमिलनाडु के वन विभाग के भीतर उलझा हुआ है।सफारी पर्यटन की व्यवस्था अच्छी स्थिति में नहीं है। सफारी वैन पुराने हैं। केवल एक घंटे की यात्रा के लिए 200 रुपये प्रति व्यक्ति चार्ज किया जाता है।

अन्नामलई वन्यजीव अभयारण्य पश्चिमी घाट के अन्नामलई पहाड़ियों में स्थित एक संरक्षित क्षेत्र अभयारण्य क्षेत्र का विस्तार कोयम्बतूर जिले के पोल्लाच्चि तथा वलपराई तालुकों में और तिरुप्पूर जिले के उदुमपेट तालुक तक फैला हुआ है। पर्यटक इस अभयारण्य की यात्रा कर जंगली जानवरों को देख सकते हैं।

दर्शनीय सुन्दरता

अन्नामलई अभ्यारण्य को प्रकृति ने अपनी सुंदरता लुटाते हुए बहुत से सुन्दर स्थान दिए हैं। इसमें घास की हरीभरी पहाड़ियां, नाले, झरने, सागौन के जंगल, जलाशय और जीवजन्तु तथा पक्षी सभी को एकत्रित कर दिया है।

अन्नामलई अभ्यारण्य की जलवायु बहुत अच्छी और प्रकृतिक है। इन्फ्रास्ट्रक्चर बहुत अच्छा न होते हुए भी पर्यटकों के लिए अभ्यारण्य है जिंदगी में कम से कम एक बार जरूर घूमने आइए। लेकिन ध्यान दे कि यहां भोजन के विकल्प सीमित हैं। कैंटीन में सिर्फ दक्षिण भारतीय भोजन ही मिलता है। देश के दूसरे क्षेत्रों के लोगों के लिए कठिनाई होती है। प्रवेश–टिकट तो नाममात्र का है, लेकिन गाइड आपके साथ आने के लिए आग्रह करते हैं और उनका कम से कम शुल्क रु.100/– है। जहां तक हो सके सुबह के समय ही जाने की कोशिश करें।

प्रकृति के बीच अद्भूत प्रवास

अन्नामलई टाइगर रिज़र्व में लगभग 50 सुसज्जित और अच्छी तरह से बनाए हुए कमरे हैं जो ऑनलाइन भुगतान विकल्प के माध्यम से ऑनलाइन बुक किए जा सकते हैं।

टॉपस्लिप

वन्यजीव अभ्यारण

पोल्लाच्चि से लगभग 48 कि.मी. दूर, अन्नामलई पर्वत श्रृंखला में अन्नामलई वन्यजीव अभयारण्य पोल्लाच्चि के पश्चिमी में लगभग 1,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। टॉपस्लिप, अन्नामलई टाइगर रिजर्व के छोटे हिस्से में टाइगर रिजर्व फॉरेस्ट है टॉपस्लिप एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है। यह इलाका पहाड़ी

और पथरीला है, जिसमें कई नदियां बहती हैं और कुछ दलदली भूमि और घास के हरे भरे मैदान हैं। पोल्लाच्चि से केवल सीमित बसें ही उपलब्ध हैं। खुली जीप पर्यटन की पेशकश बहुत अच्छी और मददगार थी।गर्मी के दिनों में इसे अवश्य देखना चाहिए। यद्यपि यह दिन के समय गर्म था, लेकिन जानवरों के देखने का समय बहुत अच्छा था। हमने ठंडी हवा के साथ हल्की रातों का आनंद लिया। अच्छे आवास विकल्प 10 कि.मी. के दायरे में उपलब्ध हैं।

पोल्लाच्चि के पास, अन्नामलई पर्वत श्रृंखला में समुद्र तल से 800 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।यह संरक्षित क्षेत्र ''इंदिरा गांधी वन्यजीव अभ्यारण्य'' का ही हिस्सा है। टॉपस्लिप को प्रकृति ने जैसे एक सौम्य ऊंचाई, सुखद जलवायु, वनस्पतियों और जीवों की विविधता का वरदान दिया है। इसके सुरम्य स्थान और शानदार दृश्यों ने इसे कई फिल्म दृश्यों के लिए एक लोकप्रिय स्थान बना दिया है।यहां हाथी अभ्यारण्य परियोजना और बाघ अभ्यारण्य परियोजना भी है।

टॉपस्लिप आने वाले सभी पर्यटकों को पोल्लाच्चि में वन विभाग के वन्यजीव वार्डन कार्यालय (178, मीनकरई रोड, पोल्लाच्चि) द्वारा जारी परमिट लेना आवश्यकता होता है। यहां के निवासियों को परमिट से छूट दी गई है।लेकिन बिना परमिट के आनेवाले पर्यटकों को चेक पोस्ट से ही वापस कर दिया जाता है।

वैसे तो इस क्षेत्र में आज भी तमिल ही सबसे अधिक प्रचलित भाषा है। फिर भी कुछ दुकानदार तथा गाइड कुछ बुनियादी अंग्रेजी और अटपटी सी हिंदी बोलकर आपका काम चला देते हैं।

टॉपस्लिप एक ऐसा स्थान है, जहां जंगली भैंसा, हिरण, जंगली सूअर, हाथी, जंगली कुत्ते, काले भालू, बाघ को देखने की आशा में ''जंगल ट्रेक'' पर जा सकते हैं। चूंकि अधिकांश जानवर रात के समय ही निकलते हैं, इसलिए वन विभाग द्वारा रात में घूमाने का कार्यक्रम बनाया जाता है। एक हाथी प्रशिक्षण शिविर है जिसे दिन में ही देख सकते हैं। कई ऑपरेटर पर्यटक हाथी सफारी भी कराते हैं, जिसमें वह पर्यटकों को जंगल में से गुजारते हैं।

हां, एक बात जरूर है कि टॉपस्लिप में आकर पक्षीविज्ञानी बहुत खुश होते हैं। क्षेत्र में पक्षियों की लगभग 250 प्रजातियां हैं। लेकिन सावधान रहना जरूरी है क्योंकि आपके आसपास सांप या बिच्छू आ सकते हैं।

यहां आप ट्रेकिंग, वैन सफारी और हाथी सफारी का आनंद ले सकते हैं। फॉरेस्ट कैंटीन बहुत सीमित भोजन प्रदान करती है। आपको शीतल पेय और बोतलबंद पानी ही मिल पाएगा। अन्नामलई से ही अपना भोजन पैक करा लें तो अच्छा होगा क्योंकि यहां एक ही कैंटीन है जिसमें सीमित मात्रा में केवल दक्षिण भारतीय भोजन तैयार किया जाता है। इसके अलावा, आपके पास भोजन की कोई व्यवस्था नहीं है।

फॉरेस्ट लॉज

यहां ठहरने के लिए कोई होटल या प्राईवेट लॉज नहीं हैं। वन विभाग विश्रामगृह में मूल रूप से केवल रहने की व्यवस्था है। वैसे तो विश्रामगृह सुसज्जित हैं परन्तु सीमित स्वयंसेवा ही उपलब्ध है। विश्रामगृह के कमरों में रहने पर आपका खाना बनाने के लिए एक निश्चित राशि पर रसोइए मिल जाते हैं। गेस्ट हाउस के लिए वन कार्यालय, पोल्लाच्चि में ही बुकिंग की जाती है और रसीद दिखाने पर आपको कमरा दिया जाता है। वहां पहुंचने का समय : सुबह 7:00 बजे से शाम 4:30 बजे तक है।

हाथी प्रशिक्षण शिविर

टॉपस्लिप से पांच कि.मी. पहले सेतुमदाई बेहतर आवास सुविधाओं सहित टॉपस्लिप में ठहरने का एक अच्छा बेस स्टेशन है।

इसका नाम ब्रिटिश काल के दौरान पड़ा, क्योंकि यहां से बहुत सी लकड़ी फिसल कर नीचे के मैदानों में चली जाती थी।एक संरक्षित क्षेत्र होने के नाते, यह हाथी शिविर, वन्यजीव सफारी, सुखद मौसम और अन्नामलई पहाड़ियों के सुंदर दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है।

अनोखे सागौन के जंगल, बांस के जंगल, पौधों की समृद्ध विदेशी प्रजातियां और जंगली जानवर टॉपस्लिप के प्रमुख आकर्षण हैं। यह बर्ड वाचिंग के लिए भी एक अद्भुत गंतव्य है। टॉपस्लिप से तीन कि. मी. दूर एमटी स्टुअर्ट ब्लॉक भी एक और आकर्षण है। इसमें एक पुराना फॉरेस्ट बंगला है, जिसमें ह्यूगो वुड की कब्र है। वुड जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे तथा पर्यावरणविद् थे। उन्होंने इस क्षेत्र में नियम बनाया था कि एक पेड़ को काटने से पहले दस पौधे लगाना जरूरी होगा ।

वन विभाग अभ्यारण्य में हाथी सफारी और जीप सफारी का आयोजन करता है। निजी वाहनों को अभ्यारण्य में जाने की अनुमति नहीं है। गाइड के साथ जंगल के चारों ओर चार घंटे की 'ट्रैकिंग' भी उपलब्ध है। पर्यटन विभाग ने टॉपस्लिप में कई ट्रेकिंग मार्गों की पहचान की है और गाइडेड ट्रेकिंग टूर आयोजित करता है। ट्रैकिंग मार्गों में से कुछ इस प्रकार हैं : कोलाम्बुमलई – 10 कि.मी., अंबुली प्रहरीदुर्ग – 6 कि.मी., कोझीकुमूथी –12 कि.मी. और करियन शोला – 4 कि.मी.है।

कैसे पहुंचे

तमिलनाडु में टॉपस्लिप का सबसे निकट प्रवेश मार्ग पोल्लाच्चि से ही है। पोल्लाच्चि से टॉपस्लिप के लिए हर दिन केवल छः बसें ही चलती हैं पहली बस सवेरे छः बजे और आखिरी शाम को तीन बजे।

कार द्वारा

चूंकि प्रतिदिन केवल दो बसें ही उपलब्ध होती हैं इसलिए टैक्सी किराए पर लेना ही बेहतर विकल्प है। टैक्सी लेने में एक और लाभ होता है कि यदि आप रास्ते में उतर कर कुछ खाने पीने या फिर प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेना,सैल्फी लेना चाहे तो टैक्सी वाला मना नहीं करता है। वैसे तो, यहां काफी टैक्सियां हैं, फिर भी 'पीक सीजन' के दौरान पर्यटकों की भीड़ को देखते हुए कई बार आसानी से नहीं मिल पाती हैं। इसलिए अच्छा होगा कि पहले से ही कैब बुक करा लें और अपने टूर गाइड या कैब ड्राइवर को पहले से ही बता दें कि आप कहां ठहरे हैं और वह कितने बजे आपको लेने आए।

जाने का सबसे अच्छा समय नवंबर से अप्रैल तक है।

नेशनल पार्क टाइमिंगः सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक।

ट्रेक टाइमिंगः सुबह 7 बजे – दोपहर 2 बजे।

मंकी फॉल

यह एक ऊंचा झरना है। जीवन के कुछ सुखद क्षण बिताने के लिए मंकी फॉल अच्छा स्थान है। वलपराई –पोल्लाच्चि रोड पर लगभग दो कि.मी. पर स्थित इस झरने के जल का आनंद ले सकते हैं। इसके नीचे खड़े होने भर से आप एक चिकित्सीय मालिश के समान महसूस कर सकते हैं .. आपके सिर, गर्दन, कंधे और पीठ पर प्रभावशाली रूप से उंचाई से गिरता जल आपकी थकान को तो दूर करता ही है, साथ ही शरीर में हो रहे दर्द को भी दूर करता है।

झरने तक जाने के लिए बने कच्चे 'कंकड़ वॉकवे' पर चलना अथवा खड़े होना आपके पैरों में होने वाले दर्द को दूर करता है। 'कंकड़ वॉकवे' पर ज्यादातर बुजुर्ग ही दिखाई देते हैं। सुबह के समय यहां भीड़ नहीं होती है। प्राय: 10 बजे के बाद ही लोगों का आना शुरू होता है। यहां आकर खूब नहाइए, तैरने का आनंद लीजिए। यहां ज्यादा बड़ा स्थान नहीं है। लेकिन पूरी तरह स्वच्छ पानी में खड़े होने या बैठने का अलग ही आनंद होता है।

प्रति व्यक्ति प्रवेश शुल्क 30 रू. है। बस स्टैंड से बसों की अच्छी सुविधा है। यहां बंदर भी बहुत हैं। यहां

बंदरों से सावधान रहें। रखरखाव बेहतर है। लेकिन आसपास कोई दुकान नहीं है।

मंकी फॉल्स का सही आनंद लेने के लिए आधा दिन–लग सकता है। प्राकृतिक रूप से बहुत ही खूबसूरत और शांतिपूर्ण क्षेत्र, मनमोहक वातावरण में पक्षियों की आवाज सुनने के लिए लोग इस जगह को पसंद करते हैं।

गिरी में प्रवाह मौसमी है। मौसमी होने के कारण स्थानीय स्थानीय गाइड से पानी के प्रवाह के बारे में पहले से ही जानकारी ले लेना अच्छा रहेगा। यह झरना शाम को पांच बजे बंद किया जाता है और शाम 04.00 बजे टिकट काउंटर बंद हो जाता है।

मंदिर

पोल्लाच्चि तथा इसके आसपास वैसे तो अनेक मन्दिर है परन्तु हम यहां कुछएक विशेष मन्दिरों का का ही उल्लेख करेगें।

पोल्लाच्चि के अन्य पर्यटन स्थल

अरुलमिगु सुलक्कल मरियम्मन तिरूकोविल

पोल्लाच्चि शहर से 15 कि.मी. दूर कोविल्पलायम के पास सुक्कल नाम के एक गांव में अरुलमिगु सुलक्कल मरिअम्मां तिरूकोविल एक लोकप्रिय हिन्दु मन्दिर है। इस मंदिर का वातावरण प्रदूषितरहित तथा शांतिपूर्ण है। इतना ही नहीं मंदिर अच्छी तरह व्यवस्थित है। इसे मंदिर में शक्तिशाली देवी की प्रत्येक शुक्रवार को यहां विशेष पूजा की जाती है और प्रसाद वितरण किया जाता है।

सुलक्कल और आसपास के अन्य गांवों के निवासी आमतौर पर अपने घरेलू पशुओं को चरने के लिए जंगल में छोड़ देते थे। एक ग्रामीण की गाय ने दूध देना बंद कर दिया। उसे संदेह हुआ कि कोई और उसका दूध निकाल लेता है। एक दिन वह गाय के पीछा करते हुए जंगल में गया तो देखा कि पहाड़ी पर एक स्थान पर उसकी गाय के दूध की धार बह रही थी। जब वह निकट आया तो ठोकर लगकर वह गिर गया। उसे आश्चर्य हुआ कि उस स्थान से रक्त निकल रहा था। उसी दिन देवी ने उनके सपने में दर्शन दिए और उन्हें एक मंदिर बनाने के लिए कहा, जिसे अरुलमिगु सुलक्कल मरियम मंदिर कहा जाता है।

माना जाता है कि मंदिर का निर्माण लगभग तीन सौ साल पहले स्थानीय लोगों ने किया था। इस मंदिर के बारे में अजीब मान्यता है कि दक्षिण भारत के नेता चुनाव लड़ने से पहले इस दिव्यशक्ति मंदिर में दर्शन कर आशीर्वाद लेने आते हैं और चुनाव जीतते हैं। इसके अलावा भी आसपास के लोग अपने कष्ट दूर करने की प्रार्थना करने आते हैं। इसलिए सुलक्कल मरिअम्मा को एक शक्तिशाली देवी माना जाता है। यदि आप चुनाव न भी लड़े तो भी सुन्दर प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने के लिए मंदिर में अवश्य आएं लेकिन ध्यान रखें कि सड़कें बहुत संकरी हैं। आसपास कोई होटल उपलब्ध नहीं है। केवल काफी और चाय की पांच सात दुकानें उपलब्ध है। मंदिर के पास एक छोटा सा अचार का कारखाना भी है।

मंदिर भक्तों के लिए सभी दिनों में सुबह 6 से रात 8 बजे तक खुला रहता है। तमिल माह के अंतिम महीने में मंदिर का त्यौहार चिथिरई (अप्रैल – मई) में मनाया जाता है।

अरुलमिगु सुब्रमण्यर तिरूकोविल

शहर से 10 कि.मी. दूर यह सबसे पुराना मंदिर है। मुख्य देव शिवभगवान हैं जिन्हें सुब्रमण्यर कहा जाता है। कुछ लोग इसे काशी विश्वनाथ लोकनायक मंदिर भी कहते हैं। मंदिर के निर्माण की वास्तुकला उच्च कोटि की है। यह स्थान सच में ही बहुत सुंदर है और अच्छी साफ सफाई रखी जाती है। प्रत्येक सोमवार तथा शिवरात्री के विशेष दिनों में यहां बहुत भीड़ रहती है।

तरल गतिकी में एक अनूठा अनुभव: मंदिर के प्रवेश द्वार पर में यदि आप जून–सितंबर में काशी विश्वनाथ लोकनायकी मंदिर जाते हैं, तो आपको गोपुरम के प्रवेश द्वार में हवा के प्रवाह का एक अनूठा अनुभव मिलेगा। मंदिर के गोपुरम में प्रवेश करने पर आपको ऐसा लगेगा जैसे कि हवा आपको बाहर धकेल रही है। लेकिन एक बार जब आप प्रवेश द्वार से अंदर की ओर कुछ दूरी को पार कर लेते हैं तो आपको लगेगा कि तेज हवा 180 डिग्री घूम कर आपको मंदिर में अंदर की ओर धकेल रही है। यहां स्पष्ट दिखाई देने वाली कोई पवन सुरंग या अन्य अवरोध नहीं हैं। इस फिनोमिना का तमिल भाषा में विवरण दरवाजे के रास्ते पर ही लिखा है। आज तक यह वैज्ञानिकों के लिए पहेली बना हुआ है। यह अनुभूति केवल मानसून के तीन या चार महीनों में ही होती है।

आराधना का समय सुबह 6.00 बजे से दोपहर 12.00 बजे और शाम को 5.00 बजे से 8.00 बजे तक है।

भद्रकाली मां मंदिर

यह देवी 'काली' का मंदिर है। इन्हें विद्या और विजय की देवी माना जाता है। यहां आने वालों में ज्यादातर छात्र होते हैं जो परीक्षा में उत्तीर्ण होने का आशीर्वाद लेने आते हैं और इसे संयोग ही कहेंगें कि यहां मन्नत मांगने वाले छात्र परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते रहे हैं। मंदिर छोटा लेकिन सुंदर है और बहुत साफ सुथरा है।

अलागुनाची अम्मां मंदिर

16वीं सदी में बनाया गया अलागुनाची अम्मां मंदिर पोल्लाच्चि से 80 कि.मी. दूर है। मंदिर का निर्माण वल्लीराचल के कुछ लोगों द्वारा किया गया था। मंदिर की मुख्य देवी, अलागुनची अम्मां कोंगु गौंड समुदाय के कबीले देवी हैं। यह माना जाता है कि कबीले के कुछ लोग अपनी कुल देवी की मूर्ति के साथ यहां से गुजर रहे थे। उनके सो जाने के बाद मूर्ति लुप्त हो गई थी। इसलिए कबीले के लोगों ने इसी स्थान पर एक मंदिर बनाने और मंदिर की देखभाल करते हुए क्षेत्र में ही रहने का फैसला किया। एक सुन्दर स्थान पर बने इस मंदिर में भी श्रृद्धालु पर्यटकों का तांता लगा रहता है।

प्रकृति की गोद में अलागुनाची अम्मां मंदिर

अरुलमिगु मसानी अम्मां मंदिर :

अन्नामलई की पहाडियों में, एक ऐसा मंदिर है जहां मिर्च पीस कर भक्तगण अपनी मन्नतें पूर्ण करते हैं। यह भी विश्वास है कि यहां तीन सप्ताह में ही भक्तों की मनौती पूरी हो जाती है। मंगलवार और शुक्रवार को महिलाएं इस मंदिर में ज्यादा आती है। वार्षिक कुंड्रम पर्व मंदिर का मुख्य उत्सव है। आइए, आपको इस अद्भूत मंदिर के बारे में बताते हैं। देवी मसानी अम्मां को अन्नामलई मसानी अम्मा या अरुलमिगु मसानी अम्मां भी कहा जाता है। पोल्लाच्चि से लगभग 25 कि.मी. दूर, इस मंदिर को स्थानीय निवासी 'न्याय की देवी' भी कहते हैं।

इस मंदिर के इतिहास की कहानी काफी दिलचस्प है। प्राचीन काल के दौरान, अन्नामलई क्षेत्र पर नन्नूर के रूप में जाना जाता था और इस क्षेत्र पर नानूर नाम के जागीरदार का शासन था। बागों से फल चुराने वाले लोगों पर उसने कठोर दंड का ऐलान किया था। एक दिन किसी दूर गांव की एक बूढ़ी महिला ने एक फल तोड़ लिया और पकड़े जाने पर उसने कहा कि उसे ऐसे किसी सख्त नियम के बारे में पता नहीं था। उसके बार बार प्रार्थना करने पर भी, मौत की सजा देते हुए एक शमसान घाट में मारा गया। उसे मारते समय वह बार बार कहती रही कि इस अन्याय के विरूद्ध कोई तो मेरी मदद करो। उस समय कोई सामने नहीं आया किन्तु वृद्धा की मृत्यु के चार दिन बाद ही नन्नूर के ग्रामीणों ने विद्रोह कर दिया और नानूर को मार डाला। बाद में, कुछ

महिलाओं ने उस बूढ़ी माता का मंदिर बनाया। चूंकि महिला को शमसान में मारा गया था, उसे देवी को शमसानी कहा गया। बाद में, समय के साथ शमसानी बदल कर मसानी हो गया। लोगों की मान्यता है कि मसानी अम्मां न्याय की देवी है जो अपने दृढ़ विश्वासी भक्तों को न्याय देती है। देवी की 15 फीट लंबी मूर्ति है, जिसके चार हाथ हैं। प्रत्येक हाथ में सर्प, त्रिशूल, कपाल और डमरू हैं। मंदिर में नीति काल, या न्याय का पत्थर नाम से एक ऐसा पत्थर मौजूद है जिसके बारे में माना जाता है कि इसमें अद्वितीय शक्तियां हैं। ऐसे भक्त जिनका कोई सामान खो गया हो, दुश्मनों द्वारा व्यापार में धोखा दिया गया हो आदि प्रार्थना कर न्याय मांगने आते हैं। अरुलमिगु मसानी अम्मा मंदिर एक सुंदर मंदिर है। मंदिर में अच्छी चित्रकारी की गई है और निर्माण भी उत्तम श्रेणी का है। आप यहां कुछ घंटे बिता सकते हैं। मंदिर में उपस्थित पुजारी और दूसरे लोग आपको परेशान नहीं करते हैं। उनका मित्रवत व्यवहार अच्छा लगेगा। मंदिर सुव्यवस्थित और अच्छा स्थान है। दोपहर तक तो मंदिर में भीड़ होती है। शाम के समय इस मंदिर में जाएं तो शान्ति से दर्शन होते हैं। कार पार्किंग के लिए 40 रुपए की दर पर करीब 50 कारों पार्किंग व्यवस्था है। बसों के लिए बाहर की ओर ही जगह दी गई है।मंदिर एक शांत स्थान पर होने के कारण जब वह व्यक्ति मंदिर में प्रवेश करता है उसके मन को शांति मिलती है।

यहां की विशेषता है कि भक्तजन लाल मिर्च को पीसकर पत्थर पर लगाते हैं और प्रार्थना करते हैं। यह माना जाता है कि देवी उन्हें जीवन में सभी प्रकार की बुराईयों से मुक्त करती है। पोल्लाच्चि से, मसानी अम्मां मंदिर के लिए मुश्किल से आधे घंटे का सफर है।

अवनाशीलिंगेश्वर : यह पोल्लच्चि से 40 कि. मी. दूर है। सवावे संत सुंदरमूर्ति नयनार ने अपने ''थेवरम'' के माध्यम से इस जगह पर मगरमच्छ द्वारा मारे गये एक नवयुवक को पुनर्जीवीत किया था। इस मंदिर को दक्षिणी वाराणसी और तिरूपुक्कियाप्पुर के नाम से भी जाना जाता है। तीरूमुलार, अरूणागिरीनर और मीनीकावकर जैसे संतों ने भगवान की आराधना और स्तुति में भजन गाए हैं। मंदिर का गोपुरम 100 फीट उंची मीनार जैसा है।

ध्यानलिंगमः यह मंदिर कोयंबटुर से 30 कि. मी. दूर वेल्लियानगिरी पहाडी के तराई में स्थित है। लिंगम की उंचाई करीग 14 फीट है जो दुनिया में पारा धातु से बना सबसे बड़ा लिंगम है। जीवन के सभी पहलु को सात चक्र के रूप में शिखर तक उर्जित करके उसके बाद बंद करके प्रतिस्थापित किया गया है। यह ज्ञान और अध्यात्मिक मुक्ति द्वार 9 फिट व्यास की एक ही ग्रेनाईट की चट्टान से बनाया हुआ है। इसे किसी विशेष धर्म और विश्वास कि रूप में नहीं माना जाता है।

तिरुमूर्ति हिल्सः

तिरुमूर्ति का अर्थ है तीन मूर्तियाँ; तिरुमूर्ति मलई (पहाड़ियों) को ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर (शिव) की तीन मूर्तियों के नाम से जाना जाता है।

तिरुमूर्ति हिल्स न केवल प्रकृति प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है, बल्कि एक धार्मिक स्थल भी है। अरुलमिगु अमानलिंगेश्वर मंदिर इस क्षेत्र के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। इस तीर्थस्थल की खासियत यह है कि इसमें तीनों देव (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) प्रमुख देव हैं। वास्तव में, इस मंदिर के बारे में भी किंवदंती है जो इसे एक पवित्र स्थान बनाती है।

तिरुमूर्ति पर्वत के विषय में एक किंवदंती कि यहां ऋषि अत्रि अपनी पत्नी अनसूइया के साथ रहते थे। अनसूइया देवी एक पतिव्रता स्त्री थी। एक बार नारद ऋषि ने ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पत्नियों के सामने अनसूइया की भक्ति की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने ईर्ष्या से भरकर अपने पतियों को अनसूइया की भक्ति की परीक्षा लेने को कहा। एक दिन विष्णु, शिव और ब्रह्मा ऋषि अत्रि की अनुपस्थिति में साधु के वेश में उनके घर आए और 'भगवती भिक्षाम देहि' कहने लगे। अनसूइया को लगा कि यह कोई साधारण साधु नहीं हैं। उसने उन्हें आसन देकर, खाना बनाया और जब परोसने लगीं तो साधुओं ने एक शर्त रखी कि वह उन्हें बिना वस्त्रों के भोजन परोसा जाए अन्यथा उनके पति ऋषि अत्रि की सारी शक्तियां नष्ट हो जाएंगी। यह वह समय था जब अतिथ की सेवा का अर्थ देवताओं की सेवा माना जाता था। इस दुविधा में, उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि तीनों साधु छोटे बच्चों में परिवर्तित हो जाएं। वह बाहर आई तो देखा कि छोटे– छोटे तीन बालक लेटे थे। उन्हें अपना दूध पिलाया और पालने में सुला दिया। जब ऋषि अत्रि घर आए तो पूरी बात सुनाई। वह उन्हें उनके मूल रूप में वापस लाए। त्रिदेव ने अनसूइया को वरदान दिया और उसके तीन पुत्र पैदा हुए; शिव के अंश के रूप में ऋषि दुर्वासा, विष्णु के रूप में दत्तात्रेय और ब्रह्मा के रूप में चंद्रमा का जन्म हुआ।

इसलिए, इस क्षेत्र का नाम तिरुमूर्ति मलई (पर्वत) रखा गया है। तिरुमूर्ति हिल्स में और उसके आसपास घूमने के स्थानों में तिरुमूर्ति हिल्स (श्री अमानलिंगेश्वर मंदिर), पंजालिंगा झरना और तिरुमूर्ति डैम प्रसिद्ध हैं।

तिरुमूर्ति पहाड़ियों का एक दूर का दृश्य फोटो

तिरुमूर्ति मलई भी तमिल और मलयालम फिल्मों का एक पसंदीदा शूटिंग स्थान है। तिरुमूर्ति पोल्लाच्चि से 40 कि.मी. दूर है। यहां जाने के लिए बसें उपलब्ध हैं। पोल्लाच्चि से कैब या टैक्सी किराए पर लेना बेहतर है।

अरुलमिगु श्री वेलायुधस्वामी मंदिर - सेन्जरिमलई

यह मंदिर मूल रूप से 'कारैकल चोल' द्वारा बनाया गया था और वीरापल्लई –III द्वारा 13 वीं शताब्दी में इसका पुनर्निमाण कराया गया था। ज्ञानतीर्थ सुनई 'नामक पवित्र झरना और करुणोचि' के रूप में जाना जाने वाला एक पवित्र वृक्ष देखा जा सकता है। यहां भगवान मुरुगन की मंथरागिरि और श्री वेलायुधस्वामी के रूप में आराधना की जाती है।

अरुलमिगु मघुदेश्वरन मंदिर

लगभग 1200 वर्ष पुराना, यह भगवान शिव का मंदिर है। यह पोलाच्चि से 18 कि.मी. दूर अन्नामलई – सुंगम रोड पर रामानमुथलीपुदुर गांव के पास है। हरी भरी घाटियों से बीच इस मंदिर के पास बहने वाली नदी इस स्थान को और सुंदर बनाती है। मंदिर और उसके स्तंभ जर्जर हो रहे थे, राज्य सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा इसका पुनर्निर्माण कराने का प्रस्ताव है।

अतुल्य भारत' पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन क्षेत्र के लेखकों, अनुसंधानकर्ताओं, ब्लॉगर्स, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित हैं।

- लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय एवं विकास कार्यों पर आधारित हो।
- साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो वस्तुस्थिति के अनुसार अधिक भी हो सकता है। किसी विशेष अवसर अथवा स्तंभ के लिए भेजे गए लेख में लगभग 1500 शब्दों अथवा अधिकतम का भी स्वागत है। लेख को बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ उपयुक्त फोटोचित्र/रेखाचित्र (प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के) भी संलग्न करें।
- लेख सरल भाषा में लिखा हो।
- ई–मेल से भेजे जाने वाले लेख OPEN FILE में तथा फोटोग्राफ, यदि कोई हो, . jpg अथवा .png में ही भेजें। कोई भी लेख/सामग्री pdf में भेजने का कष्ट **नहीं** करें। कागज के एक ओर टाइप किया हुआ या स्पष्ट रूप से हस्तलिखित हो। टाइप किया लेख (फोन्ट सहित) ई–मेल माध्यम से भेजें।
- लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी उत्तरदायित्व स्वयं लेखक का होगा।
- लेख इस पते पर भेजें : प्रबंध संपादक, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय,कमरा नं0 18, सी–1 हटमेंट्स, दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com है।

यादें जो याद रहीं

विदूषी गंगू बाई हंगल

–मोहन सिंह

बात सन् 1971 के दिसंबर की है उन दिनों मैं लीडर प्रैस में काम करता था। दिसंबर की 25 तारीख को मैं बैंगलौर में था। वहां जाते ही कार्यालय से तार मिला कि कल तक यहां से हुबली जाकर श्रीमती गंगू बाई हंगल से मिल कर उन्हें निम्नलिखित सूचना देकर उनकी प्रतिक्रिया तथा साक्षात्कार भेजें। बस क्या था मैं उसी दिन शाम को बैंगलोर से रेलगाड़ी से रवाना हुआ और सवेरे के समय जा पहुंचा, हुबली, गंगूबाई के घर। उस समय 10 बजे होंगे कि मैंने उनके घर पर दस्तक दी। अंदर से एक लम्बी सी लड़की आई। बहुत ही साधारण सी, पता नहीं क्यों मुझे लगा कि शायद नौकरानी होगी। मेरे अपना परिचय देने पर वह अंदर ले गई। एकदम सादा घर, अंदर एक कमरे में बिठा दिया। एक ओर एक दीवान था तो दूसरी ओर दरी बिछाई हुई थी। दरी वाली साइड में कुछ वाद्य यंत्र रखे थे। कुछ ही देर में मुझे भारत की उस महान गायिका से मिलने का सौभाग्य मिला, जिनका नाम था गंगूबाई हंगल। उन्हें अपना परिचय दिया और एक शुभ समाचार सुनाया कि भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया जा रहा है। वह मुस्कराई, ऐसा लगा कि उन्हें कोई खास खुशी नहीं हुई। थोड़ी देर में ही वही लड़की काफ़ी लेकर आई। हम तीनों ने काफ़ी का स्वाद लिया और कुछ इधर–उधर की बातें होने लगीं। अब मैं सीधे ही अपनी बात पर आ गया अर्थात उनके बारे में जानने के बारे में कुछ प्रश्न किए। **इनके बारे में आगे चर्चा करेंगे।**

कोई दो–तीन माह के बाद की बात है। विज्ञान भवन में महामहिम राष्ट्रपति जी के करकमलों से पद्म पुरस्कार प्रदान किए जाने थे। कार्यक्रम को कवर करने के लिए मैं भी वहीं था। गंगूबाई के आने पर उन्होंने देखा तो अरे भई तुम भी यहीं हो कह कर पीठ थपथपाई, हाल पूछा और उनके साथ आई 'लायज़न अधिकारी' महिला ने उन्हें उनके स्थान पर बिठा दिया। बहुत से गणमान्य व्यक्ति तथा जानेमाने कलाकार मौजूद थे। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भी स्वयं राष्ट्रपति जी के साथ मौजूद थीं। पुरूष कलाकारों को पहले पुरस्कार प्रदान किए गए।

* पत्रिका के प्रबंध संपादक

गंगू बाई हंगल को राष्ट्रपति जी के सामने बुलाते समय श्रीमती गंगू बाई हंगल पुकारा गया। प्रोटोकॉल के अनुसार उन्हें सीधे ही राष्ट्रपति जी के सामने जाना था। लेकिन वह राष्ट्रपति जी के सामने न जाकर, कुछ दूरी पर रुक कर, एक ओर खड़ी हो गईं। उन्होंने कहा, 'हमारे देश भारत के माननीय राष्ट्रपति जी, आदरणीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिराजी और यहां बैठे भाई बहनों, यह पुरस्कार तो हम ले रहे हैं। मगर मन में एक बात जरूर उठ रही है, जिसे मैं कहना चाहती हूं। वह ये है कि हम सभी पूरी मेहनत से अपनी साधना करते हैं। लेकिन हमारे भाईयों का नाम पुकारते समय उन्हें 'पंडित' या 'उस्ताद' जैसे शब्दों से बुलाया जाता है। मगर महिला कलाकारों को 'श्रीमती' कहकर बुलाया गया है। दुख होता है कि मेरी बहनों को ऐसे ही किसी आदरसूचक शब्द से सम्बोधित नहीं किया गया.. उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा। तभी इंदिरा जी उनकी ओर आईं और उनकी बात का समर्थन करते हुए उनसे ही ऐसा कोई आदरसूचक शब्द बताने को कहा। दर्शकों में से ही किसी महिला की आवाज आई 'विदुषी'। श्रीमती हंगल ने कहा कि यह एकदम ठीक रहेगा। उसी समय इंदिरा जी ने महिला कलाकारों को 'विदुषी' शब्द से सम्बोधित करने को कहा और कहा,'विदुषी गंगू बाई हंगल'। फिर, दोबारा से उनका नाम पुकारा गया 'विदुषी गंगू बाई हंगल' और उन्होंने आगे बढ़कर पुरस्कार प्राप्त किया। उस दिन से सभी महिला कलाकारों को 'विदुषी' सम्बोधित किया जाता है।

यह गंगू बाई हंगल का साहस था जो इतने बड़े कार्यक्रम में ऐसी बात उठाकर महिला कलाकारों को भी एक सम्मान दिलाया।

उनसे दूसरी मुलाकात को याद करता हूं। 1975 में दिल्ली के कुछ पत्रकारों तथा लेखकों ने श्रीमती इंदिरा गांधी के सम्मान में वीरांगना के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की थी। एक दिन यह पुस्तक उन्हें समर्पित करने के लिए दिल्ली के बहुत से लेखक और पत्रकार उनके घर पर पहूंचे। सुबह 8.30 बजे का कार्यक्रम तय किया गया था। मैं भी सुबह आठ बजे के आस पास 1,सफदरजंग रोड पर पहुंच गया था। प्रधानमंत्री जी के आने में अभी समय था। मैं और (स्व.) श्री राजेन्द्र अवस्थी जी हॉल के बाहर ही खड़े बातें कर रहे थे। तभी देखा कि अंदर से गंगूबाई हंगल आ रही थी। मैने चरण स्पर्श किए, वह भी मुझे पहचान गईं और हाल चाल पूछा तो बताने लगीं इंदिरा जी से मिलने आई थी। कल कमानी में हमारा प्रोग्राम है, सभी लोग जरूर आना। अगले दिन, मैं कमानी ऑडिटोरियम में पहुंच गया और सीधे ही ग्रीनरूम की ओर चला गया, जहां वह अपने सहयोगियों को प्रैक्टिस करा रही थीं। उन्होंने कहा कि कल के अखबार में मेरे कार्यक्रम के बारे में जरूर लिखना। उस दिन मुझे पता चला कि उनके घर पर मिली वह लड़की उनकी बेटी कृष्णा(हंगल) थी।

मैं कार्यक्रम में बैठा उनका गायन सुन रहा था, तो अहसास हुआ कि वास्तव में कुछ समय पहले जो सुना था वह एकदम ठीक था। गंगूबाई गाती है तो यह आकाश को छू लेती है और अगर कृष्णा गाती है यह दिल को छू लेती है। गंगू बाई की आवाज बहुत भारी थी। उन्हें सुनने से ऐसा लगता था कि जैसे किसी शिखर से आवाज आ रही हो। वहीं उनकी संगत करने वाली उनकी बेटी कृष्णा की आवाज बहुत कोमल थी। जब वह दोनों मिलकर गातीं तो ऐसा लगता कि एक स्वर तो आकश से उतर रहा हों और दूसरा (कृष्णा) जैसे कहीं समुद्र की गहराईयों से आ रहा हो। कार्यक्रम समाप्त होने पर, उनसे मिलने का समय मांगा तो कहने लगी यह भी कोई बात है हम

यहां कौन से पहाड़ तोड रहे हैं। कल हमें कहीं नहीं जाना, आ जाओ।

अगले दिन ज्ञात हुआ कि कृष्णा ने संगीत की औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी, वह तो बस मां को गाते और रियाज करते हुए देख कर ही संगीत सीख गई थीं। कुछ समय बाद मां के साथ संगत करने लगी थीं। बाद में कृष्णा हंगल ने भी एकल गायन के कुछ कार्यक्रम प्रस्तुत किए थे। उनसे हुई बातचीत के अंश उन्हीं के शब्दों में ....

''मुझे संगीत की शिक्षा अपनी माता अंबाबाई से मिली, जो कर्नाटक संगीत की अच्छी गायिका थी। इसलिए संगीत के प्रति जन्मजात लगाव था और आज यह सोच कर हंसी आती है कि मैं बचपन के दिनों में ग्रामोफोन सुनने के लिए सड़क पर दौड़ पड़ती थी और उस आवाज की नकल करने की कोशिश करती थी। बेटी में संगीत की प्रतिभा देखकर मां (अम्बाबाई) ने कर्नाटक संगीत के दिग्गज, गुरू एच. कृष्णाचार्य से संगीत की शिक्षा दिलावाई। बहुत समय तक मैं कर्नाटक संगीत ही गाती थी। लेकिन मेरे गाने पर कोई वाह तक नहीं कहता, एक दो बार तो ऐसा लगता कि लोग बीच मे ही उठकर चले जाते थे। एक दिन माताजी ने विचार किया और बताया कि मेरी आवाज बहुत मोटी और भारी होने के कारण कर्नाटक संगीत के लायक नहीं है। इसलिए उन्होंने सलाह दी कि हिन्दुस्तानी संगीत गाना अच्छा रहेगा। बस उसी दिन से मैं हिन्दुस्तानी संगीत गाने लगी।''

''मैं अपने पड़ोसी के घर के पीछे लगे आम के पेड़ से आम चोरी करना कभी नहीं भूल पाई हूं। बचपन में सभी बच्चे ऐसा करते हैं। पेड़ से फल तोड़ने में कुछ अलग ही मजा आता था। पर मुझे इसलिए याद है कि एक दिन आम तोड़ते हुए अचानक पड़ौसी आ गए, मेरे साथ के दूसरे बच्चे तो भाग गए पर उसने मुझे पकड़ लिया। भला बुरा कहते हुए उठाकर बाहर फैंक दिया, यहां तक बोला कि सड़कों पर गाती घूमती रहती है। बाद में मेरे घर पर मां को बहुत कुछ कहा, गाने वाली की लड़की दोबारा इधर दिखाई दी तो अच्छा नहीं होगा। संयोग से,कुछ समय बाद, वही पड़ौसी महाशय मुझे 'गंगूबाई दी ग्रेट' कहने लगे थे।''

''यह वह समय था जब रेडियो नहीं था। ज्यादातर दुकानों या घरों में ग्रामोफोन होते थे जिनपर रिकार्ड बजाए जाते थे। उन पर भी अधिकतर लोग शास्त्रीय संगीत ही सुनते थे। गजलों आदि के रिकार्ड भी बहुत कम मिलते थे। मुझे गाने का ऐसा शौक था कि एक बार एक दुकान में सवाई गंधर्व का रिकार्ड बज रहा था और मैं बाहर सड़क की पटरी बैठी सुन रही थी...सुनते–सुनते जाने कब मुझे नींद आ गई। आंख खुली तो अपने घर में थी। उस दिन मां ने खूब डांटा। ऐसे ही एक दिन एक सब्जी वाला अपने ठेले पर रखे ग्रामोफोन पर ऊंची आवाज में कोई राग बजाता जा रहा था। मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं उसके पीछे–पीछे चल पड़ी। वह तो एक ओर मुड़ गया लेकिन तेजी से भागती आ रही एक गाय ने मुझे टक्कर मार दी। कई दिन तक बिस्तर में पड़ी रही।''

''बहुत सारी बातें जिंदगी में हुई हैं जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकती। उस समय मैं 10–11 साल की ही थी। बेलगाम में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था। इसमें गांधी जी भी आए थे। इसके अलावा देश के बड़े बड़े नेता मौजूद थे। मुझसे मंच पर गाने को कहा गया। मैने पुरन्दरदास के दो भजन सुनाए। सबने मेरी सराहना की। गांधी जी ने भी मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया। जब सब लोग खाना खाने के लिए बैठे तो कुछ लोगों को, जिनमें मैं भी थी दूर अलग बिठाया गया। अच्छा नहीं लगा, पर मैं समझ गई थी ऐसा क्यों किया गया था।''

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सवाई गंधर्व मेरे वास्तव में गुरु बने। जब हमारा परिवार हुबली में आया, तब वह हुबली में नहीं रहते थे। संगीत सीखने के लिए मैं कंदगोल तक जाने के लिए 30 कि.मी. तक रेलगाड़ी से जाती और रेलवे स्टेशन से गुरू जी के घर तक, लगभग चार कि.मी. पैदल ही जाती थी। यहीं पर पंडित भीमसेन जोशी और फिरोज दस्तूर भी आते थे और उनके साथ ही बैठकर ही संगीत की शिक्षा ली। इसलिए गुरू सवाई गंधर्व के पास सप्ताह में तीन दिन ही प्रशिक्षण होता था। कुछ समय बाद, सवाई गंधर्व भी हुबली शहर में ही आकर बस गए, मैंने उनसे तीन साल तक प्रशिक्षण लिया।''

''कर्नाटक के छोटे शहरों में रहते हुए मुझ पर इसका बुरा असर पड़ा। उस समय समाज में पुरुष का वर्चस्व कुछ ज्यादा ही था, महिलाओं को अपने मन से कुछ करने की अनुमति नहीं दी थी। मैं एक गायिका बनना चाहती थीं। समाज के लोगों ने कई तरह की बाधाएं खड़ी करने की कोशिशें की एक तो महिला उस पर केवट, जिससे गायन को कैरियर बनाने से रोक दिया गया।''

कर्नाटक के धारवाड़ जिले के शुक्रवार पेठ में देवदासी परंपरा वाले केवट परिवार में 5 मार्च,1913 को उनका जन्म हुआ था। उनके पिता, श्री चिक्कुरो नाडार, पेशे से एक केवट और किसान थे, जबकि उनकी मां अंबाबाई गृहिणी थी लेकिन कर्नाटक संगीत की अच्छी गायिका भी थीं। गंगूबाई हंगल बस शुरू के ही कुछ वर्षों के लिए स्कूल जा सकी। वर्ष 1928 में गंगूबाई के स्कूल के प्रारंभिक वर्षों में ही उनका परिवार हुबली शहर आ गया था।

''हमें बचपन में अक्सर जातिगत टिप्पणियों का सामना करना पड़ा और जब मैंने गायकी शुरू की उस समय महिलाओं के गायन को लोग एक अच्छे पेशे के रूप में नहीं देखते थे। इसलिए मुझे भी लोग 'गानेवाली' कहते थे।''

''जब मैने कृष्णाचार्य की संगीत अकादमी में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अपना पहला औपचारिक पाठ आरंभ किया तब मैं सिर्फ 13 वर्ष की थी। हुबली के आने के बाद दत्तोपंत देसाई से संगीत की शिक्षा ली। उसके बाद सवाई गंधर्व से सीखा। मैने एक वर्ष के भीतर द्रुतलय में 60 रचनाएं सीखी।''

किराना घराने की परंपरा को बरकार रख रखते हुए गंगूबाई इस घराने और इससे जुड़ी शैली की शुद्धता के साथ किसी तरह का समझौता किए जाने के पक्ष में नहीं थी। 16 वर्ष की उम्र तक सवाई गंधर्व ने मुझे भैरव, असावरी, तोड़ी, भीमपलासी, पुरिया धनाश्री, मारवा, केदार और चंद्रकौंस राग ही सिखाएं और इन्हीं रागों को गाने से सबसे अधिक वाहवाही मिली।

''हमारा बचपन परंपरागत और बहुत अच्छा नहीं रहा था। हमारा एक सीमित परिवार रहा था। अक्सर अपने समाज और आसपास के बच्चे गाने वाली कह कर मेरा मजाक बनाते थे। ऐसे ही कई लोगों के बीच रह कर, बड़ी हुई पर अपना संगीत नहीं छोड़ा और गायन को ही अपने पेशे के रूप में चुना।''

'हुबली में बसने के तीन साल बाद, एक दिन एक कार्यक्रम में मेरा गायन सुन कर हुबली में रहने वाले एक ब्राह्मण वकील गुरुराव कौल्गी ने मुझसे शादी का प्रस्ताव रखा। मैने तो मना कर दिया क्योंकि वे एक ब्राह्मण परिवार के थे और मैं मल्लाह या केवट थी। उस समय में ऐसा विवाह कोई सामान्य बात नहीं थी। मगर कौल्गी आदर्श स्थापित करना चाहते थे। वह भी अपनी जिद पर अड़ गए और अंत में मुझको उनकी बात माननी पड़ी और उनसे विवाह कर लिया। पति

ने जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मेरी संगीत की राह को और प्रशस्त किया। हमारा वर्ष 1929 में, सोलह साल की उम्र में विवाह हुआ था। एक बेटी (कृष्णा) और दो बेटों (बाबूराव और नारायण) का साथ मिला था। मगर 20 वर्ष की आयु में ही बड़ा सदमा लगा। विवाह के चार साल बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। अब अपने बच्चों के पालन पोषण हेतु पैसे कमाने के लिए मेरे हाथ में सिर्फ तानपुरा ही था। एक दो बार तो गहने और कुछ घरेलू सामान तक बेचने पड़े थे।''

गंगूबाई ने अपने गुरु सवाई गंधर्व को याद करते हुए बताती थीं कि मेरे गुरूजी ने यह सिखाया कि जिस तरह से एक कंजूस अपने पैसे को सम्भाल कर रखता है, ठीक उसी तरह सुर का इस्तेमाल करो, इससे श्रोता राग की हर बारीकियों के महत्व को संजीदगी से समझ सकेंगे। गुरु–शिष्य परंपरा को गंगूबाई ने बरकरार रखा।

''चारों ओर से दबाव था, पर मेरी मां ने पूरी हिम्मत दी। फिर भी, मुझे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायिका के रूप में खुद को स्थापित करने के लिए कठिन लड़ाई लड़नी पड़ी। 1945 तक, भारत के कई शहरों में ख्याल, भजन और ठुमरी के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। ऑल इंडिया रेडियो पर मेरी आवाज नियमित रूप से सुनाई देने लगी। 1945 के बाद से मैंने ख्याल, भजन और ठुमरी छोड़ कर, सिर्फ राग पर ही कार्यक्रम प्रस्तुत करने शुरू कर दिए। मगर किसी त्यौहार के समय भजन आदि गाना जारी रखा। खासकर मुंबई के गणेश उत्सव समारोह में मुझे विशेष रूप से आमंत्रित जाता था। कर्नाटक विश्वविद्यालय में संगीत की मानद प्रोफेसर नियुक्त किए जाने के बाद भी सार्वजनिक कार्यक्रमों के रूप में प्रदर्शन जारी रखा।'

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रख्यात गायिका थीं। उन्होंने स्वतंत्र भारत में खयाल गायिकी की पहचान बनाने में महती भूमिका निभाई। भारतीय शास्त्रीय संगीत की नब्ज पकड़कर और किराना घराना की विरासत को बरकरार रखते हुए परंपरा की आवाज का प्रतिनिधित्व करने वाली गंगूबाई हंगल ने लिंग और जातीय बाधाओं के साथ गरीबी से लगातार लड़ते हुए भी उच्च स्तर का संगीत दिया। उन्होंने संगीत के क्षेत्र में आधे से अधिक सदी तक अपना योगदान दिया।

उनके संगीत जीवन के शिखर तक पहुंचने के बारे में एक अविश्वसनीय संघर्ष की कहानी है। उन्होंने आर्थिक संकट, पड़ोसियों द्वारा जातीय आधार पर उड़ाई गई खिल्ली और भूख से लगातार लड़ाई करते हुए भी उच्च स्तर का संगीत दिया।

''एक बार कोलकाता में संगीत जलसा के नाम से एक कार्यक्रम था। मुझे भी बुलाया गया था। आयोजकों ने मुझे जोर देकर कहा था कि मैं पूरी रात की बैठक के लिए तैयार रहूं। आज यह सब बताते हुए अजीब सा लगता है। पर वह भी दिन थे। मुझे याद है कि कुर्सी पर बैठने के लिए एक रुपया और जमीन पर बैठने पर 50 पैसे का टिकट था। शाम सात बजे से कार्यक्रम शुरू हुआ और रात के तीन बजे तक मेरा नाम नहीं लिया गया। रात में 12 बजे के आस पास निसार हुसैन खान ने मुझे एक तरफ ले जाकर बताया कि आयोजक कह रहे हैं, एक औरत पूरी रात कैसे गा सकती है। दूसरे शब्दों में उनको मेरी सक्षमता पर संदेह था। प्रातः चार बजे मुझसे गाने के लिए कहा गया। मन में बुरा लगा क्योंकि यह वह समय होता है जब रात भर जागे लोग झपकियां लेने लगते हैं। मैने

गाया बहुत सराहना की गई। जब मेरा गायन खत्म हुआ और मैं मंच से उतर कर श्रोताओं की कुसिर्यों की ओर आ रही थी कि अचानक किसी पुरूष ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और एक आवाज आई "बहुत मधुर", मुड़ कर देखा मशहूर गायक–अभिनेता के.एल. सहगल थे। कार्यक्रम के अंत में त्रिपुरा के महाराज ने श्रेष्ठ गायिका कह कर मुझे स्वर्ण पदक से सम्मानित किया।'

''गुरुजी ने मुझे केवल चार ही राग सिखाए।वह अक्सर कहा करते थे कि किसी कंजूस आदमी की तरह स्वर को बचाकर चलना चाहिए। यह राग का रूप निखारने के लिए जरूरी है। पहले तो उनकी बारी उबाऊ और नीरस लग रही थी, लेकिन बाद में मैंने उन्हें इस कठोर प्रशिक्षण के लिए धन्यवाद दिया। एक गुरु के साथ रिश्ता सबसे अलग होता है। उसके लिए शिष्य के मन में महान सम्मान होना चाहिए''

''गुरूजी कहते थे कि अपने मन को शान्त रखने और सामने बैठे श्रोताओं के मन को शान्त करने में संगीत का बहुत बड़ा योगदान होता है। लेकिन सिर्फ मेरे मामले में, यह एकदम विपरीत था। मैं क्या नई बातें सीख सकती थी, जबकि मैं परेशान और दुखी रहती थी? मेरे मन में तो अपने परिवार को पालने की ही चिन्ता बनी रहती थी और मेरे हाथ में बस एक तानपुरा ही था। मैंने व्यक्तिगत रूप से एक नई कार या घर होने का, अमीर बनने के बारे में नहीं सोचा था। उनके लिए मेरे मन में कभी ऐसी महत्वाकांक्षा भी नहीं थी। सभी को पता था कि मुझे पैसों की जरूरत रहती थी। कई बार अनचाहे, अदृष्य अपमान का सामना करना पड़ा। जैसे एक बार पुणे की एक महिला ने मुझे अपने यहां आमंत्रित किया। उसकी माँ पूछा कि संगीत कार्यक्रम के लिए कितना शुल्क देना होगा। मैंने उसे 125/– रुपये बताया तो वह मूंह बना कर कहने लगी कि यह तो ज्यादा था। मुझे उसकी यह बात चुभ सी गई और मैं तुरंत एक जरूरी काम कह कर वहां से चली आई।''

विदूषी गंगूबाई हंगल को चार विश्वविद्यालयों द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया था, 50 पुरस्कार और 24 खिताब प्राप्त हुए।

''संगीत में मेरे प्राथमिक गुरु थे सवाई गंधर्व। पर मैं समझती हूं कि मां अम्बाबाई और जोहरा बाई आगरे वाली की प्रेरणा और प्रभाव भी कम नहीं था, जिन्होंने समझाया कि शस्त्रीय संगीत में राग गायन का सार है, स्वर की गहरी संवेदनशीलता और सौंदर्य लाने के लिए एक असाधारण समझ के साथ ही तीव्र भावना का होना भी जरूरी है।

गंगूबाई हंगल हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की दुनिया में सबसे प्रसिद्ध नामों में से एक है। कर्नाटक संगीत की एक विशेषज्ञ माँ से जन्मी जो गंगूबाई हंगल की आवाज़ अपने सशक्त और शक्तिशाली गुणों से पहचाने जाती हैं।

वर्ष 2004 में उनकी बेटी कृष्ण का कैंसर से निधन हो गया था। तब ही से उन्होंने गाना बंद कर दिया था। गंगूबाई हंगल खुद अस्थि मज्जा कैंसर की रोगी थे, जिसके लिए उन्होंने वर्ष 2003 में इलाज किया और सफलतापूर्वक इस रोग पर विजय प्राप्त की।

21 जुलाई, 2009 को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की यह बुलंद आवाज सदा के लिए शान्त हो गई।

याद इन्हें भी कर लें

गिरीश रघुनाथ कर्नाड

–अनिरुद्ध सिंह

गिरीश कर्नाडः भारतीय अभिनेता, फिल्म निर्देशक, कन्नड़ लेखक,नाटककार और एक रोड्स स्कॉलर थे, जिन्होंने मुख्य रूप से दक्षिण भारतीय सिनेमा और बॉलीवुड में काम किया था। 1960 के दशक में एक नाटककार के रूप में उनका उदय, कन्नड़ में आधुनिक भारतीय नाटक लेखन की उम्र के रूप में पहचान बना, जैसे बादल सरकार ने बंगाली में, मराठी में विजय तेंदुलकर और हिंदी में मोहन राकेश ने किया था। उन्हें भारत में सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

चार दशकों तक कर्नाड ने समकालीन मुद्दों से निपटने के लिए अक्सर इतिहास और पौराणिक कथाओं का उपयोग करते हुए नाटकों की रचना की। उन्होंने अपने नाटकों का अंग्रेजी में अनुवाद किया और प्रशंसा प्राप्त की। उनके नाटकों का कुछ भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है और इब्राहिम अल्काज़ी, बी. बी.करंत, एलिक पदमसी, अरविंद गौड़, सत्यदेव दुबे, विजया मेहता, अम्मल अल्लाना जैसे निर्देशकों द्वारा निर्देशित किए गए।

वह हिंदी और कन्नड़ सिनेमा में अभिनेता, निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में भारतीय सिनेमा में सक्रिय थे। भारत सरकार ने कला में उनके योगदान को मान्यता देते हुए, 1992 में उन्हें पदम भूषण से सम्मानित किया। भारतीय साहित्य में उनके गौरवशाली योगदान के लिए 1999 में, भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार,से सम्मानित किया गया। उन्होंने रंग मंच के साथ फिल्मों में भी काम जारी रखा।

इसके अतिरिक्त उन्हें चार फिल्मफेयर पुरस्कार मिले, जिनमें से तीन सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के लिए फिल्मफेयर अवार्ड – कन्नड़ और चौथे को फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ पटकथा पुरस्कार मिला। उनका प्रसिद्ध उपन्यास "ययाति" है।

गिरीश कर्नाड का जन्म 19 मई,1938को आज के महाराष्ट्र के मथेरान में हुआ था। उनकी माता कृष्णाबाई निमंकीकर नर्स की पढ़ाई करने के दौरान डॉक्टर रघुनाथ कर्नाड से मिली और दोनों ने आर्य समाज रीति से विवाह किया था। गिरीश की प्रारंभिक शिक्षा मराठी में हुई थी। जब वह चौदह वर्ष के ही थे कि उनका परिवार कर्नाटक के धारवाड़ आकर बस गया। यहीं वह अपनी दो बहनों और एक भतीजी के साथ बड़े हुए। उनकी कालोनी में बालगंधर्वनाम से एक शौकिया थिएटर था। जिसमें युवाओं को नाटकों के साथ ही यक्षगान का प्रशिक्षण दिया जाता था। गिरीश भी थिएटर में शामिल होकर नाटकों तथा यक्षगान में भाग लेने लगे। यहीं से कला के प्रति उनकी रूचि रखने लगे।

* ब्लॉगर

उन्होंने 1958 में कर्नाटक विश्वविद्यालय से गणित और सांख्यिकी में अपनी कला स्नातक की उपाधिप्राप्त की। स्नातक होने के बाद, वह इंग्लैंड चले गए और ऑक्सफोर्ड में दर्शनशास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र का अध्ययन किया।

सात साल (1963–70) तक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, मद्रास (चेन्नई) में काम करने के बाद, उन्होंने पूर्णकालिक लेखन के लिए इस्तीफा दे दिया। साथ ही वह स्थानीय शौकिया रंगमंच समूह, 'द मद्रास प्लेयर्स' से जुड़ गए।

1987–88 के दौरान, वह शिकागो विश्वविद्यालय में नौकरी करने गए वहीं नाटककार प्रोफेसर फुलब्राइट के सम्पर्क में आए। शिकागो के अपने कार्यकाल के दौरान नागामंडला में कन्नड़ मूल का कर्नाड ने अंग्रेजी अनुवाद किया और मिनियापोलिस के गुथरी थिएटर में इसका प्रीमियर मंचन किया गया था।

उन्होंने फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (1974–1975) के निदेशक तथा संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष (1988–93) के रूप में कार्य किया। भारतीय उच्चायोग,लंदन (2000–2003) में नेहरू केंद्र के निदेशक और संस्कृति सचिव भी रहे।

उनको एक नाटककार के रूप में जाना जाता है। कन्नड़ में लिखे गए उनके नाटकों का अंग्रेजी और कुछ भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। कन्नड़ उनकी पसंदीदा भाषा थी। जब कर्नाड ने नाटक लिखना शुरू किया तब पश्चिमी साहित्य की तरह कन्नड़ साहित्य पुनर्जागरण से प्रभावित हो रहा था। लेखक ऐसे विषयों का चयन कर रहे थे जो देशी मिट्टी की अभिव्यक्ति करे और पूरी तरह से अलग दिखे।

ययाति 1961 में प्रकाशित हुआ था, जब वह 23 साल के ही थे। यह पांडवों के पूर्वज राजा ययाति की कहानी पर आधारित है। एक राजा को शुक्राचार्य ने समय से पूर्व ही बुढ़ापे का शाप दे दिया था। बदले में ययाति अपने बेटों से उसके लिए अपनी जवानी का त्याग करने को कहता है और उनमें से एक बेटा सहमत हो जाता है। यह महाभारत में पात्रों के माध्यम से जीवन की विडंबनाओं का उपहास करता है। यह नाटक बड़ा ही सफल रहा। तुरंत अनुवाद किया गया और कई अन्य भारतीय भाषाओं में मंचन किया गया।

कर्नाड ने मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक संघर्षों में बंद पात्रों के माध्यम से आधुनिक विषयों के समकालीन विषयों और मानवता पर गहराते संकटसे निपटने के लिए ऐतिहासिक और पौराणिक स्रोतों को एक नया दृष्टिकोण दिया। उनका अगला नाटक तुगलक(1964) था,जो दिल्ली के14 वीं शताब्दी के सुल्तान, मुहम्मद बिन तुगलक और नए महत्वाकांक्षी आदर्शवाद के साथ शुरू होकर मोहभंग पर समाप्त होता है। इसने देश में एक होनहार नाटककार के रूप में कर्नाड की स्थापना की। इब्राहीम अल्काज़ी के निर्देशन में नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा रिपर्टरी द्वारा इसका मंचन किया गया। 1982 में नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा ऑफ़ द फेस्टिवल ऑफ़ इंडिया द्वारा लंदन में इसका मंचन किया गया था।

हयवदन (1971) मूल रूप से 11 वीं शताब्दी के संस्कृत पाठकथा सरित्सागर में पाया गया है। इसमें उन्होंने यक्षगान के लोक रंगमंच का उपयोग किया। जिसे 1989 के सबसे रचनात्मक कार्य के लिए कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

कर्नाड ने अपने अभिनय के साथ–साथ कन्नड़ फिल्म, संस्कार (1970) में यूआर अनंतमूर्ति के उपन्यास पर आधारित और पट्टाभीराम रेड्डी द्वारा निर्देशित फिल्म में अपना पहला अभिनय किया। उस फिल्म को कन्नड़ सिनेमा के लिए राष्ट्रपति का पहला स्वर्ण कमल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

छोटे पर्दे पर भी, उन्होंने आर.के. नारायण की पुस्तक पर आधारित टीवी सीरियल मालगुडी डेज़ (1986–1987) में स्वामी के पिता की भूमिका निभाई। उन्होंने 1990 के दशक की शुरुआत में दूरदर्शन पर विज्ञान पत्रिका टर्निंग प्वाइंट कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। उन्होंने अपने निर्देशन करियर की शुरुआत वंशवृक्ष (1971) से की। इसने उन्हें बी.वी. कारंत के साथ सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान किया गया। बाद में, कर्नाड ने कन्नड़ और हिंदी में कई फिल्में निर्देशित कीं। उनकी कई फिल्मों और वृत्तचित्रों को अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

उनकी हिंदी फिल्मों में निशांत (1975), मंथन (1976), स्वामी (1977) और पुकार (2000) शामिल हैं। उन्होंने इकबाल (2005) के साथ शुरू हुई नागेश कुकनूर की कई फिल्मों में अभिनय किया है, जिसमें कर्नाड के क्रूर क्रिकेट कोच की भूमिका ने उन्हें आलोचकों की प्रशंसा दिलवाई।

साहित्य के लिए

संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार – 1972

पद्मश्री–1974, पद्म भूषण–1992, कन्नड़ साहित्य परिषद पुरस्कार–1992, साहित्य अकादमी पुरस्कार–1994, ज्ञानपीठ पुरस्कार–1998, कालिदास सम्मान–1998

सिनेमा के लिए

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

व्यापक रूप से भारत के बाद के प्रमुख नाटकों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। रंगमंच में उनके योगदान के लिए उन्हें 1974 में भारत ने पद्मश्री से सम्मानित किया था।

पूर्ण स्क्रीन

कन्नड़ में कर्नाड की अन्य प्रसिद्ध फिल्मों मेंतबबलियु नेनेडे मैगाने (1977) और ओदानन्दु कालाडल्ली(1978) शामिल हैं। उन्होंने इसे हिंदी में उत्सव (1984) के नाम से बनाया। यह भी में काम हिंदी, निर्देशन समीक्षकों द्वारा प्रशंसित शुद्रक के चार सदी का एक रूपांतर संस्कृत नाटक मृच्छकटिम् कन्नड़ लोक कथाओं से ली गई एक समकालीन तस्वीर है।

लेकिन सच्चाई यही है कि कर्नाड सही मायने में ऐसे बुद्धिजीवी थे, जिन्होंने किसी पर रियायत नहीं बरती। वह अपने विचारों को व्यक्त करने में बिल्कुल नहीं हिचकिचाते थे और वो भी अपने एक खास अंदाज़ में टिप्पणी कर देते थे।

बताया जाता है कि 1975 में गिरीश कर्नाड भारतीय फ़िल्म टेलीविज़न संस्थान (एफ़टीआईआई) के निदेशक थे। तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री ने उन्हें उस समय की सरकार के प्रमुख कुछ नेताओं पर फ़िल्में बनाने के लिए कहा गया था, मगर उन्होंने यह कह कर इनकार दिया कि किसी नेता पर फ़िल्म बनाने का मतलब उसकी अनावश्यक प्रशंसा होती है। विरोध करते हुए उन्होंने एफ़टीआईआई के निदेशक पद से इस्तीफ़ा दे दिया था।

इसके 17 साल बाद उन्होंने सांप्रदायिक सद्भाव की आवश्यकता पर अयोध्या में एक सम्मेलन आयोजित किया था। ऐसा उन्होंने तब किया था, जब वो व्यक्तिगत तौर पर श्री वाजपेयी और श्री लाल कृष्ण आडवाणी को अपना अच्छा मित्र मानते थे।

जाने–माने कन्नड़ लेखक और कर्नाटक नाटक अकादमी के पूर्व चेयरमैन के मारुलासिद्धप्पा ने बीबीसी हिंदी को बताया, "उस समय भी वह कभी किसी राजनीतिक दल के पक्ष में नहीं रहे। अलबत्ता वो सांप्रदायिक सौहार्द के तगड़े पैरोकार थे।" साहित्य

अकादमी के लिए कर्नाड के जीवन पर डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म के निर्माता के.एम. चैतन्य कहते हैं, हम सबने मिलकर वहां जाने का फ़ैसला किया। जब हम लोग पहुंचे तो पुलिस ने हमें बताया कि किसी को आगे नहीं जाने दिया जाएगा। तब कर्नाड ने पुलिस से कहा कि वो हमें गिरफ़्तार कर सकते हैं। पुलिस ने हमें गिरफ़्तार कर थाने ले जाकर छोड़ दिया। मैंने बाद में उनसे पूछा कि वह गिरफ्तारी देने के लिए क्यों राज़ी हुए। उन्होंने मुझे बताया कि हमारे प्रदर्शन का मूल आधार केवल विरोध जताना था, न कि उपद्रव करना। हम क़ानून का सम्मान करते हैं। जो लोग यहां हाय–हल्ला करते हुए उपद्रव मचा रहे हैं, वो क़ानून का सम्मान नहीं कर रहे। इसी तरह, हमें उन्हें ये बताने की ज़रूरत है कि देश के क़ानून का सम्मान किया जाना चाहिए।"

रंगमंच में क्रांति

कन्नड़ लेखक मल्लिका घांटी कहते हैं, "उन्होंने अपने नाटकों के लिए इतिहास और पौराणिक कथाओं का विषय के रूप में इस्तेमाल किया और रंगमंच में एक क्रांति पैदा की। लेकिन आज की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियां भिन्न हैं इसलिए आवाज़ उठाने वालों की संख्या में कमी आई। चैतन्य कहते हैं, "एक सार्वजनिक बुद्धिजीवी के रूप में उन्होंने किसी भी राजनीतिक दल का पक्ष नहीं लिया। राजनीतिक रूप से किसी के पक्ष में झुकने की कोशिश नहीं की।"

कई मायनों में उन्हें न सिर्फ़ कर्नाटक बल्कि देश में 'अंतरात्मा की आवाज़ सुनने वाले के रूप में जाना जाता रहा है। गिरीश कर्नाड की पहचान नाटककार, लेखक और निर्देशक के रूप में रही है।

अगले अंक में पढ़े.........

मालामाल : चेट्टीनाड

के. दिनाकरण

पर्यटन नीति और रणनीति

प्रो. निमित चौधरी

भारत में लिटिल इंग्लैण्ड: कृष्णागिरी

मोहन सिंह

साथ ही ओर भी सामग्री..........

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 4 जून, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्रालय का कार्यभार ग्रहण किया

श्री प्रहलाद सिंह पटेल पांच बार सांसद निर्वाचित हुए हैं और मध्यप्रदेश के दमोह संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्री पटेल 16वीं लोकसभा में अनेक संसदीय समितियों के सदस्य रहे हैं। श्री पटेल विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में रूचि रखते हैं। इन गतिविधियों में भारतीय संस्कृति का संरक्षण, ग्रामीण क्षेत्रों का विकास, किसानों का कल्याण और खेल–कूद का प्रोत्साहन शामिल हैं।

मंत्रालय का कार्यभार ग्रहण करने के बाद श्री पटेल ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि पर्यटन मंत्रालय प्रधानमंत्री जी के नए भारत के विजन को पूरा करने के लिए काम करेगा और अपनी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत बनाने के साथ–साथ पर्यटन क्षेत्र को मजबूत करेगा। उन्होंने आगे कहा कि भारत एक विशाल देश है और इसकी सांस्कृतिक शक्ति भी कम नहीं है। देश की विशाल सांस्कृतिक विविधता को देखते हुए ही विदेशी पर्यटक भारत की ओर आकर्षित होते है। उन्होंने कहा कि पिछले पांच वर्षों में किये गए कार्य तेज गति और समय सीमा के साथ आगे बढ़ाए जाएंगे। पर्यटन रोजगार सृजन करने वाला क्षेत्र है, इसलिये देश की संस्कृति और पर्यटन की उचित रूप से ब्रॉडिंग आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इस कार्य में सभी हितधारकों से सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

त्रिपुरा के मुख्य मंत्री श्री विप्लव देव ने 06 जून,2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की ।

दादरा, नगर हवेली तथा दमन एवं दीव संघ शासित प्रदेश के प्रशासक श्री प्रफुल्ल पटेल ने 7 जून, 2019 को नई दिल्ली में माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की।

अरूणाचल प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री नकप नालो ने 10 जून, 2019 को नई दिल्ली में माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की।

उत्तराखंड के पर्यटन मंत्री श्री सतपाल महाराज ने 11 जून, 2019 को नई दिल्ली में माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की ।

असम के पर्यटन मंत्री श्री चन्दन ब्रहमा ने 12जून, 2019 को नई दिल्ली में माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की ।

नागालैंड के पर्यटन, कला एवं संस्कृति मंत्री श्री खेहोव येप्थोमी ने 14जून, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की ।

मेघालय के मुख्य मंत्री श्री कॉनराड संगमा ने 17 जून, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की। इस अवसर पर सचिव(पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी भी उपस्थित थे।

सिक्किम के पर्यटन एवं नागरिक उड्डन तथा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री बेदू सिंह पंथ ने 18 जून, 2019 को नई दिल्ली में माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की ।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 21 जून, 2019 को असम में गुवाहाटी स्थित कामाख्या मंदिर में दीप प्रज्जवलित कर अम्बूबाची मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर असम में मुख्य मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री श्री रामेश्वर तेली तथा अन्य गणमान्य अतिथि भी उपस्थित थे।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल गुवाहाटी के कामाख्या मंदिर में अम्बूबाची मेले के दौरान विद्यवानों को संबोधित करते हुए।

सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी ने 10 मई, 2019 को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्कींग एंड माउंटेनियरिंग, गुलमर्ग (जम्मू व कश्मीर) के ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उनके साथ है आर्थिक सलाहकार (पर्यटन) श्री ज्ञान भूषण तथा संस्थान के कंसल्टेंट कर्नल ढिल्लों।

सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी ने ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के अवसर पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए, उनके साथ हैं अतुल्य भारत के प्रधान सम्पादक एवं आर्थिक सलाहकार श्री ज्ञान भूषण

राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं कैटरिंग टेक्नालॉजी परिषद, नोएडा द्वारा दिनांक 20.5.2019 तथा 21.05.2019 को परिषद से सभी संबंद्ध होटल प्रबंध संस्थानों और पाक–कला संस्थानों के प्रधानाचार्यों का दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। माननीय सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागी

स्वच्छता में योगदान दे

✔ क्या करें ✘ क्या न करें

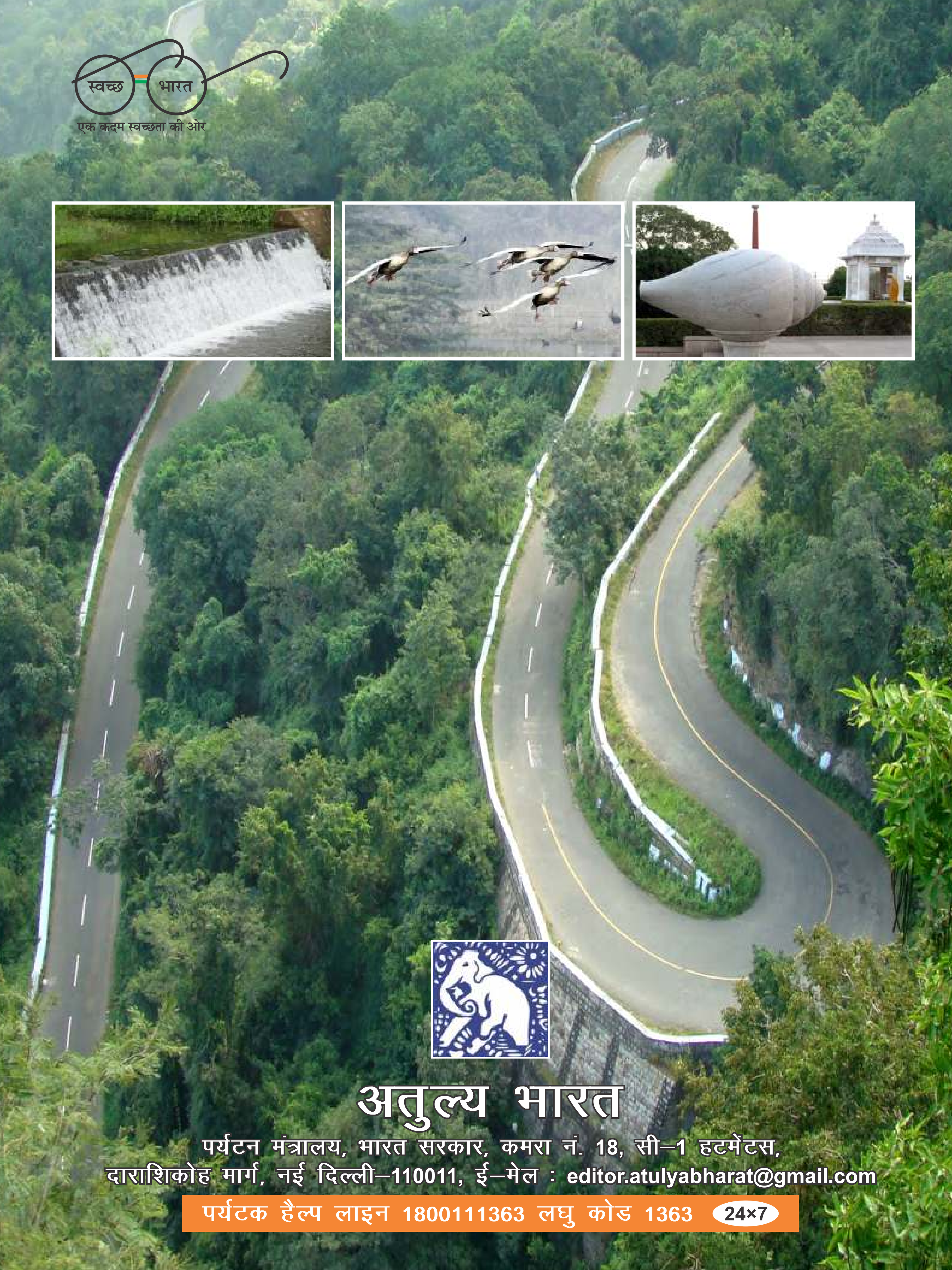

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंटस,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24×7